तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 9, अंक- 2, जनवरी 2021, मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

2021

विपरीत हालात में संकटमोचक बना मुख्यमंत्री दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम

नव वर्ष संकल्प

ईर्ष्या, घृणा द्वेष से सब ,
मानसिक तनाव में रहते हैं।
अनेक रोग उपजे मन-तन में,
फिर स्वस्थ नहीं रह पाते हैं ।

नहीं किसी से बैर भाव हो,
सदा सभी से प्रेम भाव हो ।
जीवन का उद्देश्य भी ये,
चहुँ ओर सुख चैन बना हो।

युद्ध, कलह को दूर करें तो,
समाज में न हो कोई भी हानि।
सहयोग और सामंजस्य ही है,
सुखी,समृद्ध समाज की निशानी।

गर जीवन में है आगे बढ़ना,
आपस में हम करें सहयोग।
जीवन से दुख मिट जाएँगे,
सभी करेंगे सुख का भोग।

आओ सब मिल प्रण करें,
सहयोग भाव को अपनाएँ।
दूर करें सब बैर-भाव को,
सबका जीवन सुखमय बनाएँ।

कविता
प्राथमिक अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय- सराय अलावर्दी गुरुग्राम
(हरियाणा)

शिक्षा सारथी

तमसो मा ज्योतिर्गमय

जनवरी 2021

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
नितिन कुमार यादव
महानिदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

जे. गणेशन
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

डॉ. रजनीश गर्ग
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

सतिन्द्र सिवाच
संयुक्त निदेशक (प्रशासन),
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by delhi press patra prakahsna Pvt. Ltd. at its printing press PSPC Press 50, DLF Industrial Estate,

Faridabad- 121003,(Haryana)

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"मनुष्य परिस्थितियों का दास नहीं, वह उनका निर्माता, नियंत्रणकर्ता और स्वामी है।"
-पं.श्रीराम शर्मा आचार्य

- कोरोना काल में संकटमोचक बना एजुसैट 5
- सरकारी शिक्षा-तंत्र पर बढ़ता जन-विश्वास 8
- कोरोना भी नहीं रोक पाया कला उत्सव की उड़ान 10
- 55 हजार विद्यार्थियों ने किया सामूहिक श्लोकोच्चारण 11
- ऑनलाइन शिक्षणः वर्तमान संदर्भ और भविष्य का पथ 12
- कोरोना काल में शिक्षा की चुनौतियाँ और नये विकल्प 14
- ऑनलाइन शिक्षा की सार्थकता 15
- 'निष्ठा' में समाहित गुरुजनों की प्रतिष्ठा 16
- भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले 17
- 'चॉक व चुनौतियों को मिलाकर विद्यार्थियों का जीवन बदलता शिक्षक' 18
- प्रकृति के कुशल चितेरे हैं कला शिक्षक-भीम सिंह 20
- जीती-जागती लगती हैं छात्र अभिषेक की बनाई मूर्तियाँ 21
- जन सहयोग से विद्यालय का कायाकल्प 22
- भूत पकड़ा गया 25
- खेल-खेल में विज्ञान 28
- कुत्ते करते हैं कोरोना का सटीक टैस्ट 30
- आकार लेता सपना 31
- Green Hydrogen- Fuel of the future 32
- Quality Teaching 34
- Learning in the New Normal 36
- Eco-Friendly Home New Idea for sustainable living 38
- Compendium of Academic Courses After +2 41
- An Eye for an Eye 44
- Amazing Facts 48
- General Quiz 49
- आपके पत्र 50

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

वर्ष नव, संकल्प नव

काल एक बहुत बड़ा शिक्षक है। वह हमें निरंतर नई-नई सीख देता रहता है। बीता वर्ष 'कोरोना वर्ष' के रूप में याद किया जाएगा। साथ ही यह वर्ष इस बात के लिए भी याद रहना चाहिए कि इसने मानव जाति को जितनी 'शिक्षाएँ' दी हैं, उतनी शायद ही किस अन्य वर्ष ने दी हों। इसने भागमभाग से मुक्ति दिलाकर मनुष्य को अपने भीतर झांकने का अवसर दिया। बाहर 'शारीरिक दूरी' दिखी तो परिवार के लोगों के साथ ज्यादा वक्त बिताने का अवसर मिला। कम संसाधनों में जीना, परस्पर सहयोग करना, प्रकृति के साथ मित्रवत व्यवहार करना, सेहत के प्रति सतर्क रहना, स्वच्छता को महत्त्व देना, समारोह पर अनावश्यक खर्चों से बचना, ईश्वरीय सत्ता पर विश्वास मजबूत होना, डिजिटल शैली से परिचय, आयुर्वेद और परंपराओं की ओर लौटना, 'घर से काम' की धारणा समझ आना आदि कुछ ऐसी बातें थीं जो बीता वर्ष हमें सिखा गया।

अध्यापकों के लिए तो यह वर्ष और भी चुनौतीपूर्ण रहा। विद्यालयों को ताले लग गए। विद्यार्थी अपने घरों में बंद हो गए और अध्यापक अपने। ऐसे वक्त में शिक्षण-कार्य करना किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं था। अल्पकाल में ही नई-नई तकनीकों से अपने को परिचित करना, फिर उनका उपयोग करते हुए विद्यार्थियों के साथ जुड़ना कोई सरल कार्य नहीं था। लेकिन हमारे अध्यापकों ने इस चुनौती को बखूबी स्वीकार किया। साप्ताहिक क्विज़, अवसर एप, सक्षम समीक्षा एप, निष्ठा ऑनलाइन प्रशिक्षण, 'घर से पढ़ाओ' अभियान में वे निरंतर व्यस्त रहे। लॉकडाउन के दौरान तमाम तरह के खतरों को उठाकर घर-घर जाकर विद्यार्थियों को राशन बाँटना, विभिन्न प्रकार के सर्वेक्षण आदि के कार्यों को पूरी निष्ठा से करके हमारे शिक्षकगण ने दिखा दिया कि वे भी 'कोरोना योद्धा' से कम नहीं हैं।

नव वर्ष का अवसर है, इस अवसर पर यह संकल्प लेने की आवश्यकता भी है कि कोरोना-काल द्वारा दी गई 'शिक्षाओं' को याद रखना है। आशा करते हैं कि नव वर्ष आप सभी के लिए मंगलमय होगा। हार्दिक शुभकामनाएँ।

-संपादक

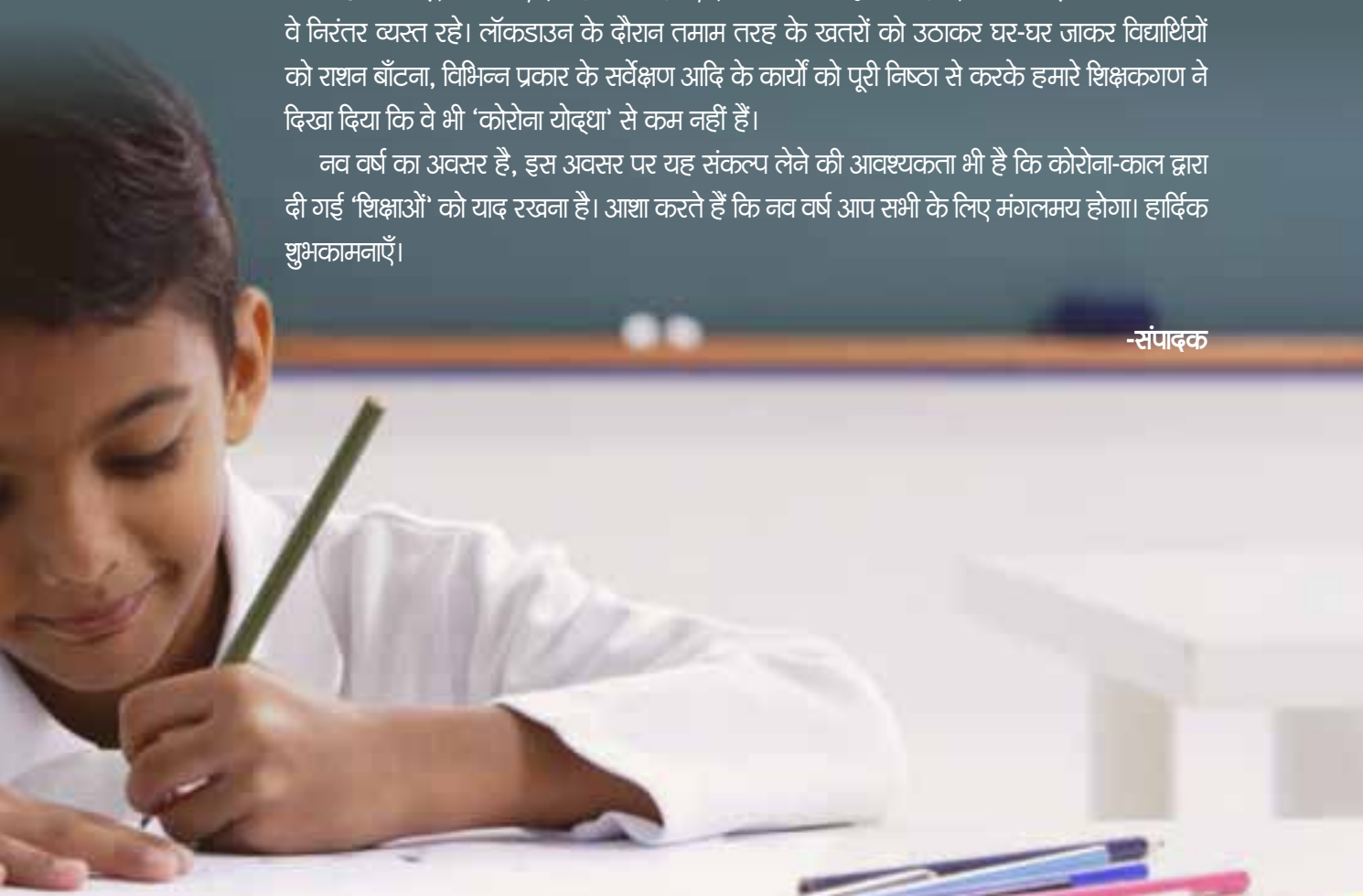

कोरोना काल में संकटमोचक बना एजुसैट

मनोज कौशिक

एजुसैट परियोजना की शुरुआत मानव संसाधन विकास मंत्रालय और इसरो, बंगलुरु के सहयोग से, उपग्रह के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए शिक्षा विभाग, हरियाणा द्वारा वर्ष 2005 में की गई थी। हरियाणा एजुसैट प्रोजेक्ट को लागू करने के लिए शिक्षा विभाग हरियाणा के तत्वावधान में उत्कर्ष सोसायटी का गठन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य आर्थिक, सामाजिक और भौगोलिक सीमाओं से परे शिक्षा की उपलब्धता एवं गुणवत्ता में उन्नयन करना है। दूरदराज के छात्रों तक पहुँचने, विशेष विषयों में विशेषज्ञों की कमी के प्रभाव को नकारने के लिए यह प्रणाली उपयोगी सिद्ध हुई है। इसका उद्देश्य छात्रों को न केवल पाठ्यक्रम आधारित शिक्षण प्रदान करना है, बल्कि प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षण और गुणवत्ता संसाधन व्यक्तियों तक इसकी पहुँच प्रदान करना है। एससीईआरटी द्वारा तैयार समय-सारणी के अनुसार पंचकूला स्थित हब से निरंतर शिक्षा सामग्री का प्रसारण / वेबकास्ट किया जा रहा है। संचालन में प्राथमिक, माध्यमिक, तकनीकी और उच्च शिक्षा के लिए पाँच चैनल, चार डीटीएच (डायरेक्ट टू होम) और एक एसआईटी (सैटेलाइट इंटरएक्टिव टर्मिनल) हैं। चैनल 1 से 5 क्रमशः (ए) गवर्नमेंट साइंस सीनियर सेकेंडरी स्कूल और अर्बन स्कूल, (बी) गवर्नमेंट कॉलेज, (सी) ऑल गवर्नमेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल फॉर आर्ट्स, (डी) ऑल गवर्नमेंट प्राइमरी स्कूल, और (ई) ऑल गवर्नमेंट तकनीकी संस्थान (पॉलिटेक्निक और इंजीनियरिंग संस्थान) हैं।

प्रारंभ में 10935 एजुसैट साइटें (एसआईटी/आरओटी) स्थापित की गई थीं, हालांकि, पुनर्गठन के बाद, वर्तमान में नेटवर्क में 9986 साइटें उपलब्ध हैं। (विभिन्न सरकारी कार्यालयों 62, उच्च शिक्षा 74, प्रारंभिक शिक्षा 8249, माध्यमिक शिक्षा 1343, तकनीकी शिक्षा 18)

एजुसैट की चर्चा के साथ प्रायः यह आलोचना की जाती रही है कि यह समय के साथ निष्प्रभावी हो चली है। परियोजना जिन महत्त्वाकांक्षी उद्देश्यों के लेकर आरम्भ की गयी थी, कुछ वर्षों तक सफलतापूर्वक चलने के बाद इसका असर धीरे धीरे कम होने लगा। इस दशा के कारण कई थे- जैसे तकनीकी रखरखाव की कमी, बिजली/जनरेटर आदि की व्यवस्था न होना, नयी-विषयवस्तु निर्माण प्रक्रिया जारी न रह पाना आदि। परिणामस्वरूप हितधारकों की रुचि इसमें कम होती गयी। यद्यपि एससीईआरटी एवं उत्कर्ष के संयुक्त प्रयासों से प्रसारण पिछले 15 वर्षों से निर्बाध रूप से चलता रहा।

आज का एजुसैट-

चूँकि कोविड-19 के कारण हमारे विद्यालय लम्बे

समय से बंद रहे हैं, जिसका शिक्षण-अधिगम पर काफी प्रभाव पड़ा है। इस दौरान वास्तविक-कक्षा के वातावरण के अभाव के कारण छात्रों के मध्य होने वाली पीयर-टू-पीयर लर्निंग संभव नहीं हो सकी, साथ ही शंका-निवारण के सीमित अवसर एक चुनौती के रूप में उभरे हैं। इसके अतिरिक्त ऑनलाइन शिक्षण का संचालन करने के लिए सीमित संसाधनों से भी छात्रों के साथ व्यक्तिगत रूप से जुड़ने में कठिनाई रही। इससे यह भी हुआ कि छात्र की शंकाओं और चिंताओं का समाधान करने में शिक्षकों को कठिनाई का सामना करना पड़ा है।

विभाग के प्रयासों से ऑनलाइन शिक्षा के कई उपाय छात्रों और अध्यापकों की सुविधा के लिए उपलब्ध कराए गए। लॉकडाउन के आरम्भ के दिनों से ही शिक्षा विभाग की ओर से विभिन्न पहलों को लागू करना प्रारम्भ कर दिया गया था। इनमें से कुछ मुख्य हैं- Learning@ home, घर से पढ़ाओ, दीक्षा, एजुसैट, केबल-टीवी और व्हाट्सएप जिनके बारे में आप सभी परिचित होंगे और उनका लाभ भी उठा रहे होंगे। ये सारे प्रयास यह सुनिश्चित करने के लिए हैं कि विद्यालय बंद रहते हुए भी विद्यार्थियों का सीखना जारी रहे।

लॉकडाउन के दौरान, इन सभी प्रयासों में एजुसैट एक नए स्वरूप में उभरा। विद्यालयों में उपलब्ध एजुसैट टर्मिनलों का प्रयोग न होने के कारण विकल्प के रूप में सर्वप्रथम केबल टीवी के माध्यम से प्रसारण सामग्री को छात्रों तक पहुँचाया गया। मुख्यमंत्री महोदय के द्वारा शुभारंभ की गयी इस योजना में स्थानीय केबल ऑपरेटर के माध्यम से प्रसारण घर-घर तक पहुँचा, हरियाणा भर के छात्रों के घरों में सीधे एजुसैट द्वारा पठन सामग्री को समर्पित टीवी चैनलों के माध्यम से स्ट्रीम किया गया । एजुसैट की प्रसारण सामग्री की पहुँच को बढ़ने की दिशा में एक और प्रयास जून, 2020 में किया गया जब यह प्रसारण से जिओ टीवी (मोबाइल एप) पर उपलब्ध करा दिया गया। आज प्रतिदिन की प्रसारण सामग्री के वीडियोस यहाँ देखे जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त, एजुसैट की समस्त पाठ्य-सामग्री, विडिओ ऑन डिमांड (उत्कर्ष) एवं ई-लर्निंग@ होम (एससीईआरटी) की वेबसाइटों पर भी

उपलब्ध है।

एजुसैट अब दीक्षा पर उपलब्ध-

हरियाणा ने दीक्षा के माध्यम से ई-लर्निंग में अगला मील का पत्थर हासिल किया है। दीक्षा पर दैनिक टेलीकास्ट सामग्री अपलोड करके और दैनिक संदेशों के माध्यम से दीक्षा लिंक उपलब्ध कराकर, हरियाणा ने दीक्षा पर एजुसेट का सफलतापूर्वक संचालन किया है। यह पहल एमएचआरडी (अब शिक्षा मंत्रालय) द्वारा निर्देशित थी, जिसे एससीईआरटी हरियाणा और उत्कर्ष सोसायटी, हरियाणा द्वारा संयुक्त रूप से क्रियान्वित किया गया। हरियाणा शिक्षा विभाग के माननीय अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. महावीर सिंह, आईएएस द्वारा विश्व शिक्षक दिवस के अवसर पर 5 अक्टूबर, 2020 को इसकी औपचारिक शुरुआत की गई।

हरियाणा पीएम ई-विद्या कार्यक्रम के साथ अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है और कक्षा व विषयों की सुसंगत पहुँच सुनिश्चित करने के लिए प्रयास कर रहा है। जैसे ही लॉकडाउन शुरू हुआ तो छात्रों के सीखने के नुकसान को कम करने के लिए राज्य द्वारा 'घर से सीखना कार्यक्रम' शुरू किया गया। लेकिन कार्यक्रम के लाभों को और बढ़ाने के लिए, अतुल्यकालिक साधनों को दीक्षा पर एजुसैट के वीडियो अपलोड करके और समूहों में संरचित व्हाट्सएप संदेशों के माध्यम से प्रचारित किया जा रहा है। विभिन्न कक्षाओं और विषयों के उच्च गुणवत्ता वाले वीडियो से युक्त दैनिक संदेश शिक्षकों के साथ साझा किए जाते हैं। शिक्षक इन संदेशों को आगे अपने छात्रों के साथ साझा करते हैं। साथ ही डिजिटल सामग्री के आधार पर शिक्षकों द्वारा साप्ताहिक क्विज़ भी भेजे जाते हैं। छात्रों और शिक्षकों से इसे भी बहुत अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है।

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा के निर्देशन में एससीईआरटी हरियाणा, दीक्षा के कार्यान्वयन के लिए नोडल एजेंसी है। माननीय मुख्यमंत्री जी के दूरदर्शी नेतृत्व के साथ, हरियाणा राज्य डिजिटल शिक्षक प्रशिक्षण के कार्यान्वयन के लिए देश के पहले तीन राज्यों में शामिल है। शिक्षा मंत्रालय द्वारा 28 सितंबर 2020 को शिक्षा सचिवों की बैठक में इसका विशेष उल्लेख किया गया। इसके अलावा, हरियाणा विभिन्न मोड जैसे, टीवी, एजुसैट टेलीकास्ट, व्हाट्सएप, एसएमएस आदि के माध्यम से दीक्षा सामग्री का उपयोग करने के मामले में शीर्ष 10 राज्यों में शामिल है।

एजुसैट पर विषय -

वस्तु निर्माण की वर्तमान प्रक्रिया-

- एजुसैट पर शिक्षण के लिए विद्यालय शिक्षा विभाग के संसाधन व्यक्तियों (शिक्षकों) को स्वैच्छिक आधार पर, शिक्षा विभाग, हरियाणा से लेना
- एडुसेट प्रसारण हेतु वीडियो बनाने के लिए अध्यापकों को प्रेरित और तैयार करना
- सैंपल वीडियोस को एससीईआरटी भेजना
- चुने हुए अध्यापकों का वीडियो बनाने पर दिशानिर्देश हेतु चर्चा / प्रशिक्षण
- टेलीकास्ट से एक सप्ताह पहले वीडियोस को एससीईआरटी भेजना
- वीडियो का मूल्यांकन विषय विशेषज्ञों द्वारा किया जाना और आवश्यक संशोधनों के बाद फाइनल वीडियो को टेलीकास्ट हेतु उत्कर्ष भेजना

सामान्य परिस्थितियों में इस कार्य हेतु संसाधन व्यक्तियों की एससीईआरटी में प्रशिक्षण/ कार्यशाला के उपरान्त पेशेवर टीम द्वारा रिकॉर्डिंग/एडिटिंग की जाती रही है। परन्तु कोरोना काल में शिक्षकों द्वारा घर बैठे अपने मोबाइल द्वारा विषय वीडियोस तैयार किये गए। शैक्षिक तकनीक विभाग की देखरेख में, पूर्णतया ऑनलाइन तरीके से, चलने वाली इस प्रक्रिया में प्रति सप्ताह 150-200 वीडियो प्रसारण हेतु तैयार किये गए। अत्यंत सीमित संसाधनों और बहुत कम तकनीकी जानकारी के होते हुए भी शिक्षकों ने एससीईआरटी के साथ मिलकर एक उत्साही टीम के रूप में जिस जोश के साथ कार्य किया वह प्रशंसनीय है। संकट की घड़ी में, अपने सीमित तकनीकी ज्ञान और विभाग के साथ तत्परता से सहयोग करते हुए एक-एक छात्र तक शिक्षा के सन्देश को ऑनलाइन पहुँचाने का भरसक प्रयत्न करने वाले, सभी शिक्षक/प्रशिक्षकों को 'कोरोना योद्धा' कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

विषय विशेषज्ञ
एससीईआरटी, गुरुग्राम, हरियाणा

ऑनलाइन शिक्षण प्रक्रिया में हरियाणा देश भर में तीसरे स्थान पर

ऑनलाइन शिक्षण में विविधता प्रदान करने में हरियाणा देश भर में तीसरे स्थान पर रहा है। इस कामयाबी का सेहरा विद्यालय शिक्षा विभाग के सिर बँधता है, क्योंकि उसने मुख्यमंत्री दूरदवर्ती शिक्षा कार्यक्रम को बड़े ही सुभीते से चलाया। इस कार्य में शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद गुरुग्राम ने विशेष भूमिका निभाई, क्योंकि प्रदेश में ऑनलाइन लर्निंग कंटेंट विकसित करने का कार्य उनके दवारा बहुत अच्छे ढंग से चला है।

पूरे देश के संदर्भ में देखा जाए तो तामिलनाडू और मध्यप्रदेश के बाद हरियाणा में सबसे अधिक संख्या में ई-लर्निंग कंटेंट तैयार हुआ है। नेशनल ई-लर्निंग रिपोर्ट के मुताबिक एससीईआरटी की विभिन्न एप और साइटों के जरिए विद्यार्थियों और शिक्षकों तक बहुत सा कंटेट पहुँचाया गया जो ई-लर्निंग की सफलता में सहायक सिद्ध हुआ। एससीईआरटी के विषय-विशेषज्ञ मनोज कौशिक ने बताया कि दीक्षा एप के माध्यम से प्रदेश भर के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को तो जोड़ा ही गया, साथ ही उन्हें लर्निंग मैटीरियल भी दिया गया। यह कार्य कई चरणों मे लगातार किया गया। इसमें सभी जिलों के जिला शिक्षा एंव प्रशिक्षण संस्थानों का भी खासा सहयोग रहा। कुछ समय पहले सचिव महोदय के साथ हुई वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में इसकी सराहना हुई।

एससीईआरटी ने जिस तरह से दीक्षा एप, एजुसैट और ई-लर्निंग मंचों पर विविध तरीकों से कंटेंट पहुँचाया उससे विद्यार्थियों को काफी लाभ पहुँचा। एनसीईआरटी की साइट और उत्कर्ष सोसायटी के यू-ट्यूब चैनल और गणित ज्ञान मंचों के माध्यम से कक्षावार और विषयवार कंटेट लगातार तैयार करके अपलोड किया गया। इस संबंध में एससीईआरटी के निदेशक डॉ.ऋषि गोयल ने कहा है कि यह कामयाबी प्रदेश सरकार की दूरदर्शिता एवं विद्यालय शिक्षा विभाग के अधिकारियों की प्रेरणा से संभव हो पाई है। **- शिक्षा सारथी डेस्क**

सरकारी शिक्षा-तंत्र पर बढ़ता जन-विश्वास

प्रमोद कुमार

विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा विद्यार्थियों के कल्याण के लिए गत वर्ष से आरम्भ किये गये प्रयासों को अब सफलता के फल लगने आरंभ हो गये हैं। इससे प्रेरित होकर विभाग और भी गंभीरता व मनोयोग से अपने कार्यों में जुट गया है। कोविड की त्रासदी में जहाँ प्राइवेट विद्यालयों के विद्यार्थियों का सारा कार्य माता-पिता को करना पड़ रहा है, वहीं सरकारी विद्यालयों के लिए यह मोर्चा खुद विभाग और अध्यापकों ने सँभाला है। चाहे एजुसेट के माध्यम से घर-घर टीवी प्रसारण करवाना हो, पुस्तकों को पहुँचाना हो अथवा माता-पिता से सम्पर्क स्थापित करना हो, कोरोना काल में विभाग पूरी निष्ठा से इस दिशा में प्रयासरत रहा। विभाग द्वारा ऑनलाइन शिक्षण को निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार हर विद्यार्थी तक सरलता व सुगमता से पहुँचाने के लिए काफी मेहनत की गई। इसी उद्देश्य से 'अवसर मोबाइल एप',' बनाया गया। डिजिटल डिवाइड को खत्म करने के लिए विभाग द्वारा अनेक प्रयास आरम्भ किए गये। सुपर-100 कार्यक्रम का यहाँ जिक्र अवश्य करना होगा, जिसमें लाभ से वंचित वर्ग के कमजोर आर्थिक परिवेश के अनेक बच्चों द्वारा जेईई/एनईईटी जैसी महत्त्वाकांक्षी परीक्षा पास करके विभिन्न आईआईटी, एनआईटी तथा मेडिकल कॉलेज में दाखिले के लिए सीटों को पक्का किया गया।

इन सब प्रयासों से जनता का विश्वास राजकीय विद्यालयों के प्रति मजबूत हुआ है। उनका नजरिया बदला है। इसमें कोई दो राय नहीं कि वर्तमान में सरकारी विद्यालय उत्कृष्ट शिक्षा के केन्द्र बन रहे हैं। सरकार इसके लिए शानदार प्रयास भी कर रही है। 136 नये राजकीय संस्कृति मॉडल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बनाये गये है। अंग्रेजी माध्यम के इन सीबीएसई विद्यालयों में दाखिले को लेकर जनता में बहुत उत्साह है। 1487 कलस्टर स्कूलों को साइंस विद्यालय बनाया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सभी कल्याणकारी प्रावधानों को लागू किया जा रहा है।

विभाग द्वारा किये गये कल्याणकारी कार्यों का लाभ यह हुआ कि हरियाणा में सरकारी स्कूलों में दाखिले के प्रति जबरदस्त रुझान देखने में आ रहा है। प्रायः देखा जाता था कि राजकीय विद्यालयों से विद्यार्थी प्राइवेट की ओर रुख करते थे, परन्तु इस सत्र में तो कुछ और ही तस्वीर देखने को मिली है।

शैक्षणिक सत्र 2020-21 के दौरान निजी से सरकारी स्कूलों में छात्रों का आगमन

राज्य में प्राइवेट स्कूलों से इस वर्ष 1,46,060 विद्यार्थी सरकारी स्कूलों में आये हैं यह रुझान इसलिए भी अच्छा लगता है कि 90,254 लड़के प्राइवेट स्कूलों से सरकारी में आये हैं जबकि लड़कियों की संख्या 55,806 है। अबकी बार ग्यारहवीं कक्षा में ही 35,598 विद्यार्थी आये हैं, जबकि नौंवी कक्षा में 14,658 विद्यार्थी आये हैं और छठी कक्षा में 14,248 विद्यार्थी आये हैं जो पिछले वर्षों की तुलना में बहुत अधिक हैं। यह रुझान बहुत

सरकारी विद्यालयों में बढ़ने वाले विद्यार्थियों की जिलावार संख्या-

हिसार	13277	यमुनानगर	6184
फरीदाबाद	9798	रोहतक	5750
भिवानी	9589	झज्जर	5680
जींद	9245	पलवल	4978
कैथल	8104	कुरुक्षेत्र	4902
सोनीपत	8053	अंबाला	4893
फतेहाबाद	7916	रेवाड़ी	4773
करनाल	7702	नूंह	4759
सिरसा	7472	महेंद्रगढ़	4035
पानीपत	7279	चरखी दादरी	3186
गुरुग्राम	6226	पंचकूला	2688

कक्षा आठवीं से बारहवीं में सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को टैब दिये जाने हैं। वित्त विभाग से बजट मंजूर हो चुका है। संबंधित विभाग को फाइल भेज दी है। जल्दी ही टेंडर होंगे।

ये टेबलेट वाईफाई एनेबल होंगे, इनमें इस प्रकार की समुचित व्यवस्था होगी कि विद्यार्थी आपत्तिजनक तथा अवांछित सामग्री न देख पाये। विद्यार्थी इसमें वही साइट खोल सकेगा जो शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत होगी। यह प्रावधान इसलिए भी जरूरी है ताकि टेबलेट का दुरुपयोग न हो। इसमें जो मैमोरी कार्ड दिया जाएगा उसे भी इस प्रकार तैयार किया गया है कि विद्यार्थी अपनी इच्छा से बदलाव न कर पायें। लगभग 8 लाख से अधिक विद्यार्थियों को टेबलेट उपलब्ध करवाने वाला हरियाणा पूरे भारत में पहला और इकलौता राज्य है।

- डॉ. जे. गणेशन, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा विभाग, हरियाणा।

विद्यार्थियों को निःशुल्क टैबलेट देने वाला हरियाणा देश का पहला राज्य

- आठ लाख से अधिक विद्यार्थियों को दिए जाएँगे निःशुल्क टेबलेट
- वित्त विभाग से मिल चुकी है मंजूरी
- कक्षा आठवीं से बारहवीं के विद्यार्थियों को मिलेंगे टैब
- टैब में कंटेट प्री-लोडेड होगा।
- ऑनलाइन शिक्षा के साथ ऑनलाइन परीक्षा भी दे पाएँगे विद्यार्थी

ही सकारात्मक है तथा छात्र संख्या में 8 प्रतिशत की वृद्धि विभाग के लिए बहुत ही लाभदायक रहेगी। जहाँ विद्यालयों में पढ़ाई का अच्छा वातावरण बनेगा, वहीं विद्यालय प्रबंधन समितियाँ भी अधिक मजबूत होंगी ।

विभाग के विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर रहे विद्यार्थियों को ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से सरकार द्वारा कक्षा आठवीं से बारहवीं के सभी वर्गों, जैसे सामान्य श्रेणी, अनुसूचित जाति और पिछड़े वर्ग के साथ अल्पसंख्यक वर्गों के लड़कों एवं लड़कियों को डिजिटल एजुकेशन की सुविधा उपलब्ध करवाने के लिये राज्य सरकार द्वारा निःशुल्क टेबलेट देने का निर्णय किया गया है। इस सुविधा से अब सरकारी स्कूलों के विद्यार्थी भी डिजिटल ऑनलाइन शिक्षा का लाभ प्राप्त कर सकेंगे। इन टेबलेट में प्री-लोडेड कंटेंट में डिजिटल पुस्तकों के साथ- साथ विभिन्न प्रकार के टेस्ट, वीडियो और अन्य सामग्री भी रहेगी जो सरकारी स्कूलों के पाठयक्रमों के अनुसार होगी तथा कक्षावार होगी जिससे न केवल विद्यार्थियों को घर बैठे ही विभिन्न प्रकार के विषयों की पढ़ाई करने की सुविधा मिलेगी, बल्कि वे ऑनलाइन शिक्षा तथा ऑनलाइन परीक्षा भी दे सकेंगे। निःशुल्क टेबलेट उपलब्ध करवाने का कार्य प्रगति पर है। इसे माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा स्वीकृत किये जाने के उपरान्त वित्त विभाग द्वारा भी स्वीकृति प्रदान कर दी गई है।

हालांकि अप्रैल मास से ही सरकार द्वारा उत्कर्ष सोसायटी में एजुसैट के माध्यम से टेलीविजन प्रसारण को केबल टीवी तथा डीटीएच के द्वारा शिक्षा को हर घर तक पहुँचाने का कार्य कर दिया गया था और हरियाणा दूरवर्ती शिक्षा की व्यवस्था करने वाला पहला राज्य बना जिसकी मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा भी सराहना की गई। परन्तु टीवी का प्रसारण एकतरफा है और उसमें विद्यार्थी के मूल्यांकन की सुविधा नहीं है। इसी पर आगे कार्यवाही करते हुए 'अवसर एप' का निर्माण किया गया जिसका उपयोग अब टेबलेट में किया जाएगा जिससे बच्चों को पढ़ने की, कंटेंट देखने की, साप्ताहिक टैस्ट, मासिक मूल्यांकन टैस्ट, सतत एवं समग्र मूल्यांकन, शंका समाधान आदि की पूरी सुविधा मिलेगी। सुशासन दिवस के अवसर पर यह योजना प्रदेश के बच्चों को समर्पित की गई।

इस योजना से भी छात्र संख्या में और वृद्धि होगी क्योंकि आज भी बहुत से ऐसे परिवार हैं, जिनके पास अपने बच्चों के लिए टेबलेट, लेपटॉप उपलब्ध करवाने के लिए पैसे की व्यवस्था नहीं है। सरकार द्वारा इस व्यवस्था के माध्यम से जहाँ गरीब और अमीर की खाई को पाटने का कार्य किया है। वहीं सभी बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने का समान अवसर उपलब्ध करवाने का कार्य भी किया है।

कक्षा	लिंग	निजी से राजकीय
पहली	लड़के	231
पहली	लड़कियाँ	180
दूसरी	लड़के	3168
दूसरी	लड़कियाँ	2682
तीसरी	लड़के	5544
तीसरी	लड़कियाँ	4345
चौथी	लड़के	6211
चौथी	लड़कियाँ	4655
पाँचवी	लड़के	6081
पाँचवी	लड़कियाँ	4520
छठी	लड़के	8072
छठी	लड़कियाँ	6176
सातवीं	लड़के	7496
सातवीं	लड़कियाँ	5587
आठवीं	लड़के	6819
आठवीं	लड़कियाँ	4135
नौवीं	लड़के	9302
नौवीं	लड़कियाँ	5356
दसवीं	लड़के	8676
दसवीं	लड़कियाँ	3349
ग्याहरवीं	लड़के	23114
ग्याहरवीं	लड़कियाँ	12484
बारहवीं	लड़के	5540
बारहवीं	लड़कियाँ	2337
	कुल	1,46,060

निश्चित तौर पर इन सब बातों ने सरकारी शिक्षा-तंत्र पर जनविश्वास को मजबूत किया है।

कार्यक्रम अधिकारी
शैक्षणिक प्रकोष्ठ
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

कोरोना भी नहीं रोक पाया कला उत्सव की उड़ान

सत्यवीर नाहड़िया

कोरोना के कठिन काल में देश और दुनिया में भले ही बहुत कुछ ठहर-सा गया हो, किंतु माध्यमिक शिक्षा विभाग के कला एवं संस्कृति को समर्पित प्रकल्प कला उत्सव में कहीं कोई ठहराव नहीं आया। अपने ऑनलाइन प्रारूप में भी कला उत्सव में विभिन्न प्रकार की नौ प्रतियोगिताओं में अपनी मौलिक काव्य

विशिष्टता के चलते बेहद सराहा गया। प्रतिभागियों ने कोरोना की विषम एवं विकट परिस्थितियों के बावजूद इस बार भी कला उत्सव में बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा अपनी प्रतिभा के जौहर दिखाए। कोरोना काल में भी नवाचारी विकल्पों के बीच ऑनलाइन कला उत्सव अपनी अनूठी छाप छोड़ गया।

इस बार कला उत्सव में संगीत, नृत्य एवं दृश्य कला से जुड़ी एकल प्रतियोगिताओं को शामिल किया गया था। लड़कों तथा लड़कियों के लिए क्रमशः दोनों प्रतियोगिताओं का रोचक प्रारूप बनाया गया ,जिनमें भारतीय शास्त्रीय पक्ष के साथ लोक प्रारूपों को पूरा महत्त्व दिया गया। नवंबर मास में जहाँ खंड एवं जिला स्तर के लिए प्रतिभागियों से निर्धारित नियमावली के अनुसार वीडियो क्लिप्स मँगवाई गईं, वहीं राज्य स्तर के मुकाबले जिला मुख्यालयों से सभी प्रतियोगिताओं के सजीव प्रसारण के साथ संपन्न कराए गए। कला उत्सव के दौरान स्कूलों का खुला रहना भी प्रतिभागियों के लिए वरदान साबित हुआ, क्योंकि

संबंधित प्रतिभागियों को अपने गुरुजन का पूरा मार्गदर्शन इस दौरान मिल पाया। खंड व जिला स्तर पर व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर खंड संसाधन प्रतिनिधियों ने निर्णायक मंडल के साथ निरंतर रचनात्मक तालमेल बनाए रखा तथा खंड व जिले की संबंधित नौ प्रतियोगिताओं के परिणाम राज्य स्तरीय निर्णायक मंडल से ही तैयार करवाए गए।

नौ प्रतियोगिताओं में संगीत (वोकल व इंस्ट्रुमेंटल) फोक तथा क्लासिकल, नृत्य फोक व क्लासिकल,दृश्य कला में द्विआयामी और त्रिआयामी कलाकृतियों के अलावा लोक परंपरागत खिलौनों के विभिन्न प्रारूपों को शामिल किया गया। राज्य स्तरीय मुकाबलों को भी ऑनलाइन प्रारूप से ही संपादित किया गया, जिसमें जिला मुख्यालय पर 15 दिसंबर से 18 दिसंबर तक कला उत्सव की स्वर लहरियाँ गूँजती रहीं तथा समूचे प्रदेश में कला साधकों को जोड़े रखा।

राज्य स्तरीय कला उत्सव के इस नवाचार के प्रारूप में पहले दिन जहाँ संगीत एवं नृत्य से जुड़ी सभी संबंधित प्रतियोगिताओं में लड़कियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर मन मोह लिया, वहीं 16 दिसंबर को लड़कों ने इन्हीं दोनों वर्गों में अपने प्रदर्शन से भावविभोर कर दिया। इसी क्रम में 17 व 18 दिसंबर को दृश्य कलाओं से जुड़े प्रतिभागियों ने अपनी द्विआयामी, और त्रिआयामी आकृतियों एवं बहुआयामी खिलौनों से अपनी कलात्मकता एवं मौलिकता की अनूठी छाप छोड़ी ।

एससीईआरटी हरियाणा गुरुग्राम में क्रिएटिव एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स के परियोजना समन्वयक एवं प्रख्यात कला मर्मज्ञ दिबाकर दास ने बताया कि हमारा प्रयास रहा कि कोविड-19 की विपरीत परिस्थितियों में भी विद्यार्थियों को मंच प्रदान करवाया जाए ताकि कला एवं संस्कृति के प्रति उनकी रुचि-अभिरुचि के संस्कारों का संरक्षण एवं संवर्धन हो सके। इस उद्देश्य के लिए बनाए गए प्रारूपों को अमलीजामा पहनाने के लिए प्रदेशभर से आयोजन समिति ने रचनात्मक तालमेल से ऑनलाइन कला उत्सव में नए रंग भरकर नए आयाम रचे। प्रदेश से करीब चार सौ चयनित छात्रों-छात्राओं ने अपनी कला के जौहर दिखाकर राज्य स्तर पर उपस्थिति दर्ज करवाई है। कोविड-काल की विकट परिस्थितियों के बीच भी कला उत्सव को सफल बनाने वाले प्रतिभागियों, प्रभारियों तथा आयोजन से जुड़े सैकड़ों समर्पित प्रतिनिधि बधाई के पात्र हैं।

प्राध्यापक, रसायनशास्त्र
राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
खोरी (रेवाड़ी)

55 हजार विद्यार्थियों ने किया सामूहिक श्लोकोच्चारण

18 श्लोकों से विश्वभर में पहुँचाया गीता का ज्ञान

डॉ. प्रदीप राठौर

गीता की धरा पर एकादशी के दिन दोपहर 12 बजे 108 विद्यार्थियों ने विश्व भर को गीता का संदेश दिया। ब्रह्मसरोवर के पुरुषोत्तम पुरा बाग में 12 लाइनों में बैठे इन विद्यार्थियों के साथ-साथ प्रदेश भर के स्कूलों में बैठे 55 हजार विद्यार्थियों ने भी गीता के 18 श्लोकों (भगवद्गीता के 18 अध्यायों में से एक-एक) का उच्चारण किया। इस कार्यक्रम को अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव 2020 की वेबसाइट और फेसबुक, ट्वीटर सहित इंटरनेट के अन्य माध्यमों से लाइव दिखाया गया और विश्व के कोने-कोने से लोगों ने इसके साथ जुड़कर ग्लोबल चैंटिंग में हिस्सा ले वैश्विक गीता पाठ किया। विद्यालय शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने इस वैश्विक गीता पाठ को ऐतिहासिक और यादगार बनाने के लिए काफी प्रयास किए। गीता ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से कुछ ऑनलाइन प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया था। ये थीं- पेंटिंग, निबंध लेखन, श्लोकोच्चारण, संवाद और भाषण। ई-मेल और टेलीग्राम के माध्यम से इनके लिए ऑनलाइन प्री-रिकार्डेड प्रविष्टियाँ आमंत्रित की गई थीं।

25 दिसंबर को जैसे ही घड़ी की सुई ने 12 बजने का इशारा किया तो ब्रह्मसरोवर के पुरुषोत्तम पुरा बाग में तैयार बैठे 108 विद्यार्थियों ने गीता के 18 श्लोकों का उच्चारण शुरू कर दिया। उनके मुख से गीता के श्लोक निकलते ही ब्रह्मसरोवर सहित थानेसर शहर भर के चौकों पर लगे एंड्रायड माइक सिस्टमों के माध्यम से पूरे शहर में गीता के श्लोक गूंज उठे। देश-विदेश के लाखों लोगों ने वैश्विक गीता पाठ के साथ ऑनलाइन जुड़कर विश्व भर में गीता के ज्ञान की गूँज पहुँचाई।

आईजीएम 2020 में 22 जिलों के 55 हजार विद्यार्थियों ने ऑनलाइन प्रणाली से वैश्विक गीता पाठ में भाग लिया। इस वैश्विक गीता पाठ के लिए प्रत्येक जिले से 50 स्कूलों का चयन किया गया था और हर स्कूल से 50 विद्यार्थी इसमें शामिल हुए । इतना ही नहीं देश भर के 17 संस्कृत विश्वविद्यालयों को भी वैश्विक गीता पाठ से संबंधित लिंक भेजा गया था। इसको लेकर जारी दो ऑनलाइन लिंक में से एक पर एक साथ एक हजार स्कूलों को जोड़ा गया। इस लिंक के साथ प्रदेश भर के 1150 से ज्यादा राजकीय और प्राइवेट स्कूल तथा संस्कृत विश्वविद्यालय व अन्य संस्थाएँ जुड़ीं।

मुख्यमंत्री जी ने चंडीगढ़ से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से कहा कि श्रीमद् भगवद् गीता युवाओं के लिए प्रेरणा का प्रमुख स्रोत है। यह पवित्र ग्रंथ न केवल मानव जाति को सही रास्ता दिखाता है बल्कि उनमें नैतिक मूल्यों का भी समावेश करता है ताकि वे राष्ट्र निर्माण में प्रभावी योगदान दे सकें। यह दिन कई मायनों में अनूठा है, क्योंकि हम न केवल अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव मना रहे हैं बल्कि दो महान हस्तियों महामना पंडित मदन मोहन मालवीय और पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी का जन्मदिवस भी मना रहे हैं।

उन्होंने कहा कि गीता की सकारात्मक ऊर्जा के रूप में अपनी प्रासंगिकता है और गीता के श्लोकों से निकलने वाली तरंगें युवाओं के दिमाग पर सकारात्मक प्रभाव डालती हैं और उन्हें जीवन में सही रास्ता चुनने में सहायता करती हैं। इसी राह पर चलते हुए हरियाणा सरकार छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करती है ताकि वे अपने जीवन में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकें। उन्होंने कहा कि भगवान कृष्ण ने कुरुक्षेत्र के युद्ध के मैदान में श्रीमद्भगवद्गीता का संदेश दिया था जो अब हमारे जीवन का सार बन गया है। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक, वल्लभ भाई पटेल, नेता जी सुभाष चंद्र बोस जैसी देश के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाली विभिन्न महान हस्तियों ने भी अपने जीवन में गीता के उपदेशों का पालन किया और देश को स्वतंत्रता दिलाई। उन्होंने कहा कि इस पवित्र ग्रंथ की शिक्षाएँ आधुनिक समय में भी उतनी ही प्रासंगिक हैं।

drpradeeprathore@gmail.com

ऑनलाइन शिक्षणः वर्तमान संदर्भ और भविष्य का पथ

प्रमोद कुमार दीक्षित

मार्च, 2020 का दूसरा सप्ताह। होली के रंग अभी धुले न थे। अबीर-गुलाल की मोहक महक वातावरण में तैर रही थी। बासंती बयार मानव-मन को उल्लसित कर रही थी। फाग के राग बस ओंठों पर बसे ही थे। फसलें पक कर खलिहान से होते हुए कृषकों के घरों में पहुँचने की प्रतीक्षा में थी और लोकजीवन आनन्दोत्सव में नाच रहा था। वृक्षों की कलियाँ आँखें खोल मधुमय संसार को देखने की लालसा में थी और सुवासित सुमन मलय समीर में अपनी सुगंध घोल हर द्वार गली में बाँट रहे थे। विद्यालयों में बच्चे वार्षिक परीक्षाओं की तैयारी में खोये थे कि तभी एक दिन अचानक एक फरमान आया कि सभी स्कूल, कॉलेज, दफ्तर, बाजार, सिनेमा हॉल, मॉल आदि सीमित कालावधि के लिए बंद किये जाते हैं। उल्लेख था कि एक अज्ञात वायरस कलुष कोरोना कोविड-19 अपने तथाकथित जन्मस्थान बुहान, चीन से दुनिया को भयाक्रांत करने निकल पड़ा है और भारत ने एहतिहातन सुरक्षा सावधानी बरतते हुए सार्वजनिक जीवनयापन के केन्द्रों पर एक प्रकार की तालाबंदी घोषित कर दी है।

पूरा देश घरों में दुबक गया। परिवहन के साधन ट्रेन एवं बसों के चक्के ठहर गये। कल-कारखाने और स्कूल बंद हो गये। स्कूल बंद होने से बच्चों की दैनंदिन पढ़ाई-लिखाई प्रभावित होने लगी। तभी देश भर में कुछ नवाचारी टीचर्स ने आइसीटी डिजिटल संसाधन मोबाइल के माध्यम से बच्चों की ऑनलाइन पढ़ाई का जिम्मा उठाया। एक दीप जला तो सैकड़ों दीप प्रकाशवान हो उठे। सरकारों ने भी प्रेरित होकर ऑनलाइन शिक्षण विधा पर जोर दिया। यू-ट्यूब, रेडियो, टीवी चैनल और विभिन्न एप्स के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षण ने गति पकड़ी। यह टीचर्स के लिए नवीन विधा थी और बच्चों के लिए भी। फिर भी कोशिश जारी थी, ताकि बच्चों के पढ़ने का क्रम बना रहे।

पर भारत जैसे देश में जिसकी अधिकांश आबादी के लिए सामान्य जीवन निर्वाह के लिए वस्त्र, भोजन, दवा जैसी मूलभूत जरूरतें ही भारी पड़ रही थी, वहाँ सभी अभिभावकों के पास मोबाइल एवं नेट डेटा की उपलब्धता कहाँ सहज सुलभ हो सकती थी। तो ऑनलाइन शिक्षण के पक्ष-विपक्ष एवं हानि-लाभ पर चर्चाएँ आम हुईं, सर्वेक्षण होने लगे। मालूम हुआ कि इसकी पहुँच तो बामुश्किल 25-30 प्रतिशत बच्चों तक ही हो रही है। शेष बच्चों के अभिभावकों के पास स्मार्टफोन ही नहीं। ग्रामीण क्षेत्रों में तो हालात और भी बदतर। उधर मनोवैज्ञानिकों एवं चिकित्सकों ने ऑनलाइन शिक्षण के खतरों से आगाह किया। कुछेक घटनाएँ भी प्रकाशित हुईं कि मोबाइल का अत्यधिक प्रयोग बच्चों को मनोरोगी, चिड़चिड़ा और झगड़ालू बना रहा है। किसी ने उपयोगी बताया तो किसी ने हानिकारक, पर यथार्थ तो वही बता सकते हैं जो यह काम कर रहे हैं अर्थात शिक्षक, अभिभावक, बच्चे और शिक्षा से जुड़े हुए तमाम सामाजिक कार्यकर्ता। तो इस लेख में मैंने पूरे देश से ऐसे ही कुछ लोंगो से बातचीत कर उनके मन टटोले, उनकी राय समझने की कोशिश की। तो पढ़ते हैं उनके विचार-

शिक्षक, साहित्यकार एवं शैक्षिक दखल पत्रिका के संपादक महेशचन्द्र पुनेठा, उत्तराखण्ड विचार रखते हैं, ''मुझे लगता है कि यह विविधतापूर्ण और बड़े परिदृश्य को बच्चों के सम्मुख प्रस्तुत कर सकने में समर्थ माध्यम है। सामाजिकता के लिहाज से यह आदमी को आदमी से दूर कर रहा है। पारिवारिक भाव समाप्तप्राय है। संवादहीनता, एकाकीपन, अलगाव की ओर ले जा रहा है। पर कहना होगा कि ऑनलाइन शिक्षण भयमुक्त होता है। कक्षा में हर समय शिक्षक की नजर बच्चे पर होती है जिससे बच्चे स्वाभाविक अभिव्यक्ति नहीं पर पाते।''

आसिया फारूकी (राज्य पुरस्कार प्राप्त शिक्षिका) फतेहपुर, उप्र अपनी राय जाहिर करती हैं कि ऑनलाइन शिक्षण एक बेहतर विकल्प के रूप में सामने आया है। इस शिक्षण प्रक्रिया में समय की बचत, सुरक्षा, अभिभावकों का सान्निध्य आदि प्रमुख हैं। ऑनलाइन शिक्षण में शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण स्तर पर अधिक चुनौतियाँ हैं जैसे स्मार्टफोन की उपलब्धता न होना, नेटवर्क की समस्या, तकनीक के उपयोग की जागरूकता की कमी, अभिभावकों का असहयोग और आर्थिक रूप से सक्षम न होना एवं आवश्यक संसाधनों का अभाव आदि।

उषा छाबड़ा, शिक्षिका एवं बालकथा लेखिका, नई दिल्ली चुनौतियों की चर्चा करते हुए कहती हैं कि ऑनलाइन टीचिंग की अपनी चुनौतियाँ हैं। कई बार कनेक्टिविटी की कमी की वजह से परस्पर सवाल-जवाब भी नहीं हो पाते। हम पहले से ही पीपीटी और वर्कशीट आदि तैयार करके रखते हैं और बीच-बीच में उन्हें कविता लेखन, कहानी लेखन, चित्र वर्णन, मौखिक परिचर्चा से भी जोड़ते हैं जिससे कि उन्हें बार-बार स्क्रीन न देखना पड़े।

आकाश सारस्वत, उप राज्य परियोजना निदेशक (समग्र शिक्षा, उत्तराखण्ड) उपाय सुझाते हैं- 'ऑनलाइन शिक्षण के भरोसे न रहकर छोटे-छोटे समूहों में सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों के शिक्षण की व्यवस्था किया जाना ज्यादा बेहतर सिद्ध हो सकता है अन्यथा पहले से ही भारी भेदभाव झेल रही शिक्षा निर्धन बच्चों के लिए तो आकाश कुसुम ही हो जाएगी।'

डॉ.मनोज कुमार वार्ष्णेय, प्रवक्ता (डायट, आगरा) कहते हैं- 'संचार माध्यमों तथा आधुनिक दीक्षा एप, प्रेरणा एप, ई-पाठशाला के साथ-साथ टेलीविजन और

रेडियो चैनल पर प्रत्येक कक्षा के लिए विषयवार बहुत ही रोचक शैक्षिक कंटेंट प्रेषित किया जा रहा हैं। व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से शिक्षक कहानी, चित्रकला, उड़ान आदि प्रतियोगिताएँ सम्पन्न कर रहे हैं।'

डॉ.महेश जैन (उपसंचालक, लोक शिक्षण मध्यप्रदेश शासन, भोपाल) सवाल उठाते हुए कहते हैं कि आज हम सभी ऑनलाइन शिक्षण दे रहे हैं, बिना यह ध्यान रखे हुए कि बच्चों को कितना प्रभावित करेगा? उनके स्वास्थ्य को कितना नुकसान पहुँचाएगा? और क्या हम वर्चुअल माध्यम से वह ज्ञान दे भी सकते हैं जो प्रत्यक्ष में दिया जा सकता हैं? कहीं ऐसा न हो कि आभासी कक्षा की तरह ज्ञान का स्वरूप भी आभासी हो जाए। शिक्षण कक्षा कक्षों में ही संभव है।

गोपेंद्र कुमार सिन्हा गौतम (शिक्षक, औरंगाबाद बिहार) के विचार हैं- 'पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षक और छात्र कक्ष में आमने-सामने बैठकर पठन-पाठन का कार्य करने के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, वैश्विक मुद्दों पर चर्चा भी करते हैं। ऑनलाइन शिक्षा मजबूरी में जरूरी पर गुणतापूर्ण शिक्षा की गारंटी नहीं।'

भागवत साहू, शिक्षक (कबीरधाम, छत्तीसगढ़) इस व्यवस्था की कमियों की ओर संकेत करते हैं कि बच्चे केवल पुस्तक के पाठों व शिक्षक द्वारा बताई गई बातों को खेल-गतिविधियों से नहीं सीखते वरन् शिक्षा इन सब प्रकार के क्रियाकलापों का एक संयोजन है। जाहिर है, शिक्षण की सबसे उपयुक्त जगह तो शाला ही है।

शिक्षिकाएँ डॉ.रेणु देवी एवं नीलम गुप्ता, हापुड़ उत्तर प्रदेश विचार रखतीं हैं कि ऑनलाइन शिक्षण ने बच्चों और शिक्षकों दोनों के तकनीकी ज्ञान में वृद्धि की है। छोटे-छोटे बच्चे भी गूगल सर्च करना, यूट्यूब और विभिन्न एप्स का प्रयोग करना सीख रहे हैं। ज्यादातर के पास वे संसाधन ही नहीं हैं, जिनसे ऑनलाइन शिक्षण संभव हो सके। जो बच्चे इससे नहीं जुड़ पा रहे हैं, उनमें हीन-भावना आ रही है, इससे शिक्षा में अंतर बढ़ने की संभावना भी बढ़ गयी है।

रामनरेश गौतम, नैनीताल (शिक्षक शिक्षा में अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के साथ काम कर रहे हैं) का मत है, ''बच्चे अपने शिक्षक को अपने जीवन का एक हिस्सा मानते हैं, शिक्षक के साथ होने वाला संवाद केवल विषयों को जानने भर के लिए उपयोगी नहीं होता वरन् बच्चों को एक तरह से स्कूल के साथ बने रहने व सीखने के मनोभाव को बनाए रखने में भी संबल देता है।''

सुरेश (हरियाणा राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित) कैथल के मत में ऑनलाइन शिक्षण विधा दम तोड़ती हुई नजर आती है। विद्यार्थी इस दौर में खेती के काम में जुट गए है, दिहाड़ी पर जा रहे हैं। उनकी ऑनलाइन शिक्षण में किसी प्रकार की कोई रुचि नहीं है। शिक्षक द्वारा फोन करने पर उचित जवाब नहीं मिलता। दिनेश नारायण (संयुक्त महामंत्री, राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ, उत्तर प्रदेश) कहते हैं कि ऑनलाइन शिक्षण व्यवस्था में शिक्षक छात्रों के प्राप्त ज्ञान का आकलन नहीं कर सकते हैं। इसमें एक प्रकार की नीरसता भी आ जाती है। मेरा व्यक्तिगत दृष्टिकोण है कि ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था गुरु और शिष्य परंपरा को प्रभावित कर रही है।

संदीप शोकल, शिक्षक हरियाणा बच्चों में कई प्रकार के मानसिक व शारीरिक रोग होने के खतरे की ओर आगाह करते हैं कि लगातार मोबाइल, टीवी के सामने बैठने से बच्चों की आँखे सूखने, सिर चकराने, पढ़ने-लिखने की गति कम होने के संकेत मिले हैं। इससे बच्चों में चिड़चिड़ापन, अनिद्रा, आलस्य बढ़ा है।

कमलेश त्रिपाठी (बाल विज्ञान खोजशाला, कौशाम्बी उत्तर प्रदेश) के अनुसार 'बच्चे तो सबसे ज्यादा खुले वातावरण में एक साथ रहकर, एक दूसरे के सहयोग से, एक दूसरे के अनुभव और प्रशिक्षक के साथ रहकर ज्यादा अच्छे से सीखते हैं। पर यह डिजिटल माध्यम से संभव नहीं।' विजय प्रकाश जैन, राजस्थान की राय है कि प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के साथ मिलकर, उनके सिर पर हाथ रखकर, पीठ थपथपाकर, उनसे निरंतर बातें करके ही सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को गतिशील किया जा सकता है। लेकिन ऑनलाइन शिक्षण इस तरह के मौके नहीं देता और महज खानापूर्ति बनकर रह जाता है।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्र विष्णुकांत उपाध्याय कहते हैं कि जीवन जीने का मार्ग ऑनलाइन शिक्षण के माध्यम से नहीं सिखाया जा सकता। उसके लिए हमें अपने गुरु के समीप जाना ही पड़ेगा। स्कूल जाकर जो ज्ञान हम गुरु से प्राप्त करते हैं, वो हम ऑनलाइन शिक्षण पद्धति के द्वारा कभी नहीं अर्जित कर सकते। वहीं की छात्रा संस्कृति दीक्षित ऑनलाइन शिक्षण से मानवीय मूल्यों की क्षति की बात करते हुए कहती हैं कि इससे सामूहिकता, परस्पर प्रेम, सद्भाव एवं आत्मीयता में कमी आयेगी। जीवन मूल्य बहुत आवश्यक हैं। तो आरोही वार्ष्णेय, बदायूँ एवं विभोर मनु पांडेय, अतर्रा दोनों अपनी पीड़ा व्यक्त करते हैं कि आँखें दर्द करती हैं और अंगुलियाँ भी। मोबाइल से रीडिंग में मजा नहीं आता, दोस्त भी नहीं हैं जबकि क्लास रूम में खुशी मिलती है।

अरुण सिंह, शिक्षक देवरिया का मानना है- 'ऑनलाईन शिक्षा प्राथमिक कक्षाओं के लिए केवल सूचना सम्प्रेषण का माध्यम लग रही है। इसे केवल सहायक संसाधन के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।' डॉ. कमलेश अटवाल (खटीमा) कहते हैं 'इस शिक्षण विधा में हम बच्चों के साथ डाक्यूमेंट्री फिल्में, न्यूज क्लिप, आर्टिकल्स साझा कर सकते हैं। पर विद्यालय और कक्षा के माहौल से प्रत्यक्ष रूप से सीखना, समूह में सीखना आदि इसमें सम्भव नहीं। बच्चों की भागीदारी बहुत कम दिखती है।'

अंततः उपर्युक्त संवाद से स्पष्ट होता है कि ऑनलाइन शिक्षण विद्यालयी शिक्षा का विकल्प नहीं हो सकती, क्योंकि इसकी पहुँच सभी बच्चों तक नहीं है। इस शिक्षण विधा में बच्चों और शिक्षकों के बीच प्रेम-स्नेह एवं आत्मीयता का सम्बंध नहीं बन पाता। यह बच्चों में मानवीय मूल्यों एवं सामाजिकता का विकास कर सकने में समर्थ नहीं है।

आप एक प्रयोगधर्मी शिक्षक हैं। आप साहित्य में भी दखल रखते हैं इसके साथ ही आप प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक बदलावों, आनन्ददायी शिक्षण एवं नवाचारी मुद्दों पर सतत लेखन एवं प्रयोग करते रहते हैं।

प्रत्येक विद्यालय में बनेगा 'हैरिटेज कॉर्नर'

प्रदेश के हर विद्यालय में ऐतिहासिक स्मारक कोना यानी हैरिटेज कॉर्नर बनाए जाएँगे। इस कोने में जहाँ राज्य के गौरवशाली इतिहास का विवरण अंकित होगा, वहीं ऐतिहासिक स्मारकों की जानकारी भी होगी। मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने प्रदेश में स्थित ऐतिहासिक स्मारकों और विरासत की जानकारी से युक्त पुस्तक प्रकाशित करने के भी निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री बीते दिनों पंचकूला में बनने वाले राज्य स्तरीय संग्रहालय को लेकर आयोजित बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि आरंभ में सौ विद्यालयों में हैरिटेज स्मारक कॉर्नर बनाए जाएँगे। बाद में प्रदेश के सभी विद्यालयों में ऐसे कोने स्थापित होंगे। हर विद्यालय में ऐतिहासिक वस्तुओं के प्रारूप बनाकर रखे जाएँगे। स्कूली पाठ्यक्रम में ऐतिहासिक जानकारी को जोड़ने की दिशा में भी विशेष कदम उठाए जाएँगे। पाठ्यक्रम में कुछ नये अध्याय जोड़ने की भी योजना बनाई जाएगी। इन सबका उद्देश्य यही है कि विद्यार्थियों को अपने गौरवशाली इतिहास से परिचित कराया जा सके।

बैठक में पुरातत्व एवं संग्रहालय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)अनूप धानक, महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री कमलेश ढांडा, मुख्यमंत्री के मुख्य प्रधान सचिव डीएस ढेसी, पुरातत्व विभाग के प्रधान सचिव डॉक्टर अशोक खेमका, मुख्यमंत्री की उप प्रधान सचिव आशिमा बराड़, पुरातत्व विभाग की निदेशक मनदीप कौर प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

- शिक्षा सारथी डेस्क

कोरोना काल में शिक्षा की चुनौतियाँ और नये विकल्प

2020 के आगमन के साथ ही चीन के वुहान प्रांत से कोरोना बीमारी के समाचार आने लगे थे। इस बीमारी ने मार्च के प्रथम सप्ताह में भारत में दस्तक दी। 20 मार्च, 2020 से लगभग सभी शैक्षणिक संस्थान बन्द कर दिये गये। तब से लेकर अब तक कमोबेश शिक्षा की गति मंद-मंथर बनी हुई है। ले देकर ऑनलाइन शिक्षा का विकल्प ही खुला है। इस बार बोर्ड परीक्षाएँ और मूल्यांकन कार्य भी जैसे तैसे पूरा किया गया। कुल मिलाकर शिक्षा तंत्र पर बहुत बुरा प्रभाव देखने को मिला है। शिक्षक अपने कर्तव्य स्थल और अपने स्नेही विद्यार्थियों की कमी महसूस कर रहे हैं। उधर घरों के अन्दर रहते-रहते विद्यार्थीगण भी अनमने और उत्साहहीन से दिखने लगे हैं।

शिक्षा क्षेत्र पर कोरोना का व्यापक दुष्प्रभाव देखने को मिल रहा है। शिक्षा के ये मन्दिर बिन पुजारी और बिन भक्तों के सूने-सूने नज़र आ रहे हैं। इनकी खामोशी देखकर यही दर्द बार-बार लबों पर आता है - कोई लौटा दे मेरे बीते हुए दिन।

चुनौती बड़ी है लेकिन तलाशने वालों ने विकल्प भी खोज निकाले। इंटरनेट पर उपलब्ध अनेक पटलों का प्रयोग और प्रचलन बढ़ गया है। मगर भारत जैसे गरीब और विकासशील देश में संसाधनों की कमी आड़े आ रही है। तकनीकी ज्ञान भी एक बड़ी बाधा है। हमारे देश में अभी तक परम्परागत शिक्षा का प्रचलन रहा है। नये माहौल में ढलना और सुगमतापूर्वक तकनीक का इस्तेमाल करना यह अभी विचारणीय प्रश्न बना हुआ है। इस दिशा में निरन्तर अनुसंधान और प्रशिक्षण तथा तकनीकी का व्यावहारिक प्रयोग बढ़ाये जाने की नितांत आवश्यकता है। तभी हम भविष्य की चुनौतियों का सामना कर सकते हैं।

अब बात करते हैं शिक्षकगण की। कोरोना काल में शिक्षकों की कार्यशैली और दिनचर्या में काफी परिवर्तन देखने को मिला है। शिक्षक लोग स्कूल तो जा रहे हैं परन्तु बच्चों के बिना स्वयं को अकेले और असहाय-सा महसूस कर रहे है। कागजों पर पढ़ाई-लिखाई और अन्य गैर शैक्षणिक आँकड़े बनाने और भेजने में लगे हैं। ऑनलाइन शिक्षा को घर-घर पहुँचाने की युक्तियों को कारगर बनाने के रास्ते खोज रहे हैं और जो बच्चे इन माध्यमों में नहीं जुड़ पाये हैं, उनको भी घर-घर जाकर ढूँढ रहे हैं।

कक्षा-कक्ष में विद्यार्थियों के साथ सीधा संवाद और शिक्षणकार्य संभव नहीं हो रहा है। जो उन्हें मनोवैज्ञानिक रूप से कष्ट दे रहा है। कुछ उत्साही और तकनीकी के जानकार गूगल मीट, जूम वेबेक्स आदि पर क्लास की व्यवस्था भी कर रहे हैं। विद्यार्थियों के साथ स्वयं को जोड़ने की कोशिश कर रहे हैं।

कोरोना काल में शिक्षकों को बहुत-सी परेशानियों का सामना भी करना पड़ा है। प्राइवेट स्कूल में पढ़ाने वाले शिक्षकों के सामने वेतन तथा छटनी का संकट है। कई स्कूल-कॉलेजों ने सैलरी आधी कर दी है। वहीं सरकारी क्षेत्र के शिक्षकों को खाना वितरण, राशन वितरण, कोरोन्टाइन सेंटरों, एयरपोर्ट, अस्पताल आदि में अनिवार्य सेवा के तहत तैनात किया गया है। अनेक शिक्षक कोरोना वारियर्स के रूप में अपनी जान भी गँवा चुके हैं। असामान्य परिस्थितियों का डटकर सामना कर रहे हैं। अपने मौलिक कार्य से दूर रहकर कौन सुखी हो सकता है?

कुल मिलाकर ऊहापोह की परिस्थिति से गुजर रहे हैं। किसी कवि की ये पंक्तियाँ सार्थक और समीचीन जान पड़ती हैं -

यहाँ के हैं न वहाँ के हैं। हमको नहीं मालूम कहाँ के हैं?

शिक्षा मन्दिर के चहकते परिंदे अपने घरों की चारदीवारियों में बन्द हैं। मन की बात दोस्तों से नहीं कह पा रहे हैं। मनोवैज्ञानिक एवं संवेगात्मक विकास का रथ रुक-सा गया है। उनकी स्थिति सूरदास जी के जहाज के पंछी जैसी हो गई है- **जैसे उड़ि जहाज को पंछी फिरि जहाज पे आवै।**

स्कूलों में पढ़ाई के साथ-साथ मिड-डे मील, खेलकूद, सांस्कृतिक हलचल और सहपाठियों तथा दोस्तों के साथ मन की उमंग-तरंग वाली बातें भी तो होती हैं। गुरुजनों की प्रशंसा, झिड़की या प्रोत्साहन जीवन को गति देने का काम करती हैं। विद्यालय के नियम-कायदे और अनुशासन जीवन को संयमित और मर्यादित बनाते हैं। विषय की समझ प्रश्न पूछने से विकसित होती है। इतने बड़े लाभ या वरदान से वंचित हैं हमारे विद्यार्थी। विद्यालय को दूसरा घर इसीलिए कहा जाता है।

कोरोना काल में विद्यार्थियों को ऑनलाइन शिक्षा के एकमात्र विकल्प पर ठहरना पड़ रहा है। जिसके कई विपरीत प्रभाव भी देखने को मिल रहे हैं। स्क्रीन को लगातार देखने से आँखदर्द और सिरदर्द की समस्या आम हो चली है। गरीब और ग्रामीण क्षेत्रों में एंड्रॉइड फोन और नेटवर्क की बड़ी परेशानी सामने आ रही है। कुल मिलाकर बच्चे पढ़ाई से दूर जाते दिख रहे हैं। उनका समुचित और सन्तुलित विकास भी रुक रहा है। हम कर ही क्या सकते हैं। कोरोना की वैक्सीन आने पर ही कुछ मान्य समाधान मिल सकते हैं।

कोरोना काल में पूरा का पूरा शिक्षा-तंत्र हिल सा गया है। इसे पुनः सँभलने में समय लगेगा। हमें धैर्य रखना और विकल्प तलाशने होंगे। यह कठिन दौर भी गुजर जायेगा। सकारात्मक बने रहें। हार न मानें। खुशियों भरे दिन लौटेंगे। चहल-पहल होगी। शिक्षक और विद्यार्थी स्कूल जायेंगे-

कोरोना की काली छाया छँट जायेगी।
बन्दिश धीरे-धीरे हट जायेगी।
आशा का संदेश समेटे अंतर में,
नभ में एक नई पौ फट जायेगी।।

नरेन्द्र सिंह 'नीहार'
प्रवक्ता - हिन्दी एवं साहित्यकार
नई दिल्ली

ऑनलाइन शिक्षा की सार्थकता

दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश'

कोरोना ने हमारे जीवन के कई क्षेत्रों में दखल दिया है। इसके चलते लम्बे लॉकडाउन में हमारा सामाजिक जीवन और आर्थिक गतिविधियाँ तो अस्त-व्यस्त हुईं ही, इसने जिस चीज को सर्वाधिक प्रभावित किया, वह बच्चों की शिक्षा है। प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक सारे संस्थान तत्काल बन्द कर दिये गये थे, ताकि शारीरिक दूरी बनी रहे और कोरोना की महामारी से बचाव हो सके।

आज की तारीख में बच्चों की शिक्षा अभिभावकों की प्राथमिकताओं के केन्द्र में है। इसलिए पठन-पाठन का अचानक परिदृश्य से गायब हो जाना गहरी चिन्ता का विषय बन गया था। इसी समय उम्मीद की किरण के रूप में ऑनलाइन शिक्षा सामने आई। पहले कुछेक, फिर तमाम संस्थानों ने इंटरनेट की सहायता से छात्रों को उनके घर में शिक्षा देना शुरू कर दिया। एक ठहरे हुए समय में यह निश्चित रूप से सराहनीय पहल थी।

इससे पहले प्रतियोगी परीक्षा, शोध, विशेषज्ञता, महाविद्यालयीय शिक्षा के स्तर पर सामग्री के लिए गूगल, यूट्यूब, ई-पोर्टल और विभिन्न एप्स पर तो बहुत कुछ था, किन्तु इस बार लॉकडाउन में माध्यमिक व प्राथमिक शिक्षा के तहत व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर जिस तरह नियमित पाठ्य सामग्री भेजी गयी, अध्यापक ऑनलाइन रहकर छात्रों की समस्याओं के समाधान के प्रति तत्पर दिखे, परीक्षण के प्रश्नों के उत्तर का मूल्यांकन हुआ, त्रुटियों का सुधार कराया गया, यह सब अभूतपूर्व था।

यहाँ तक कि ग्रामीण क्षेत्र में सरकारी स्तर पर संचालित माध्यमिक और प्राथमिक शिक्षा को गतिशील बनाये रखने के लिए शिक्षकों ने इस पद्धति को अपनाया। गाँव के छात्रों की स्थिति अत्यन्त विषम है। यहाँ शायद ही किसी के पास लैपटॉप हो। कम ही छात्रों के अभिभावकों के पास एंड्रॉयड हैंडसेट है, हाईस्पीड इंटरनेट कनेक्टिविटी की उपलब्धता भी कमजोर है। कुछ अभिभावकों ने एंड्रॉयड फोन खरीदे, मगर नेट पैक डलवाना उनके लिए समस्या बन गया, फिर भी आपसी तालमेल के साथ बच्चों ने इस पद्धति से जुड़कर जैसी प्रतिबद्धता दिखाई, वह अद्भुत है। शिक्षक और छात्र दोनों के लिए यह डिजिटल माध्यम सम्भावनाओं से भरा पाया गया। इसमें अध्यापक को छात्रों के सामने आने के पूर्व तैयार होना पड़ता है। पूर्व तैयारी के साथ जब शिक्षक पढ़ाता है तो शिक्षण प्रभावी और गुणवत्तापूर्ण होता है। यह शिक्षाशास्त्र का सर्वमान्य सिद्धान्त है। ऑनलाइन होने की स्थिति में अध्यापक को मैत्रीपूर्ण, संयत और अनुशासित रहना पड़ता है। छात्र भी स्क्रीन के सामने अधिक ध्यानमग्न और विषय केन्द्रित रहते हैं। इस प्रकार सीखने-सिखाने की गतिविधि आदर्श

माहौल में सम्पन्न होती है। ऐसी स्थिति में बच्चा जो पढ़ता है, उसे आसानी से आत्मसात कर लेता है। बच्चों के लिए यह खूब असरकारी हुई, इसमें दो राय नहीं हो सकती। बाद में बच्चों की गर्मियों की छुट्टी का होमवर्क भी एक निश्चित समय सारिणी के साथ ऑनलाइन ही वितरित हुआ और बच्चों ने रुचि के साथ किया भी।

इससे यह भी स्थापित हुआ कि तकनीक को नये सन्दर्भों से जोड़कर किस तरह आकस्मिक समस्याओं से निपटा जा सकता है। पारम्परिक टीचर के लिए यह ऑनलाइन वाली शिक्षा एक नया अनुभव था, जो उसकी पूर्व शिक्षण कला में नवीन कल्पना और कौशल का रंग भरके उसके कार्य को सरस और सृजनात्मक बना गई। प्रतिदिन जिस उत्साह और उत्सुकता से बच्चे पाठ्य सामग्री की प्रतीक्षा करते थे, उसमें भविष्य की शिक्षा को रोचक, गुणवत्तापूर्ण और सरस बनाने के गहरे संकेत भी छिपे हैं। सम्भव है, भविष्य में शिक्षा के नीति-नियन्ता इससे सबक लें।

वैसे शैक्षिक विषयों के प्रवक्ता ऑनलाइन शिक्षा को आदर्श नहीं मानते, क्योंकि इसमें शिक्षणेतर और पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों का बहुत कुछ अभाव होता है। जबकि शिक्षा में इनका बड़ा महत्त्व है। इनसे जुड़कर बच्चा शारीरिक और मानसिक स्तर पर परिपक्व बनता है। अपना सर्वांगीण विकास करता है। सामाजिक न्याय, समता और लैंगिक मसलों से जुड़े मूल्यबोध के विकास की राह इन्हीं गतिविधियों के बीच खुलती है।

शिक्षा के आचार्यों का मत है, निजीकरण के फलस्वरूप शिक्षा बाजारू होकर पहले ही सामाजिक सरोकारों से कट चुकी है। इसलिए शिक्षा से हम जिस लोकतांत्रिक धर्मनिरपेक्ष और विज्ञानसम्मत मूल्यों की अपेक्षा करते हैं उसका कहीं कोई अता-पता नहीं है। रही-सही कसर ऑनलाइन शिक्षा पूरी कर देगी। यह बच्चों को किताबों की जकड़बन्दी से बाहर निकलने का शायद ही मौका दे और शिक्षा अपने सृजनात्मकता के घटक से मुक्त हो जायेगी।

वास्तव में यह शिक्षा का डरावना पक्ष है। इसकी एकदम से आँख मूँदकर अनदेखी नहीं की जा सकती। किन्तु कोरोना संकट से पैदा हुई शैक्षिक परिस्थिति के जटिल आयामों का क्या किया जाए? इसका तो समग्र रूप में आकलन ही मुश्किल है। यह सत्य है कि बच्चों की शिक्षा के लिए विद्यालय अनिवार्य है। एक पंक्ति में यह भी कहा जा सकता है कि ऑनलाइन शिक्षा पारम्परिक पठन-पाठन के मुकाबले में कहीं नहीं ठहरती, किन्तु अभी कोरोना संकट टला नहीं है। देश अनलॉक की प्रक्रिया में जरूर है, लेकिन विद्यालय बन्द हैं। पारम्परिक कक्षा-कक्षीय शिक्षण की तारीख का पता नहीं है, तो बच्चों को शिक्षा से जोड़े रहने के लिए 'ऑनलाइन शिक्षा' के अलावा विकल्प क्या है? ऐसी स्थिति में उसकी खामियों को हाईलाइट करने के बजाय इसे तात्कालिक आवश्यकता मानकर विमर्श का फोकस इसको यान्त्रिकता से मुक्त करके सम्वेद्य बनाने की दिशा में मोड़ा जाना चाहिये। मानव संसाधन विकास मंत्रालय भी इस सन्दर्भ में सचेष्ट है। मंत्रालय की 'प्रज्ञाता' नामक गाइडलाइन शिक्षा के इस प्रारूप के दोषरहित और मानवीय बनाने की पहल के रूप में सामने आ चुकी है।

पोआ-जासापारा, गोसाईंगंज
सुलतानपुर (उप्र)-228119
chitreshsln@gmail.com

'निष्ठा' में समाहित गुरुजनों की प्रतिष्ठा

डॉ. अनिरुद्ध भट्ट

नाग्निस्तृप्यति काष्ठानां, नापगानां महोदधिः।
नान्तकः सर्वभूतानां, न बुधाः ज्ञानकर्मणोः।।(सूक्ति)

-अर्थात् अग्नि लकड़ियों से, समुद्र पानी से, यमराज प्राणियों से और विद्वान् ज्ञान से कभी तृप्त नहीं होते। भाव यह है कि असीमित क्षमताओं को धारण करने वालों की जिज्ञासा भी असीमित होती है। इस श्लोक का अन्तिम चरण शिक्षक के सन्दर्भ में विशेष रूप से द्रष्टव्य है, क्योंकि कई चरणों की परीक्षा और प्रशिक्षण से गुजरने के बाद शिक्षक का पद प्राप्त होता है और उसके बाद अनेक वर्षों तक विद्यार्थियों के बीच रहने का अनुभव भी होता है। 'शिक्षा-प्रशिक्षण-अनुभव' की उफनती नदी को पार करने के बाद फिर एक और प्रशिक्षण क्यों? इस यक्ष-प्रश्न का उत्तर भी शिक्षक रूपी युधिष्ठिर ही दे सकता है। यद्यपि उत्तर बेहद सरल है-'सीखना उम्रभर जारी रहता है।' इसी के सन्दर्भ में मैंने इस संस्कृत-पद्य को उद्धृत किया है।

निश्चित रूप से जीवन में बहुत कुछ पढ़ने-पढ़ाने के बाद भी सीखने की सम्भावना बनी रहती है। इसी सम्भावना को उम्मीदों के पंख लगाती है- 'निष्ठा'। इस निष्ठा का निर्माण अंग्रेज़ी के कई पदों के आद्यक्षरों से हुआ है। (National Initiative for school Heads and Teachers Holistic Advancement) इसका हिन्दी भावार्थ है- स्कूल-प्रमुख और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल। भाषा का शिक्षक होने के नाते मैं इस सुन्दर परिष्कृत शब्द को अलंकारशास्त्र की दृष्टि से देखना हूँ, जिसमें श्लेष अलंकार की प्रतीति होती है। प्राचीन 'निष्ठा' श्रद्धा-विश्वास-निश्चय से सम्बद्ध है तो आधुनिक 'निष्ठा' का सम्बन्ध शिक्षक-प्रशिक्षण से है।

इन्सान हो या मशीनरी, उसे समय-समय पर परिवर्धित-परिमार्जित करने की आवश्यकता रहती है। अगर उसे बीच-बीच में परीक्षण के दौर से न गुजारा जाए तो उसकी कार्यप्रणाली के निष्प्रभावी होने की सम्भावना बनी रहती है। इसी परीक्षण की व्यवस्था का परिष्कृत रूप प्रशिक्षण है।

शिक्षकों को सेवाकालीन प्रशिक्षण देने की परम्परा काफी पहले से चली आ रही है। 'निष्ठा' इसी परम्परा की नवीनतम कड़ी है। अपना व्यक्तिगत अनुभव बयाँ करूँ तो जब गतवर्ष पहली बार 'निष्ठा' के अन्तर्गत प्रशिक्षण लेने का विभागीय निर्देश मिला तो दिल ने त्वरित टिप्पणी दी- 'लगभग 30 वर्षों तक अध्यापन करने के बाद भी क्या मुझे प्रशिक्षण की आवश्यकता है?' जब प्रशिक्षण आरम्भ हुआ तो उत्तर दिमाग ने दिया और अति आत्मविश्वास से उपजी अज्ञानता का आभास हुआ, क्योंकि सूचना प्रौद्योगिकी के बेहतरीन उपयोग के साथ नवाचार पद्धति से समन्वय स्थापित करके निष्ठा के प्रशिक्षण-कार्यक्रम का संयोजन किया गया था।

इस वर्ष जब वैश्विक आपदा कोरोना ने मानव को कठिन चुनौती दी तो हमारे शिक्षाविदों ने इस चुनौती को स्वीकार करते हुए 'आपदा में अवसर' ढूँढ़ निकाला और 'निष्ठा' का ऑनलाइन संस्करण प्रस्तुत कर दिया। राष्ट्रीय स्तर के अनुभवी शिक्षकों के श्रमसाध्य सृजन से यह प्रशिक्षण-परियोजना प्रशिक्षु अध्यापकों के साथ-साथ जन-गण-मन तक पहुँच गई। भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान जैसे विषयों को सुनना, समझना, बोलना, लिखना,पढ़ना इस प्रशिक्षण-विधा ने सुगम कर दिया।

विद्वानों के गहन चिन्तन-मनन और चर्चा-परिचर्चा से प्रस्फुरित विस्तृत विचारों को कुछ घंटों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में समाहित करना सरल कार्य नहीं है। वस्तुतः यह नदी के जल को तालाब में समाहित करने जैसा दुरूह कार्य है। जब हम शिक्षक घर या विद्यालय में बैठे-बैठे दृश्य-श्रव्य सन्देशों, चलचित्रों, विश्लेषणों से सम्पृक्त मॉड्यूल्स के माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं तो इनके रचनाकारों के भगीरथ-प्रयत्न को भी अवश्य हृदयंगम करें।

इसी सन्दर्भ में अनाधिकार चेष्टा करते हुए प्रशिक्षण मॉड्यूल्स के माननीय संयोजकों से सादर निवेदन है कि वीडियोज के माध्यम से विषयगत प्रस्तुति देने वाले वक्ताओं की अभिव्यक्ति में (यदा-कदा) संवाद। वार्तालाप की बजाय एकालाप अथवा स्वतन्त्र वाचन की स्थिति बनने से बचा जा सकता है। साथ ही हिन्दी भाषा के उच्चारण-पक्ष को भी गम्भीरता से लिया जाए तो 'निष्ठा' की प्रतिष्ठा द्विगुणित होने में कोई संशय नहीं है। उम्मीद है कि इसे दोषदृष्टि के बजाय स्वस्थ विमर्श के रूप में स्वीकार किया जाएगा।

अन्त में शिक्षकों को प्रशिक्षित करने वाले सुशिक्षित शिक्षाविदों के लिए कवि की पंक्तियाँ सादर समर्पित हैं-

सुन्दर सुर सजाने को साज बनाता हूँ,
नौसिखिए परिन्दों को बाज बनाता हूँ।
चुपचाप सुनता हूँ शिकायतें सबकी,
तब दुनिया बदलने की आवाज़ बनाता हूँ।।

संस्कृत अध्यापक,
सार्थक रासआवमा विद्यालय, सैक्टर-12ए,
पंचकूला।

भूपसिंह भारती

भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले

भारत की पहली महिला शिक्षिका, समाज सुधारिका और मराठी कवयित्री सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 में महाराष्ट्र के सतारा जिले के नायगाँव नामक स्थान पर हुआ। उनके पिता का नाम खंडोजी नेवसे और माता का नाम लक्ष्मी बाई था। सन 1840 में 9 वर्ष की आयु में ही इनका विवाह बारह वर्ष के ज्योतिराव के साथ हुआ। विवाह के समय सावित्री बाई फुले अनपढ़ थीं। उस समय महिलाओं की दशा बड़ी दयनीय थी। महिलाओं को पढ़ने-लिखने का कोई अधिकार नहीं था।

हमारे समाज में दो सदी पहले महिलाओं की दशा किसी गुलाम से भी बदतर थी। उसे पुरुष अपने पैरों की जूती समझता था। लड़कियों की शादी बचपन में ही कर दी जाती थी, शिक्षा तो उनके लिए एक सपना थी। पति की मृत्यु पर उसकी पत्नी को चिता के साथ ही जला दिया जाता था और सती कहकर उस का यशोगान किया जाता था। महिलाओं के लिए शिक्षा एक सपने के समान थी, उस समय यह कहा जाता था कि यदि लड़की पढ़ लिख लेगी तो उसका पति मर जाएगा और उसे विधवा का जीवन जीना पड़ेगा।

वर्ण व्यवस्था ने न केवल महिलाओं का ही शोषण किया, बल्कि समाज को वर्णों में बाँटकर जातिवाद का विशाल वटवृक्ष बो दिया था। समाज के इस टूटन का फायदा विदेशियों ने बार-बार उठाया और यहाँ आक्रमण करके देश को बार-बार लूटा और उसे गुलाम बनाया क्योंकि वर्ण व्यवस्था ने समाज की रक्षा का भार केवल क्षत्रियों को दिया हुआ था, शूद्रों की संख्या अधिक होने के बावजूद भी वे समाज की रक्षा हेतु तलवार नहीं उठा सकते थे, वर्ण व्यवस्था के कारण वो सेना में भर्ती नहीं हो सकते थे। लेकिन अंग्रेजों ने पेशवाओं को अपने अधीन करने के लिए महाराष्ट्र के अछूत महारों की ताकत पर भरोसा किया और उनके शक्तिशाली 500 महार जवानों को 28000 मजबूत पेशवाई सेना के विरुद्ध ये कहकर उतार दिया कि इन पेशवाओं ने तुम्हें गुलामों से भी बदतर जीवन जीने पर मजबूर किया है, अगर तुम्हें उनसे बदला लेना है तो दिखाओ अपना शौर्य और खत्म कर दो अपनी सदियों की गुलामी। ये सुनकर एक जनवरी 1818 को मजबूत महार अपनी ताकत को आजमाने का अवसर पाकर 28000 सैनिकों से सजी पेशवाई सेना पर अद्भुत शौर्य के साथ टूट पड़े और विजयी हुए। तब अंग्रेजों ने अछूतों के शौर्य को चिरस्थायी बनाने के लिये कोरेगाँव में विजय स्तम्भ की स्थापना की ओर अपनी सेना को और मजबूत बनाने के लिये उन्होंने इन्हें शिक्षित करने के लिये जगह-जगह स्कूल खोले।

इस प्रकार शिक्षा के हक का अवसर पाकर ज्योतिराव खुद पढ़ पाए और घरवालों के घोर विरोध के बावजूद उन्होंने अपनी पत्नी सावित्री बाई फुले को पढ़ाया और सन् 1848 में ज्योतिबा फुले ने अंग्रेजों की सहायता से भारत में पहला महिला विद्यालय खोलकर सावित्री बाई फुले को देश की पहली महिला शिक्षिका बनाया।

सावित्रीबाई फुले जब अपने विद्यालय में लड़कियों को पढ़ाने के लिए घर से जाती थी तो लोगों ने उन्हें गालियाँ दीं, उनके ऊपर गोबर फेंका, गंदगी फेंकी, कीचड़ फेंका, यहाँ तक कि उन्हें पत्थर तक मारते थे, लेकिन सावित्रीबाई फुले इन सब से विचलित नहीं हुई और समाज के इन ठेकेदारों के गंदे आचरण को खुशी खुशी सहन करते हुए उसने समाज में स्त्रियों को शिक्षा दी और समाज उत्थान का अपना कार्य जारी रखा। वह अपने साथ हमेशा दूसरी साड़ी रखती थी ताकि अपने विद्यालय में जाकर उसे बदल ले। अपने कार्य में आई बाधाओं से डरकर उन्होंने अपना रास्ता नहीं बदला बल्कि समाज उत्थान का कार्य और दुगुने उत्साह के साथ करती रहीं।

सावित्री बाई फुले ने समाज की विधवाओं की शोचनीय दशा को दूर करने के लिए भी कार्य किया। उन्होंने पुनर्विवाह द्वारा विधवाओं के नीरस और बेरंग जीवन में आनन्द और रंगों से भरने की शुरुआत की और विधवाओं की देख रेख और सुरक्षा के लिए 1854 में विधवाओं के लिए आश्रम भी बनवाया। उन्होंने नवजात शिशुओं के लिए भी आश्रम खोला ताकि कन्या शिशु वध को रोका जा सके। सती प्रथा को रोकने के लिए उन्होंने बहुत प्रयास किए। सावित्रीबाई फुले ने एक विधवा के नवजात पुत्र को दत्तक पुत्र के रूप में गोद लिया। सावित्री बाई फुले एक शिक्षिका, समाज सुधारक ही नहीं, बल्कि एक उच्च कोटि की कवयित्री भी थीं। वह सदा कहती थीं कि बच्चो! विद्यालय आओ और पढ़ो। सुनहरे दिन का उदय हुआ है।

महिला शिक्षा के उत्थान के अभूतपूर्व योगदान के लिए सावित्रीबाई फुले को सदैव याद किया जाता रहेगा।

आदर्श नगर,
नारनौल, हरियाणा

‘चॉक व चुनौतियों को मिलाकर विद्यार्थियों का जीवन बदलता शिक्षक’

सात करोड़ का ‘ग्लोबल टीचर पुरस्कार’ पाकर सुर्खियों में आए प्राथमिक शिक्षक रणजीत डिसले के नवाचार

अरुण कुमार कैहरबा

भारत के एक प्राथमिक शिक्षक की उल्लेखनीय उपलब्धियों की चर्चा आजकल अन्तरराष्ट्रीय पटल पर हो रही है। महाराष्ट्र के सोलापुर जिला के पारितवाडी गाँव के जिला परिषद प्राथमिक स्कूल के 31 वर्षीय शिक्षक रणजीत सिंह डिसले ने शिक्षा के नॉबेल पुरस्कार के रूप में प्रसिद्ध ग्लोबल टीचर पुरस्कार-2020 प्राप्त किया है। पुरस्कार के रूप में उन्हें सात करोड़ रुपये का राशि मिली है। पुरस्कार के साथ-साथ वे इसलिए भी चर्चाओं में हैं कि इतनी बड़ी राशि का आधा हिस्सा उन्होंने अपने साथ शामिल हुए नौ अन्य उपविजेताओं में बाँटने का फैसला किया है। प्रतियोगिता में दुनिया के 140 देशों के 12 हजार से अधिक अध्यापकों ने हिस्सा लिया था। वर्की फाउंडेशन व यूनेस्को द्वारा दिए जाने वाले पुरस्कार की घोषणा लंदन में प्रसिद्ध अभिनेता स्टीफन फ्राई द्वारा की गई तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं था। यह सम्मान प्राप्त करने वाले वे पहले भारतीय हैं।

अवार्ड से अधिक रणजीत डिसले के कार्य हैं, जोकि शिक्षा जगत को गौरवान्वित होने का अवसर देते हैं। उन्हें यह नामचीन अवार्ड लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए दिया गया है। पितृसत्तात्मक समाज में लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने का कार्य इतना सरल नहीं होता है, जितना इसे कहा जाता है। ऐसा ही उस गाँव में भी था, जिसमें डिसले को शिक्षण कार्य का जिम्मा मिला था। वहाँ पर लड़कियों की कम उम्र में शादी कर दी जाती थी। बाल विवाह के कारण लड़कियों पर परिवार की जिम्मेदारियों का बोझ आन पड़ता था और पढ़ाई छूट जाती थी। नन्ही उम्र में ही शादी कर दिए जाने के कारण स्कूल में आने वाली लड़कियों की भी पढ़ाई में रुचि नहीं बन पाती थी। रणजीत सिंह डिसले ने समाज की सोच और बाल विवाह की कुरीति पर समाज में व्यापक अलख जगाई। लोगों को कुरीति के दुष्प्रभावों के बारे में समझाया। यह कार्य भी इतना आसान नहीं रहा होगा। कोई समाज जिन मूल्य-मान्यताओं में वर्षों से यकीन करता है, उन्हें आसानी से छोड़ता नहीं है। यदि उसके विपरीत कोई बोलता है तो उसके बारे में भी नकारात्मक धारणाएँ बना लेता है। डिसले बताते हैं कि 11 साल बाद अपने काम को देखता हूँ तो संतोष होता है। बाल विवाह पूरी तरह से खत्म हो गए हैं। लड़कियों की स्कूल में शत-प्रतिशत उपस्थिति रहती है। हालांकि उपस्थिति ही शिक्षा नहीं होती। लड़कियाँ अपने समाज में सुरक्षित महसूस करने लगी हैं। उनमें हौसला और आत्मविश्वास आया है। शिक्षा सभी सामुदायिक व सामाजिक समस्याओं का हल है। चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में असर ही शिक्षा की कसौटी भी है।

शिक्षा के कार्य को सरल बनाने के लिए डिसले ने तकनीक का सहारा लिया। उन्हें क्विक रिस्पोंस कोड पर आधारित किताबों की क्रांति लाने का श्रेय दिया जाता है। उनके द्वारा इजाद की गई तकनीक को एनसीईआरटी ने भी स्वीकार किया। इस तकनीक के तहत उन्होंने विद्यार्थियों के लिए उपयोगी किताबों के हर अध्याय के अंत में क्यूआर कोड प्रकाशित किया। किताब की पाठ्य सामग्री पर उन्होंने दृश्य-श्रव्य सामग्री तैयार की। जिससे विद्यार्थियों का स्कैनिंग के जरिये डिजिटल सामग्री तक पहुँचना सरल हो गया। बच्चों को कम्प्यूटर-लैपटॉप आदि की मदद से पढ़ाया जाने लगा। शिक्षा को मनोरंजन और मनोरंजन को शिक्षा में बदलना डिसले के शिक्षण की खूबी है। वे खुद के द्वारा दी जाने वाली शिक्षा को एजुटेनमैंट कहते हैं। बच्चा पढ़ाई का मजा लेता है। वह उसके लिए बोझ नहीं रहती है। डिजीटल सामग्री की मदद से बच्चे दूसरों से स्पर्धा करने की बजाय अपनी गति से सीखते हैं।

मजेदार शिक्षा का असर यह हुआ कि स्कूल से बाहर रहने वाले विद्यार्थी स्कूल में खिंचे चले आने लगे। स्कूल

में बच्चों की संख्या बढ़ी। विद्यार्थियों का सीखना समझ से जुड़ा। जब डिसले ने 2009 में स्कूल में कार्य करना शुरू किया था, तब स्कूल की दशा बेहद खराब थी। स्कूल भवन टूटा था। स्कूल के एक तरफ पशु बाँधे जाते थे, दूसरी तरफ गोदाम था। उन्होंने स्कूल की दशा बदलने के लिए अथक मेहतन की।

डिसले के प्रयासों का असर यह हुआ कि 2016 में उनके स्कूल को जिले के सर्वश्रेष्ठ स्कूल का दर्जा मिला। उनकी इस कामयाबी का जिक्र माइक्रोसॉफ्ट के सीईओ सत्य नडेला ने अपनी पुस्तक 'हिट रिफ्रेश' में भी किया। 2016 में ही केन्द्र सरकार ने उन्हें 'इनोवेटिव रिसर्चर ऑफ द इयर' पुरस्कार से सम्मानित किया। 2018 में नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन द्वारा उन्हें 'इनोवेटर ऑफ दा ईयर' का पुरस्कार दिया।

डिसले 83 देशों में ऑनलाइन विज्ञान पढ़ाते हैं। वे एक अन्तरराष्ट्रीय परियोजना चलाते हैं, जिसमें युद्ध सहित अनेक संघर्षशील क्षेत्रों के विद्यार्थी शांति की शिक्षा ग्रहण करते हैं। रणजीत सिंह डिसले के स्कूल के विद्यार्थी अन्य देशों के विद्यार्थियों के साथ अंग्रेजी में बेझिझक बातचीत करते हैं। इसके लिए उन्होंने मातृभाषा के महत्त्व को समझा और विद्यार्थियों को मातृभाषा के माध्यम से पढ़ाया। उन्होंने किताबों का अनुवाद बच्चों की मातृभाषा में किया। फिर उन पर डिजीटल सामग्री तैयार की। मातृभाषा का मजबूत आधार मिलने के बाद अंग्रेजी भाषा सीखना भी आसान हो गया।

हमारे समाज में सरकारी स्कूलों को नकारात्मक ढंग से लिया जाता है। जबकि सरकारी स्कूल किसी से कम नहीं हैं। सरकारी स्कूलों के अध्यापक अपने स्कूलों को चमकाने और विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए कई दिशाओं में मेहनत कर रहे हैं। डिसले की उपलब्धि इसका उदाहरण है। उन्होंने स्कूल को मनोरंजन का स्थान बना दिया। एक कक्षा से दूसरी कक्षा में जाते हुए विद्यार्थी आनंदित महसूस करते हैं। लैपटॉप, कम्प्यूटर, टीवी, फिल्में, गानें, कहानियाँ, कविताएँ, खेल खेलते हुए बच्चों को बोझ का कोई अहसास ही नहीं होता। शिक्षा को आनंद से जोड़ना ही आज की सबसे बड़ी ज़रूरत है। यदि शिक्षा बोझ बन जाएगी तो शिक्षा ही निरर्थक हो जाएगी।

यह भी हैरानी पैदा करने वाला है कि शिक्षण डिसले की पहली पसंद नहीं थी। वे इंजीनियर बनना चाहते थे। उन्होंने इंजीनियरिंग की पढ़ाई शुरू की, लेकिन पूरा नहीं कर पाए। पिता जी की सलाह पर उन्होंने शिक्षण महाविद्यालय में दाखिला लिया। जिस शिक्षण महाविद्यालय में डिसले ने दाखिला लिया, उस महाविद्यालय के अध्यापक प्रशिक्षकों ने उसे पूरी तरह बदल दिया। वहाँ पर उन्होंने महसूस किया कि किस तरह अध्यापक परिवर्तनकर्ता है। वहाँ के अध्यापकों ने उनमें शिक्षण का जुनून भरा, उसी ऊर्जा का परिणाम है कि वे अपने स्कूल में बदलाव के लिए जुट गए।

वे चाहते हैं कि हर दिन उनके बच्चे उन्हें हँसते-खेलते दिखें। जब भी वे कक्षा में जाते हैं तो उनसे ऊर्जा ग्रहण करते हैं। बच्चों की खुशी उन्हें नया-नया करने के लिए प्रेरित करती है। डिसले ने कहा, 'टीचर बदलाव लाने वाले लोगों में से होते हैं, जो चॉक और चुनौतियों को मिलाकर अपने स्टूडेंट की ज़िंदगी बदलते हैं, इसलिए मैं यह कहते हुए खुश हूँ कि मैं अवार्ड की राशि का आधा हिस्सा अपने साथी प्रतिभागियों को दूँगा। मेरा मानना है कि साथ मिलकर हम दुनिया बदल सकते हैं क्योंकि साझा करने वाली चीज ही बढ़ती है।.. शिक्षक इन्कम के लिए काम नहीं करता आउटकम के लिए काम करता है।' उन्होंने बताया कि पुरस्कार राशि के एक हिस्से से वे टीचर इनोवेशन फंड विकसित करेंगे ताकि अध्यापकों के कक्षा में नवाचारों को महत्त्व व मदद दी जा सके।

हिन्दी प्राध्यापक, स्तंभकार व लेखक
वार्ड नं.-4,रामलीला मैदान, इन्द्री
जिला-करनाल, हरियाणा

प्रश्न बैंक

प्यारे बच्चो, हम आपसे कुछ प्रश्न पूछेंगे तथा आपने इन प्रश्नों के उत्तर देने हैं और बाद में नीचे दिए गये उत्तरों से मिलान करके अपना मूल्यांकन स्वयं करना है।

प्र.1. विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश का नाम बताओ।
क. भारत ख.चीन ग. अमेरिका घ. पाकिस्तान

प्र.2. भारत में चुनाव आयोग की स्थापना किस वर्ष हुई?
क. 25 जनवरी 1950 ख. 15 अगस्त 1950
ग. 26 जनवरी 1950 घ. 1 जनवरी 1950

प्र.3. मुख्य चुनाव आयुक्त का कार्यकाल कितने वर्ष का है?
क. 4 वर्ष ख. 5 वर्ष ग. 7 वर्ष घ. 6 वर्ष

प्र.4. भारत में प्रतिवर्ष राष्ट्रीय मतदाता-दिवस कब मनाया जाता है?
क. 22 जनवरी ख. 23 जनवरी
ग. 25 जनवरी घ. 31 जनवरी

प्र.5. कम से कम कितनी आयु का नागरिक अपना मत बनवा सकता है?
क. 18 वर्ष की आयु पूरी होने पर
ख. 19 वर्ष की आयु पूरी होने पर
ग. 20 वर्ष की आयु पूरी होने पर
घ. 21 वर्ष की आयु पूरी होने पर

प्र.6. भारत में प्रथम लोकसभा का आम चुनाव किस वर्ष हुआ?
क. 1957 ख. 1951-52 ग. 1962 घ. 1977

प्र.7. धारा 370 किस से राज्य से समाप्त की गयी थी?
क. जम्मू-कश्मीर ख. तेलंगाना
ग. पं.बंगाल घ. नागालैण्ड

प्र.8. भारत देश में कितने केन्द्र शासित प्रदेश हैं?
क. 8 ख. 9 ग. 10 घ. 11

प्र.9. स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री कौन थे?
क. पं.जवाहर लाल नेहरू ख. इन्दिरा गांधी
ग. गुलजारीलाल नंदा घ. मोरारजी देसाई

प्र.10. मतदान करने के लिए जाते समय हमारे पास पहचान के लिए क्या होना चाहिए?
क. मतदाता पहचान पत्र ख. ड्राइविंग लाइसेंस
ग. बैंक की पास बुक घ. उपरोक्त में से कोई भी एक

उत्तर : 1.क 2.क 3.घ 4.ग 5.क 6.ख 7.क 8.क 9.क 10.घ

- हर्ष कुमार 'गुरु जी'
प्रवक्ता समाज शास्त्र
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बीकानेर, रेवाड़ी

प्रकृति के कुशल चितेरे हैं कला शिक्षक- भीम सिंह

डॉ.ओमप्रकाश कादयान

पंचकूला के सैक्टर-12ए के राजकीय समेकित आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में फाइन आर्ट प्राध्यापक के रूप में कार्य कर रहे भीम सिंह एक ऊर्जावान शिक्षक, कुशल चित्रकार तथा रंगोली के एक्सपर्ट हैं। जहाँ इनका बोर्ड परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत आता है वहीं अन्य कक्षाओं का भी परीक्षा परिणाम सौ-प्रतिशत ही रहता है। इनके विद्यार्थी विभिन्न प्रतियोगिताओं में अक्सर पुरस्कार जीत कर लाते हैं। जिला व राष्ट्रीय स्तर पर भी। जहाँ ये विद्यालय विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं वहीं विद्यालय सौन्दर्यीकरण में समर्पित भावना से लगे हुए हैं। अभी पिछले दिनों इन्होंने दिन-रात एक करके विद्यालय की सभी दीवारें, बरामदे, आर्ट रूम को शिक्षाप्रद चित्रों से सजाये है। महिला सशक्तीकरण, योग का महत्त्व, पर्यावरण संरक्षण, जल बचाओ, नशा मुक्ति, स्वच्छता, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, खेल चक्र, जैविक खाद निर्माण व उपयोगिता, अक्षय ऊर्जा, धरती बचाओ, पेड़ लगाओ, खेलों का महत्त्व, जल चक्र आदि विषयों पर पेंटिंग बनाकर बड़ा काम किया है। इनके बनाए शिक्षाप्रद म्यूरल, विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करने, प्रकृति व संस्कृति से जोड़ने का काम कर रहे हैं। बरामदों में रंगोली स्कूल की शोभा बढ़ा रही हैं तो मुख्य द्वार विद्यालय का आकर्षण है जिसकी सज्जा भीम सिंह ने की है। दीवारों पर इन द्वारा बनाए महापुरूषों के बड़े-बड़े चित्र प्रेरणा का कार्य कर रहे हैं। इनके सहयोग से बने विद्यालय के हर्बल पार्क का उद्घाटन मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर ने किया था। एनसीईआरटी के प्रशिक्षण कैम्प हों, स्काउट्स कैम्प हों या एडवेंचर कैम्पों में बच्चों को पेंटिंग सिखाने का कार्य हो, ये आगे रहते हैं। हैदराबाद, पंचमढ़ी तक हरियाणवी संस्कृति की छटा बिखेर कर आए हैं।

ये अपनी जमीन से जुड़े कलाकार हैं। यही कारण है कि इनके चित्रों में हमें ग्राम्य परिवेश की झलक दिखाई देती है। इनके चित्रों में जिस तरह ग्रामीण संस्कृति व सुंदरता उभर कर आती है वह किसी संवेदनशील मन वाले चित्रकार के ब्रश से ही सम्भव है। समय के साथ मानवीय रिश्तों में जो परिवर्तन आ रहे हैं, उन्हें अपनी कला के माध्यम से वह अभिव्यक्त करते रहे हैं।

भीम सिंह अपनी माटी से जुड़े संस्कृति प्रेमी कलाकार हैं। इसके साथ-साथ, प्रकृति से इन्हें बेहद लगाव है, इसलिए ही इनके चित्रों में प्राकृतिक सौन्दर्य भी देखने को मिलता है। जब प्रकृति पर इनका ब्रुश चलता है तो कैनवास पर प्रकृति का एक दिव्य, लौकिक व अन्तःकरण को छूने वाला दृश्य उभर कर आता है। वरिष्ठ आईएएस डॉ. महावीर सिंह का मानना है कि शिक्षक व कलाकार भीम सिंह अपनी जड़ों से जुड़े हुए कलाकार हैं जो रंगों के माध्यम से कैनवास पर राज्य की संस्कृति को जीवन्त करने में जुटे हैं।

भीम सिंह प्राकृतिक दृश्यों, जन-जीवन, खेत क्यार, खलिहान के अलावा पोर्ट्रेट बनाने में माहिर हैं। कला क्षेत्र में बेहतर कार्य करने के लिये इनको अनेक संस्थाओं ने समय-समय पर सम्मानित किया है तथा इन्हें शिक्षा क्षेत्र में बेहतर कार्य करने के लिए राज्य शिक्षक पुरस्कार भी मिल चुका है। अनेक कला शिविरों में भाग लेकर व अनेक प्रदर्शनियाँ लगा कर ये वाह-वाही लूट चुके हैं। पिछले

दिनों पंचकूला में इनके द्वारा लगाई गई पेंटिंग प्रदर्शनी अधिकारियों, कला प्रेमियों द्वारा खूब सराही गई। भीम सिंह पेंटिंग के लिए तैलरंग, जलरंग और आवश्यकता पड़ने पर पेस्टल कलर का उपयोग कर लेते हैं। चित्र के हिसाब से ये रंग व माध्यम का चुनाव करते हैं। तैल रंगों का उपयोग अधिक करते हैं।

भीम सिंह डेकोरेशन व रंगोली बनाने में भी माहिर हैं, पंचकूला या आसपास जो भी बड़े सरकारी कार्यक्रम होते हैं उनमें रंगोली व सजावट का कार्य अधिकतर भीम सिंह को ही सौंपा जाता है। इनके द्वारा बनाई गई रंगोली व अन्य कलात्मक कार्यों की मुख्यमन्त्री तथा अनेक प्रशासनिक अधिकारी प्रशंसा कर चुके हैं। इन्होंने सूरजकुण्ड मेला व गवर्नर हाउस से लेकर महत्त्वपूर्ण स्थानों पर रंगोली बनाई है।

खानपुर कला सोनीपत में 1969 में जन्मे कलाकार भीम सिंह 2004 से पंचकूला में लगातार 15 अगस्त व 26 जनवरी के समारोह, गवर्नर हाउस, सीएम हाउस, सांस्कृतिक बड़े मेलों, त्यौहारों पर्वों पर रंगोली बनाते आ रहे हैं। स्कूल की प्राचार्या कमलेश चौहान ने बताया कि भीम सिंह जैसे कर्मठ, समर्पित, मेहनती व ईमानदार शिक्षक बहुत ही कम होते हैं। ये छुट्टी वाले दिन भी अपना समय देकर विद्यालय विकास में योगदान देते हैं। इनकी कला व मार्गदर्शन का ही परिणाम है कि इनके स्टूडेंट्स कला प्रतियोगिताओं में बड़े-बड़े अवार्ड जीत कर लाते हैं। केरल, पंचमढ़ी, मनाली से भी कई इनाम जीते हैं। भीम सिंह ने आर्ट एण्ड क्राफ्ट कोर्स रोहतक कला स्कूल से, बीए फाइन आर्ट व बीएड मदवि रोहतक से तथा जेयू ग्वालियर से एमए फाइन आर्ट में की।

कलाकार भीम सिंह का लक्ष्य कला क्षेत्र में बेहतरीन कार्य करके हरियाणवी संस्कृति को दूर-दूर तक फैलाने व आम आदमी की कला के प्रति रुचि उत्पन्न करने का है, जिसके लिए ये दिन-रात लगे हुए हैं। भीम सिंह कहते हैं कि कोई भी कलाकार अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए कला से नहीं जुड़ता है। उसकी दृढ़ इच्छा शक्ति, लगन व मेहनत उसकी कला को उभारती रहती हैं। एक कलाकार अपना सब कुछ त्यागने के बाद अपने क्षेत्र में महारत हासिल करता है।

कला अध्यापक,
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
एमपी रोही, फतेहाबाद

जीती-जागती लगती हैं छात्र अभिषेक की बनाई मूर्तियाँ

क्योडक (कैथल) के राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की कक्षा नौंवी का छात्र अभिषेक गजब का मूर्तिशिल्पकार है। वैसे तो यह पेंटिग, रंगोली, टैटू बनाने, पियानो बजाने आदि में माहिर है, किन्तु मिट्टी की मूर्तियाँ बनाने में अभिषेक अधिक दक्ष है। जब यह मिट्टी का लौंदा लेकर अपनी कलाकार उँगलियों से उसे स्पर्श कर कोई आकार देता है तो उम्र के हिसाब से एक करिश्माई मूर्ति बन कर तैयार होती है। जिसकी तारीफ हर देखने वाला करता है। बेजान-सी पड़ी मिट्टी इसके हाथों के स्पर्श से सजीव होकर जैसे बोलने लगती है। मूर्ति का प्रत्येक अंग, बनावट, व अनुपात बिल्कुल सही व आकर्षक लगता है। इस बाल कलाकार द्वारा मिट्टी की बनाई मूर्तियाँ देखकर लगता है किसी मँजे हुए बड़े कलाकार ने ये मूर्तियाँ बनाई हैं। खास बात यह है कि इसके विषय भी सन्देशात्मक होते हैं। यही कारण है कि इसने अनेक प्रतियोगिताएँ जीती हैं।

अभिषेक के मार्गदर्शक कला शिक्षक जगबीर सिंह नांदल ने बताया कि इसके द्वारा बनाया गया क्ले मॉडल गत दिनों आयोजित राज्य स्तरीय कला उत्सव में दृश्य कला में दूसरे स्थान पर आया है। मास्क लगाए हुए आदमी की मूर्ति जिला स्तर पर प्रथम आई है। 2019 में प्रतिभा खोज में इसकी दृश्य कला राज्य स्तर पर दूसरे स्थान पर आई तो 2018 में प्रथम स्थान प्राप्त किया। 2018 में सांझी प्रतियोगिता में राज्य स्तर पर दूसरा स्थान हासिल किया। 2017 में राज्य स्तर पर इन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त किया था।

पिछले चार वर्षों से गीता उत्सव में यह कलाकार लाइव कलाकृतियाँ बनाकर दिखाता है। इसके साथ-साथ इस ने अन्य प्रतियोगिताओं में भी इनाम जीते हैं। क्योंकि यह कलाकार ग्रामीणाचंल से है इसलिए इसकी कला में भी गाँव की संस्कृति, खेत-क्यार व प्रकृति के दर्शन होते हैं, किन्तु वर्तमान ज्वलन्त मुद्दों पर भी इसका ध्यान बराबर बना रहता है जो एक अच्छे व सजग कलाकार के लक्षण होते हैं।

अभिषेक ने बताया कि हमारे कला शिक्षक जगबीर सिंह नांदल ने मेरा पूरा सहयोग व मार्गदर्शन किया है। कई बार घर वाले प्रतियोगिताओं में जाने से मना कर देते हैं तो सर ही घर वालों को फोन करके मनाते हैं। पिता जयभगवान दूध बेचने का काम करता है, माँ घर का। घर वाले कहते हैं केवल पढ़ाई पर ध्यान दे। मेरी कला में रुचि है तो सर मदद करते हैं। मेरी कला को निखारने के लिए कलाकार नरेश का मार्गदर्शन भी मिलता रहता है। वो कला की बारीकियाँ बताते हैं। अभिषेक का लक्ष्य पढ़ाई के साथ एक अच्छा कलाकार बनना भी है। इसके लिए वह मेहनत भी करता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह विद्यार्थी भविष्य में एक अच्छा कलाकार बनेगा।

डॉ.ओमप्रकाश कादयान

जन सहयोग से विद्यालय का कायाकल्प

सुरेश राणा

कौन कहता है आसमाँ में सुराख नहीं हो सकता, एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो। सचमुच, तबीयत से उछाले गए हर पत्थर ने विस्तृत आसमान को छेदकर अपना लक्ष्य पाया है। यह पत्थर है- दृढ़ आत्मविश्वास का, कड़े परिश्रम का और सतत लगन का। यदि कुछ कर गुज़रने का जज्बा है तो कोई भी कार्य कठिन नहीं होता, बस आवश्यकता होती है थोड़ा सा लीक से हटकर चलने की। यदि मनुष्य में हौसला और जनून है तो वह कुछ भी कर सकता है। कैथल जिले में सांख्य दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कपिल मुनि की तपोस्थली, देवभूमि कलायत की राजकीय कन्या प्राथमिक पाठशाला की यात्रा करें, आपको ये बातें सौ फीसदी सच सबित होंगी।

सरकारी स्कूल का नाम सुनते ही हमारे मस्तिष्क में टूटे-फूटे कमरे, मैले कुचैले बच्चे, अव्यवस्था का माहौल एक परंम्परागत स्कूल की तस्वीर उरभती है। लेकिन यह सरकारी विद्यालय थोड़ा हटकर है, जो नामी गिरामी प्राइवेट स्कूलों पर भारी है। विद्यालय का भव्य प्रवेश द्वार, स्मार्ट कक्षा-कक्ष, रंगों व चित्रों से सजा भवन, प्रेरक नारे, उद्धरण, व्यवस्थित ढंग से बनी क्यारियाँ, पुस्तकालय, सभी भौतिक सुविधाओं की उपलब्धता अनायास ही आगंतुकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती है। विद्यालय को देखकर हर कोई दंग रह जाता है कि कोई भी सरकारी स्कूल इतना सुंदर, सुव्यवस्थित भी हो सकता है जिसके सामने प्राइवेट स्कूल भी बौने नजर आते हैं। ऐसा नही हैं कि यह विद्यालय हमेशा से ही आधुनिक सुविधाओं ने सुसज्जित, आकर्षक एवम सुन्दर था, लेकिन ग्रामवासियों के जुनून व जज्बे ने इस विद्यालय की काया पलट दी है।

जर्जर भवन, उखड़ा हुआ कमरों का पलास्ट, ऊबड़ खाबड़ स्कूल प्रांगण, दरमियाना मुख्य द्वार, कूड़े-कचरे के ढेर, मूलभूत सुविधाओं का अभाव यही पहचान तो थी इस विद्यालय की। नगर के युवा जोशीले क्रांतिकारी विचार धारा के पोषक व्यवसायी प्रदीप गुप्ता विद्यालय के जीर्णोद्धार बीड़ा उठाते हैं। उनके नेतृत्व में सरकारी स्कूलों में घटते नामांकन एवं बिगड़ती व्यवस्था को सुधारने के लिए नगरवासी एकजुट होते हैं। बदलते परिवेश, प्राइवेट स्कूलों की लूट, गुणात्मक शिक्षा, सरकारी विद्यालय में भौतिक सुविधाओं पर चिंतन-मंथन करते हैं। सरकारी विद्यालयों की स्थिति में बदलाव लाने हेतु बैठकों का दौर निरंतर चलता है और गठन होता है रामकृष्ण परमहंस ग्राम सेवा समिति कलायत, कैथल (रजि.) का। परिवर्तन समाज का नियम है और कारवाँ निकल पड़ता है राजकीय प्राथमिक पाठशाला कलायत की सूरत एवं सीरत बदलने के लिए। प्रधान प्रदीप गुप्ता, धर्मपाल मास्टर, नरेन्द्र राणा, अजय शर्मा, अमित गर्ग, संदीप, राजेन्द्र राणा, जगत सिंह, नीरज कुमार, राजा यादव, रिंकू शर्मा, ईश्वर शर्मा, सुनील शर्मा, राजेश राणा, कुँवर रविन्द्र सूर्यवंशी आदि समिति के सदस्य जी जान से जुट जाते हैं। देखते ही देखते एक ही वर्ष में पेश की जाती है समुदाय के सहयोग की एक अनूठी मिसाल। प्रदीप

के भव्य एवं आकर्षक मुख्यद्वार का निर्माण करवाया है। विद्यालय मुख्यद्वार की भव्यता देखकर ऐसा लगता है मानो हम किसी बड़े निजी संस्था के मुख्यद्वार को निहार रहे हों। संगमरमर पत्थर से बने आकर्षक मुख्यद्वार पर विद्या की देवी माँ सरस्वती, रानी झांसी लक्ष्मीबाई, शहीद उधम सिंह की प्रतिमाएँ स्थापित की गईं। मुख्य द्वार के साथ ही गेट कीपर रूम बनाया गया है।

विद्यालय के अंदर प्रवेश करते ही शानदार ढंग से सजे हुए स्कूल के कमरे नजर आते हैं। कमरों और दीवारों पर जीवन मूल्यपरक संदेश देशभक्त व महापुरुषों के चित्र समाज सुधारकों के संदेश व उद्धरण, प्रेरक सूक्तियाँ एवं विचार, शिक्षण अधिगम सामग्री प्रचुर मात्रा में उकेरी गई है। दीवारों व छत की मरम्मत करवाने के उपरांत विद्यालय में रंग-रोगन व सफेदी का कार्य समिति ने विद्यालय में करवाया है। स्कूल का भवन आज दूर से ही चमकता नजर आता है। प्रत्येक कक्षा कक्ष व बरामदे में सुंदर चित्रकारी कराई गई है जिससे यह आकर्षण का केन्द्र बन गई है। विद्यालय की दीवारों पर

गुप्ता के नेतृत्व में पाठशाला के जीर्णोद्धार पर खर्च की जाती है लगभग 32 लाख रुपए की राशि। विद्यालय को आधुनिक स्मार्ट स्कूल बनाने के लिए सब मूलभूत सुविधाएँ जुटाई जाती हैं।

समिति के प्रधान प्रदीप गुप्ता से जब इस 'बदलाव की बयार' विषय पर बातचीत की गई तो उन्होंने कहा कि सरकारी स्कूलों में छात्र संख्या लगातार घटती जा रही है। कुछ सरकारी स्कूल बंद हो गए है, कुछ बंद होने के कगार पर हैं। यदि ऐसा हुआ तो आर्थिक रूप से कमजोर परिवार के बच्चे शिक्षा से वंचित रह जाएँगे। वे कहते हैं कि समिति का उद्देश्य है कि ऐसे सरकारी स्कूल तैयार किए जाएँ जिसमें सभी सुविधायें उपलब्ध हों और अमीर-गरीब के बच्चे ऊँच-नीच के बंधन को तोड़ते हुए एक साथ पढ़ें व एक आदर्श समाज की स्थापना हो। शुरुआती तौर पर राजकीय कन्या प्राथमिक पाठशाला कलायत का सुधार समिति द्वारा किया गया है। इस तर्ज पर कलायत नगर के सभी सरकारी स्कूलों के उद्धार के लिए समिति कृतसंकल्प है। प्रदीप गुप्ता कहते हैं कि सरकारी स्कूल हम सब के स्कूल हैं, समुदाय को इनके विकास एवं उत्थान हेतु अपना पूर्ण सहयोग देना चाहिए। शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है। सबको अच्छी एवं गुणात्मक शिक्षा मिलनी चाहिए। सरकारी स्कूल बच्चों का सर्वांगीण विकास करते हैं। हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे केवल किताबी ज्ञान ही न पाएँ, अपितु मानसिक, शारीरिक, नैतिक, सामाजिक रूप से भी विकसित हों। ये नौनिहाल आने वाले भारत का उज्ज्वल भविष्य हैं। अच्छी व गुणात्मक शिक्षा ही एक सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण कर सकती है। जैसे संस्कार समाज व शिक्षक विद्यार्थियों में डालेंगे वैसे ही नागरिक तैयार होंगे। सरकारी शिक्षा बेहतर और सर्वसुलभ है, सरकारी विद्यालयों में सुशिक्षित एवं प्रशिक्षित अध्यापक कार्यरत हैं। बस आवश्यकता है

उनको अभिप्रेरित करने की। वे कहते हैं कि हमें अपने दृष्टिकोण में बदलाव लाना होगा कि ये सरकारी स्कूल हम सबके हैं, सारे समाज के हैं। प्राइवेट स्कूलों की भारी भरकम फीस गरीब आदमी वहन नहीं कर सकता। कुछ लोग अपनी प्रतिष्ठा दिखाने के लिए प्राइवेट स्कूलों के मोहजाल में फँसे हुए हैं। उन्होंने बताया कि अगले सत्र से वे स्वयं अपने बच्चों को सरकारी स्कूल में दाखिल करवाने जा रहे हैं। समिति भी यह अभियान चला रही है कि नगर के सभी अभिभावक अपने बच्चों को कलायत के सरकारी स्कूलों में दाखिल करवाएँ, जिसकी शुरुआत कन्या पाठशाला से हो रही है।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस ग्राम सेवा समिति कलायत ने राजकीय प्राथमिक पाठशाला के जीर्णोद्धार पर लगभग 32 लाख रुपये की राशि खर्च की है। समिति ने लगभग ग्यारह लाख रुपये की लागत से विद्यालय

शिक्षण अधिगम सामग्री बनवाई गई है। जिसका उपयोग पठन-पाठन में किया जाता है। दीवारों पर जो पेंटिंग की गई है उस पर लगभग तीन लाख रुपये की लागत आई है जिसका वहन समिति द्वारा किया गया है। बच्चे खेल खेल में रुचिकर एवं गुणात्मक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

पहले जहाँ यह विद्यालय अपनी बदहाली पर आँसू बहा रहा था, ऊबड़-खाबड़ मैदान था। बारिश के दिनों में बच्चों के लिए प्रार्थना स्थल के लिए कोई जगह नहीं थी। समिति के जुझारू युवाओं ने विद्यालय प्रांगण में मिट्टी-भराव का कार्य करवाया, प्रार्थना स्थल, विभिन्न मार्गों पर ब्लॉक लगवाने के साथ-साथ प्रार्थना व सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन के लिए मंच का निर्माण करवाया व विद्यालय के लिए माइक सिस्टम की व्यवस्था की।

विद्यालय में दो सुंदर पार्कों का भी निर्माण करवाया

गया है। जिसमें लगी हरी-भरी घास सबका मन मोह लेती है। क्यारियों में खिले रंग-बिरंगे फूल, उड़ती तितलियाँ फूलों की भीनी-भीनी सुगंध विद्यालय के वातावरण को मनमोहक बनाती है। विद्यालय में वॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम अपनाकर बारिश के पानी का संरक्षण किया जा रहा है। विद्यार्थियों को भी इस बारे विस्तृत जानकारी दी जा रही है ताकि वे जल संरक्षण के महत्त्व को समझें, उसके प्रति जागरूक हों।

समिति द्वारा विद्यालय के शौचालयों का जीर्णोद्धार करवाया गया है, उनमें टाइल्स लगवाई गई हैं, वॉशबेसिन व पानी की उचित व्यवस्था की गई है। पूरे विद्यालय में बिजली फिटिंग का कार्य करवाया गया है। विद्यालय प्रांगण में छह फोकस लाइट, एलईडी बल्ब व पंखों की व्यवस्था भी की गई है। रसोई घर व स्टोर का मरम्मत का कार्य करवाया गया है। विद्यालय में पीने के पानी की व्यवस्था हेतु दो सबमर्सीबल बोर व पानी की टंकियाँ

लगवाई गई हैं। पुस्तकालय के लिए लोहे की अलमारी व दो लोहे के रैक की व्यवस्था की गई है। कूड़े-कचरे के उचित निपटान एवं व्यवस्था हेतु विद्यालय में कूड़ादान रखवाए गए हैं, जिससे विद्यालय साफ सुथरा एवं स्वच्छ दिखाई देता है। समिति द्वारा विद्यालय में 350 पौधे लगवाए गए हैं एवं 60 फूलदान गमलों की व्यवस्था की गई है। बंदरों के उत्पात से निजात पाने के लिए पानी की टंकियों पर बंदर जाल लगवाने का कार्य भी किया गया है।

विद्यालय मुख्य शिक्षिका किरण बाला का कहना है कि समुदाय सहयोग की यह एक अनूठी मिसाल है। समिति द्वारा विद्यालय में सभी सुविधाएँ उपलब्ध करवाई गई हैं। विद्यालय के शिक्षक समिति के योगदान की सराहना करते हैं। समिति की अथक मेहनत व निरंतर प्रयास के कारण ही विद्यालय की तस्वीर बदली है। पहले जहाँ विद्यालय में अनेक मूलभूत सुविधाओं का अभाव था, लेकिन आज इस विद्यालय में सब प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। सुविधाओं के मामले में यह हाइटेक विद्यालय शहरी स्कूलों को मात दे रहा है। दूसरे ग्रामवासियों को भी इस कार्य से प्रेरणा लेनी चाहिए और सरकारी स्कूलों को हम सबको अपना स्कूल समझना चाहिए। विद्यालय ने भी सरकारी ग्रांट से वॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम व झूले लगवाए हैं। पूरा स्टाफ कर्तव्यनिष्ठता से अपने दायित्व का निर्वहन कर रहा है।

वरिष्ठ समाज सेवी कुँवर रवीन्द्र सूर्यवंशी का कहना है कि शिक्षा व्यवस्था को सुधारने की जिम्मेदारी केवल सरकार की ही नहीं है बल्कि समुदाय को भी अपनी अहम् भूमिका निभानी चाहिए। यदि समुदाय सरकार के साथ मिलकर विद्यालयों में मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध करवाते हैं तो सरकारी स्कूल बेहतर व गुणात्मक शिक्षा दे सकेंगे। पूरे देश में एक ही तरह की शिक्षा व्यवस्था लागू होनी चाहिए। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ग्राम सेवा समिति कलायत की यह सराहनीय पहल शिक्षा के क्षेत्र में बदलाव हेतु एक क्रांतिकारी कदम साबित होगी।

समुदाय सहयोग से हुए विकास कार्यों का जीता-जाता उदाहरण बन गया है कलायत का यह विद्यालय। आप अगर इस विद्यालय में एक वर्ष पहले आते तो आपका मन ज़रूर निराश होता कि स्कूल की स्थिति अच्छी नहीं थी। नगर के लोगों ने दिल खोलकर चंदा दिया। समिति के प्रयासों से बेकार-सा दिखने वाला स्कूल आज शानदार विद्यालय बन चुका है। अन्य स्कूलों को भी इससे प्रेरणा लेनी चाहिए।

दिल से सलाम है सेवा समिति के हौसले व जज्बे को।

हिन्दी प्राध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कमालपुर
जिला कैथल, हरियाणा

भूत पकड़ा गया

सा इंस टीचर विनय सर ने हमारी कक्षा में प्रवेश किया तो बच्चों ने खड़े होकर उनका सम्मान किया, परन्तु जाने किस सोच में डूबा गोपी बैठा रहा, उसे सर के आने का पता ही नहीं चला। सर ने हमें बैठने का इशारा किया और गोपी के पास पहुँचकर उसके कंधे पर हाथ रखा, गोपी हड़बड़ा कर उठा। सर ने कहा- क्या बात है गोपी, तुम कई दिन से स्कूल नहीं आए और अब भी परेशान दिख रहे हो।

सर की बात सुन कर गोपी फूट-फूट कर रोने लगा। हम सभी हैरान रह गए। सर के बहुत पुचकारने, समझाने पर गोपी ने बताया कि करीब सात दिनों से उसका परिवार बेहद परेशान था। अचानक उनके घर में रात को ईंट, पत्थर और आग बरसने लगी। कभी उसकी किताबें और घर में रखे कपड़े कट जाते तो कभी उनमें आग लग जाती थी।

गोपी ने सुबकते हुए कहा- सर! कहते हैं, हमारे घर पर एक शक्तिशाली भूत का साया हो गया है। हमारे मकान मालिक, एक तान्त्रिक बाबा को भी लाये हैं जो बड़े चमत्कारी हैं, जो पानी से नारियल और घी से हवन सामग्री को जला देते हैं। पर भूत बेहद शक्तिशाली है उनके काबू में नहीं आ रहा है। अब बाबा बड़ा यज्ञ करने को कह रहे हैं पर हमारे पास पैसे ही नहीं हैं।

गोपी फिर सुबकने लगा। सर ने गोपी के सिर पर हाथ फेरते हुए पूछा- तुम्हारी आस-पड़ोस में किसी से कोई दुश्मनी है क्या? गोपी ने इन्कार में सिर हिला दिया। सर ने फिर पूछा- और मकान मालिक के साथ तुम्हारे संबंध कैसे हैं? गोपी ने उत्तर दिया-वे बड़े भले आदमी हैं सर! करीब दस साल से हम मामूली किराये पर रहते आ रहे हैं, पीछे उन्होंने किराया बढ़ाने को कहा जरूर था परन्तु पिता जी ने उन्हें हमारे हालात बताते हुए कहा था कि रोटी के ही लाले पड़े हुए हैं, ऐसे में किराया कहाँ से बढ़ाएँगे। बस इसके बाद उन्होने फिर नहीं टोका।

इसके बाद सर ने गोपी से उसके परिवार के सदस्यों के बारे में विस्तार से पूछताछ की। सारी जानकारी लेने के बाद सर बोले- गोपी, मुझे तुम्हारा मामला कुछ-कुछ समझ आ रहा है। फिर सर ने मुझे, गोपी, जगन और शंटी को अलग बुलाकर अपनी योजना समझाई। अब हमारी चौकड़ी भूत पकड़ने के लिए तैयार थी ।

रात के करीब दस बजे गोपी के घर की छत पर एक साया गठरी लिए धीरे से कूदा। उसने गठरी छत पर रख दी पर इससे पहले की वो सँभल पाता उस पर काला कम्बल डाल दिया गया और कई जोड़ी हाथों ने उसे दबोच लिया। अगले दिन रविवार को गोपी के घर तान्त्रिक बाबा का दरबार लगा था। मैं और गोपी अन्य लोगों की तरह हाथ जोड़े बाबा का तमाशा देख रहे थे। बाबा फूँ-फाँ करते हुए अपनी लम्बी जटाओं को इधर-उधर पटक रहा था। तभी शंटी के साथ विनय सर वहाँ आये। शंटी के कंधे पर एक थैला लटक रहा था। हमने सबको सर का परिचय देते हुए कहा-ये हमारे विनय सर हैं। हमें विज्ञान पढ़ाते हैं। सर आपको विज्ञान के खेल दिखाने आए है ।

विनय सर ने वहाँ जमा भीड़ को नमस्कार किया और शंटी के थैले से एक रेशेदार नारियल निकाला फिर लोगों को समझाते हुए, दिखाते हुए सोडियम रसायन के कुछ टुकड़े उसके रेशों मे घुसा दिये। जैसे ही उसे जमीन पर रखकर, उस पर थोड़ा सा पानी डाला गया, नारियल में आग लग गई। दूसरे प्रयोग में सर ने एक थाली में हवन सामग्री ली, फिर उसे उसी तरह सबको समझाते हुए, दिखाते हुए उसमें पोटाशियम परमैंगनेट रसायन मिला दिया । अब उन्होंने ग्लिसरीन की शीशी से उसमें ग्लिसरीन डाल दी, जोकि बिल्कुल घी की तरह लग रही थी, हवन सामग्री जल उठी। लोगों ने हैरान होकर तांत्रिक की ओर देखा। उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं ।

सर ने मुस्कुराते हुए कहना शुरू किया- देखा आपने इन रसायनों का कमाल। यही नहीं विभिन्न रसायनों से हम इसी प्रकार के सैकड़ों चमत्कार दिखा सकते हैं। रसायन की मामूली समझ से ये पाखंड़ी आप सबको मूर्ख बनाते हैं। तो ये तो था, तान्त्रिक और उसके चमत्कारों का सच, और अब भूत के बारे में कुछ हो जाए ।

सर ने ताली बजाई। जगन किसी को कम्बल में लपेटे हुए बाहर से अन्दर ले आया। सर ने कम्बल खींच लिया। अब लुटा-पिटा सा गोपी के मकान मालिक का नौकर गैणी सबके सामने था। सर के इशारे पर उसने रो-रो कर सब बताना शुरू कर दिया।

उसकी कहानी समाप्त होने पर सर ने बोलना शुरू किया- अब तो आप समझ ही गए होंगे कि सारा किया धरा इस मकान मालिक का है। ये अपना मकान इन गरीबों से खाली करवाना चाहता था। नौकर रात को छत से आग और ईंट-पत्थर बरसाता, डर के मारे कोई बाहर नहीं निकलता था। मौका देखकर मकान मालिक, पत्नी व इसके बच्चे किताबें व कपड़े काट जाते या आग, तेजाब रख जाते, जिसका पता बहुत बाद में लगता था। नाटक को अमलीजामा पहनाने के लिए तथा परिवार को और अधिक भय ग्रस्त करने के लिए इस धूर्त और पाखंडी तान्त्रिक को लाया गया।

इतना सुनते ही अब तक चुप बैठा तांत्रिक झटके से उठा और विनय सर पर झपटा- बस! बहुत हो चुका रे नास्तिक, मैं तुझे अभी भस्म करता हूँ। वो जैसे ही सर के पास आया, सर ने पाऊडर की एक पुड़िया उसके ऊपर उड़ेल दी। तान्त्रिक चिल्लाने लगा- हाय खुजली, हाय खुजली।

वह बदन को बुरी तरह खुजलाते हुए कूदने लगा। सर ने लोगों से फिर कहना शुरू किया- ये भूत-प्रेत, जिन्न, चुड़ैल आदि अनपढ़ और मूर्ख लोगों के कुंठित दिमाग की उपज होते हैं, जिनमें कुछ पढ़े-लिखे परन्तु आत्मविश्वास और इच्छा शक्ति की कमी वाले लोग भी शामिल हो जाते हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी जो माँ-बाप अपने बच्चों को इन भूत-प्रेतों के किस्से विरासत में देकर जाते हैं, वे ही बच्चे आगे चल कर इनसे डरते हैं। किसी भूत का अस्तित्व ही नहीं है और असली जिन्दा भूत तो ये हैं। सर ने तांत्रिक की ओर इशारा किया जो अपने कपड़े उतार कर खुजली से अब तक नाच रहा था। सब खिल-खिलाकर हँस पड़े।

राणा संजय
हिंदी प्राध्यापक
राजकीय उच्च विद्यालय, खेड़ी सिम्बल वाली
जिला कैथल, हरियाणा

प्यारे बच्चो!

उम्मीदों भरे नव वर्ष 2021 का आगमन हो चुका है। गत वर्ष पूरे विश्व ने कोरोना त्रासदी को झेला है। शिक्षा भी इससे अछूती नहीं रही। अचानक हम सबको पता चला कि स्कूल बंद हो रहे हैं। हमें घरों में कैद होने के लिए कह दिया गया। अपने अध्यापकों से, सहपाठियों से हमारा मेलजोल नहीं हो पाया। इसी दौरान शिक्षण के एक नये रूप से हम परिचित हुए, वह था ऑनलाइन शिक्षण। हम जानते हैं कि ऑनलाइन शिक्षण कक्षा-शिक्षण का पर्याय नहीं हो सकता। फिर भी शिक्षण के इस नये रूप ने हमें अपने अध्यापकों के साथ निरंतर जोड़ कर रखा और हम सब काफी हद तक अपना पठन-पाठन कर पाए। सत्र का कुछ समय शेष है। शीघ्र ही परीक्षाओं के उपरांत नये सत्र का आरंभ होगा। आशा है फिर से स्थितियाँ सामान्य हो जाएँगी और शालाएँ फिर से बाल-कलरव से गूँज उठेंगी।

लेकिन हाँ, अभी भी कोई कोताही नहीं, कोई ढिलाई नहीं। याद है न प्रधानमंत्री जी क्या कह रहे हैं- 'जब तक दवाई नहीं, तब तक ढिलाई नहीं।' अगर आप विद्यालयों में आने लगे हैं तो अपने अध्यापकों द्वारा दिये गये सभी निर्देशों का पालन आपको अवश्य करना है।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- तुम्हारी यामिका दीदी

सामान्य ज्ञान

1.हमारे मुँह में कितने दाँत होते हैं?
उत्तर- 32
2.हमारे शरीर में कितनी हड्डियाँ होती हैं?
उत्तर-206
3.ताजमहल किसने बनवाया?
उत्तर- शाहजहाँ ने
4 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' कहाँ है?
उत्तर- अहमदाबाद में
5.पंडित जवाहर लाल नेहरू को बच्चे क्या कहते थे?
उत्तर- चाचा नेहरू
6.गेटवे ऑफ इंडिया कहाँ है?
उत्तर- मुंबई में
7.इंडिया गेट कहाँ है?
उत्तर- दिल्ली में
8 शिक्षक दिवस (टीचर्स डे) कब मनाया जाता है?
उत्तर- 5 सितंबर को

पहेलियाँ

1.वैज्ञानिक तो फल कहते हैं,
लोग कहें मुझे सब्जी,
लाल-लाल हूँ गोल-मटोल,
खा कर दूर हो कब्जी।

2. काला रंग है उसकी शान,
सबको देता है वह ज्ञान,
शिक्षक उससे लेते काम,
तन-रंग जैसा उसका नाम।

3. देखी रात अनोखी वर्षा,
सारा खेत नहाया,
पानी तो पूरा शुद्ध था,
पर पी न कोई पाया।

4.दो अक्षर का मेरा नाम,
सर को ढकना मेरा काम।

5.अंत कटे तो खेत जोतता,
मध्य कटे तो बनूँ पवन,
हर घर में खाया जाता हूँ,
शादी हो या करो हवन।

6.कान बड़े काया छोटी,
कोमल कोमल बाल,
चौकस इतना पकड़ न पायें,
बड़ी तेज है चाल।

7.होंठों की वह शान बढ़ाए,
हर एक महिला उसे लगाए,
साढ़े चार अक्षर का उसका नाम,
बोलो तो वह क्या कहलाए।

उत्तर-
1.टमाटर, 2. ब्लैक-बोर्ड , 3.ओस, 4.टोपी , 5.हलवा, 6. खरगोश 7.लिपिस्टिक

रमेश कुमार सीड़ा
अंग्रेजी प्रवक्ता
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा
संप्रति प्रतिनियुक्ति पर चंडीगढ़ में

सर्दी

कोहरा पाला सर्द हवाएँ,
थर - थर काँपा रहा जाड़ा।
सूरज दादा हुए बेगाने,
गरमी ने पल्ला झाड़ा।
आसमान में जुगनू जैसे,
छिपते और निकलते।
नहीं रहा वह तेज - ताप,
मानो सर्दी से हों डरते।
सिकुड़े - सिकुड़े खड़े पेड़,
पंछी बैठे पंख फुलाये।
जीव-जंतु सब काँप रहे,
सर्दी - सितम है ढाये।
कपड़े ऊपर कपड़े पहने,
घर में दादा - दादी।
चाय पियें हीटर चलवायें,
तनिक न सर्दी भागी।।

नरेन्द्र सिंह नीहार
ए-67/बी, दुर्गा विहार (देवली)
निकट खानपुर
नई दिल्ली -110080

शिक्षक दीप

अज्ञानता का तम दूर हो
चहुँ ओर ज्ञान का नूर हो।
शिक्षक दीप कह रहा
आपका साथ ज़रूर हो।

नवाचार भरपूर हों
हर बच्चे के हाथ गुर हो।
शिक्षक दीप कह रहा
आपका साथ ज़रूर हो।

उच्च शैक्षणिक स्तर हो
शाला आकर्षक, सुंदर हो।
शिक्षक दीप कह रहा
आपका साथ ज़रूर हो।

हर बच्चा कोहिनूर हो
देश-समाज को गुरुर हो।
शिक्षक दीप कह रहा
आपका साथ ज़रूर हो।

गोपाल कौशल
प्राथमिक शिक्षक
नागदा, जिला धार, मध्यप्रदेश

बचपन

बचपन के दिन
कितने हैं हसीन।
मजा नहीं आए
दोस्तों के बिन।।
नीर में ढूँढ़े रेत
खेलते ऐसे खेल।
कभी मिट्टी आए
कभी हाथ आए रेत ।।
नीर में देख छवि
भरें किलकारी।
घर बनाने की कर
रहे नन्हें तैयारी ।।

गोपाल कौशल

संतरे के छिलके में होता है ज्वलनशील तेल

कल की ही बात है मेरा भानजा घर पर आया हुआ था। वह चंडीगढ़ रहता है। मेरे पास केमिस्ट्री की कोई समस्या लेकर आया हुआ था। हम मामा-भानजा बैठ कर संतरे खा रहे थे। हुआ यूँ कि लाइट चली गयी। मैंने मोमबत्ती जलाई और टेबल पर रख दी। भानजा जी जो शरारती तो बचपन से ही हैं, संतरे का छिलका लेकर अपने काम में लग गए।

आप समझ गए होंगे क्योंकि अक्सर बच्चे यही करते हैं। जी हाँ, संतरे के छिलके को मोमबत्ती पर निचोड़ने लग गए। जैसे ही संतरे का निचोड़ मोमबत्ती पर गिरता तो मोमबत्ती की आग भभकने लगती। नानी के मना करने पर भी हमारे भानजे साहब नहीं माने। कहने लगे इसकी केमिस्ट्री बताओ। मुझे बहुत खुशी हुई कि वह इसके पीछे का विज्ञान पूछ रहा है। तो जो जानकारी मैंने उसे दी वह आप सब के साथ शेयर कर रहा हूँ।

संतरे के छिलके में एक ऑर्गेनिक तेल होता है जोकि जल में अघुलनशील होता है। हाँ, पर ज्वलनशील जरूर होता है। इसलिए जब उसको मोमबत्ती पर छिड़कते है तो मोमबत्ती की आग भभकने लगती है। इस तेल में मुख्यतः लिमोनीन योगिक होता है। यदि आपने ऑरेंज फ्लेवर का शैम्पू, फेसवाश, फ्रेशनर और कॉस्मेटिक आइटम का इस्तेमाल किया होगा तो उसके इंग्रिडेंट्स में लिमोनीन जरूर पढ़ा होगा। इसी के कारण ही संतरे की खुशबू आती है। हैंड सैनिटाइजर (ऑर्गेनिक) व सफाई रसायनों (ऑर्गेनिक) में इसका इस्तेमाल खूब होता है क्योंकि यह एक अच्छा कीटनाशक है। तो अब संतरे के छिलके को ऐसे ही मत फेंक देना।

सुनील अरोरा
पीजीटी, रसायन विज्ञान
राउ विद्यालय समलेहरी
पंचकूला

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

प्रिय अध्यापक साथियो! उम्मीद है कि आप अपने भरसक प्रयासों से विद्यार्थियों तक बेहतर अध्ययन सामग्री पहुँचा पाने में सफल हो रहे होंगे। इसी कड़ी में प्रस्तुत हैं 'खेल खेल मे विज्ञान' शृंखला की कुछ नयी विज्ञान गतिविधियाँ। पाठ 'बल तथा दाब' के दौरान बच्चे बहुत मजेदार विज्ञान गतिविधियाँ कर पाते हैं। जिज्ञासु प्रवृत्ति के विद्यार्थी अपने आसपास घटित हो रही घटनाओं पर बहुत ध्यान केंद्रित करते हैं। एक बार जब उन्होंने देखा कि मिड-डे मील वर्कर्स जब पानी की भरी बाल्टी उठाकर लाती हैं तो वह बाल्टी के कुंडे (हैंडल) पर एक कपड़ा लपेट कर उसे और मोटा कर लेती हैं। इस को देखकर बच्चों ने यह प्रश्न पूछा कि ऐसा करने से क्या लाभ होता है?

उन्हें बताया गया कि ऐसा करके वह बाल्टी के कुंडे का क्षेत्रफल बढ़ा लेती हैं जिससे उनकी हथेली पर कम दाब लगता है और बाल्टी का कुंडा उनकी हथेली में नहीं चुभता है। तभी एक बच्चे ने बताया कि जिनके स्कूल बैग की कंधे पर लटकाने वाली पट्टियाँ (तनियाँ) चौड़ी होती हैं उनकी वे पट्टियाँ कंधे पर नहीं चुभतीं और जिन के स्कूल बैग्स की पट्टियाँ कम चौड़ी होती हैं वे कंधों पर चुभती हैं। इसके बाद तो बच्चों के साथ बहुत सी ऐसी गतिविधियों को साँझा किया गया जिनसे उन्हें बल, दाब तथा क्षेत्रफल में संबंध स्पष्ट होता चला गया। इसमें कम लागत व तत्काल उपलब्ध साधनों का प्रयोग करके बल, दाब व क्षेत्रफल की बहुत-सी गतिविधियाँ की जा सकती हैं।

1.पुश पिनों की नोक पर गुब्बारे का न फटना-

एक गुब्बारा फुलाया गया और उसे एक पुश पिन (ड्राइंग पिन) की नोक के ऊपर रखकर दबाया तो गुब्बारा फट गया। जब एक अन्य गुब्बारे को फुलाकर एक साथ रखी बहुत सारी पुश पिंस की नोकों पर रखकर दबाया गया तो वह नहीं फटा। ऐसा इसलिए हुआ कि वस्तु पर लगने वाला दाब पृष्ठीय क्षेत्रफल पर निर्भर करता है।

दाब = पृष्ठ के लम्बवत् बल / पृष्ठ का क्षेत्रफल

किसी वस्तु का क्षेत्रफल जितना कम होता है, वह सतह पर उतना ही अधिक दाब डालती है। क्षेत्रफल जितना बड़ा होगा दाब उतना ही कम होगा। एक पुश पिन की नोक का कम क्षेत्रफल गुब्बारे की सतह पर अधिक दाब आरोपित कर गया जिस कारण वह फट गया। जबकि बहुत सारी पुश पिनों की नोकों पर गुब्बारे पर लगने वाला बल बहुत से भागों में बँट गया और गुब्बारा नहीं फटा।

2.पेंसिल की नोक का उंगली पर चुभना।

बल, दाब व क्षेत्रफल में सम्बन्ध को समझने के लिए एक और गतिविधि करके देखी गई। बच्चों को कहा गया कि वे अपने ज्योमेट्री बॉक्स से पेंसिल निकालें। पेंसिल को दोनों हाथों की तर्जनी उंगलियों के बीच में इस

प्रकार से फँसायें कि एक उंगली पर पेंसिल का पिछला सपाट सिरा और दूसरी उंगली पर पेंसिल का नुकीला सिरा लगाकर दबायें। दोनों उंगलियों से पेंसिल के दोनों सिरों को दबाने (बल लगाना) से समान बल आरोपित होगा। ऐसा करने पर उनसे पूछा गया कि बताइए आपको किस उंगली पर अधिक चुभन महसूस हो रही है? तो बच्चों ने बताया कि जिस तरफ नुकीला सिरा है उस उंगली पर ज्यादा चुभन महसूस हो रही है। जिससे स्पष्ट हो जाता है कि जिस सिरे का क्षेत्रफल कम है उस सिरे पर अधिक दाब उत्पन्न होगा। यहाँ यह स्पष्ट हो जाता है कि दाब, क्षेत्रफल के व्युत्क्रमानुपाती होता है। अर्थात् क्षेत्रफल बढ़ने पर दाब कम होगा तथा क्षेत्रफल के कम होने पर दाब बढ़ता है।

3.पुश पिनों व लोहे की कीलों के ऊपरी सिरों का क्षेत्रफल अधिक क्यों होता है?

पुश पिन अर्थात् ड्राइंग पिन की बनावट इस प्रकार की होती है कि उसका ऊपरी सिरा एक वृत्ताकार धात्विक कैप की तरह होता है। दूसरा सिरा नुकीला होता है। ऐसा इसलिये होता है कि पुश पिन को प्रयोग करते समय जब

अँगूठे से दबाया जाता है तो वह अंगूठे में न चुभे जबकि दूसरे सिरे के नुकीले (कम क्षेत्रफल) होने के कारण वह आसानी से ड्राइंग बोर्ड या नोटिस बोर्ड की सतह में धँस जाए।

ठीक इसी प्रकार लोहे की कीलों (आयरन नेल्स) का भी एक ऊपरी सिरा एक वृत्ताकार कैप की तरह होता है। दूसरा सिरा नुकीला होता है। कील के इस सिरे पर हथौड़ी से चोट मारने पर नुकीला सिरा लकड़ी में गड़ जाता है।

4.चाकू की धार लगाने का कारण?

इस जिज्ञासा को एक सेब व चाकू की गतिविधि द्वारा

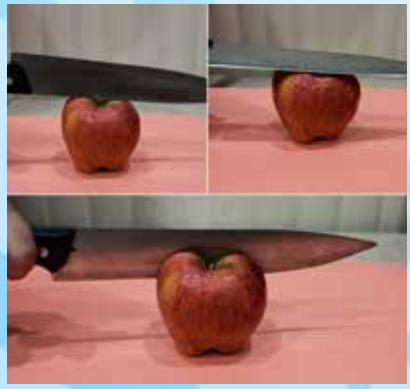

समझाया गया। चाकू की धार लगाने का कारण यह होता है कि उसके एक सिरे का क्षेत्रफल कम किया जाए ताकि कम बल लगा कर अधिक दाब उत्पन्न किया जा सके। एक धारदार चाकू की धार वाली साइड से बिना धारदार साइड की अपेक्षा वस्तुओं को आसानी से काटता है। इसका कारण है धारदार तरफ की साइड का क्षेत्रफल बिना धारदार साइड के क्षेत्रफल से कम होता है, क्षेत्रफल कम होने के कारण उस साइड से सेब पर अधिक दाब लगेगा और उससे सेब को काटना आसान होगा। चित्र में एक सेब को चाकू के तीनों तरीकों से काटने का प्रयास किया गया है।

5. बिना तोड़े पेपर कप्स पर खड़ा होना-

बच्चों को एक गतिविधि करने को दी गयी कि क्या वो पेपर कपों पर खड़े हो सकते हैं, वह भी बिना उन्हें तोड़े? विद्यार्थियों ने प्रयास किया तो पेपर कप टूट गए, उन्होंने बताये गए तरीके के अनुसार 12 पेपर कपों को एक साथ चार-चार की तीन पंक्तियों में रखा। उन 12

पेपर कपों के ऊपर एक हार्ड बोर्ड का आयताकार पीस (परीक्षाओं वाला गत्ता) रखकर उस पर खड़े हुए तो पाया कि पेपर कपों पर खड़ा हुआ जा सकता है। ऐसा इसलिये हुआ कि जब दोनो पैर एक एक पेपर कप पर रखे गए तो कम क्षेत्रफल होने के कारण वह शरीर के भार (आरोपित बल) के कारण उत्पन्न दाब को सहन नहीं कर पाए और पिचक गए। जब अधिक पेपर कप लिए गए तो उनकी संयुक्त सतह का क्षेत्रफल बढ़ गया व उन के ऊपर रखे हार्डबोर्ड के कारण शरीर का भार सभी कपों पर बँट गया। जिससे इकाई कप पर उतना दबाव नहीं उत्पन्न हो पाया कि वे पिचक सकें।

विज्ञान अध्यापक सह विज्ञान संचारक
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कैंप
खंड जगाधरी, जिला यमुनानगर

'खेल-खेल में विज्ञान' शृंखला के तहत गतिविधियों का शतक

प्रिय पाठको!

जैसा कि आपको विदित है कि आपकी प्रिय पत्रिका 'शिक्षा सारथी' में प्रतिमाह 'खेल-खेल में विज्ञान' शृंखला के तहत ऐसे प्रयोगों की जानकारी दी जाती है जिन के माध्यम से रोचक एवं मनोरंजक ढंग से विज्ञान से विविध सिद्धांतों की जानकारी दी जा सकती है। नवाचारी विज्ञान अध्यापक दर्शन लाल बवेजा द्वारा प्रेषित इन सभी प्रयोगों की विशेष बात यह है कि इन्हें वे पत्रिका में भेजने से पूर्व अपने विद्यालयों के विद्यार्थियों के साथ करते भी हैं। प्रयोग दिखाते समय विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया को भी वे अपने लेख में सम्मिलित करते हैं। इन सभी प्रयोगों की दूसरी बात यह है कि ये विज्ञान प्रयोगशाला में नहीं, बल्कि कक्षा-कक्ष या खुले मैदान में किए जा सकते हैं क्योंकि इन सभी में जिस सामग्री का उपयोग किया जाता है वह या तो घरों में आम मिल जाती है या फिर बेहद सस्ते मूल्य पर बाजार से उपलब्ध हो जाती है। अक्टूबर-2018 से आरंभ हुई गतिविधियों की शृंखला शतक लगा चुकी है, यानी इस अंक से पूर्व हम सौ रोचक गतिविधियों को प्रकाशित कर चुके हैं। उम्मीद है कि वे सभी अंक आपने देखे होंगे और इन गतिविधियों को अपने विद्यालय के विद्यार्थियों के साथ किया होगा। अगर आप किसी अंक को देखने में वंचित रह गये हों, तो हम आपको बताना चाहते हैं कि ये सभी अंक विद्यालय शिक्षा विभाग की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं-

अभी तक प्रकाशित सौ गतिविधियाँ

1. मेरा फूकनी पंप।
2. कार्ड/रुमाल/छलनी से पानी रोकने का जादू।
3. मेरी अपनी बारिश।
4. उत्तल और अवतल लेंस (जल लैंस बनाना)
5. मेरा स्प्रे पंप।
6. मेरी हथेली में हुआ सुराख।
7. पानी को धक्का मारे गर्म वायु।
8. एक के दो, दो के चार कैसे हुए।
9. अपनी रेत घड़ी बनाना।
10. जड़ व शिरा विन्यास पहचानना।
11. वाष्पोत्सर्जन की गतिविधि।
12. अंकुरण व अंकुरण के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ।
13. मेरा अपना जलचक्र।
14. पुष्प के विभिन्न भागों का अध्ययन करना।
15. नाचती आल पिनें।
16. चुम्बकीय उत्तोलन (मैग्नेटिक लेविटेशन)
17. जल का वैद्युत अपघटन ।
18. लोहे को ताँबा कैसे बनाया?
19. वस्तु की प्रतिबिम्ब से दूरी कितनी?
20. कम लागत की मेरी अपनी वैद्युतदर्शी।
21. तैरता निम्बू ।
22. पानी पर तैरे सुई और पेपर क्लिप्स।
23. विद्युत परिपथ
24. पंख्या चला, भागी कार।
25. हाइड्रोजन और स्क्रैप बुक बनाओ।
26. रंध्रों को जानो।
27. साईफन।
28. नाचती गेंद।
29. मेरी आज्ञाकारी गेंद।
30. खिलौना टेलीफोन।
31. सर-सर की आवाज कितनी साफ
32. गुब्बारा फुलाओ तो मानें।
33. कागज़ की सीटी।
34. आक के फल का विच्छेदन
35. कोई डिब्बी तैरे, कोई डूब जाये।
36. रंध्रों की स्लाइड बनाना व अवलोकन।
37. हवा में लटकता चुम्बक।
38. सोलर वून ज्ञात करना।
39. ब्रायोफिलम पौधे से कायिक प्रवर्धन को जानना।
40. दीवार पर गुब्बारे चिपके क्यों?
41. ग्रेफाइट में विद्युत चालन।
42. भौतिक व रासायनिक परिवर्तन।
43. सूक्ष्मदर्शी को जानना व उससे अवलोकन करना।
44. हाई ग्लास से अवलोकन व माइक्रो-फोटोग्राफी।
45. मानकीकृत वर्षामापी यंत्र व वर्षा का मापन।
46. पत्तियाँ क्यों गिरती हैं नई पत्तियाँ कैसे आती हैं?
47. गुब्बारे व पेपर कप में पानी गर्म करना।
48. मिट्टी का ढेला पानी में डालना।
49. पेन्सिल को उँगली पर खड़ा करना।
50. माचिस से सिक्का निकालो।
51. लिटमस टेस्ट व हल्दी को सूचक रूप में प्रयोग करके अम्ल व क्षार के गुणों को जानना।
56. जल अंतस्रावन की दर ज्ञात करना।
57. आलू ऊपर कैसे चढ़ा।
58. घूमने वाला धागा।
59. आओ स्पेक्ट्रम देखें।
60. आओ दूरबीन से अवलोकन करें।
61. मैग्नीशियम धातु को पहचानना व उसका दहन करना।
62. ऊष्मा अवशोषण, काली सफेद बोतल।
63. क्लाइडियोस्कोप।
64. पेरिस्कोप।
65. प्यूपा मिला।
66. बूँद सिंचाई बोतल।
67. अपने दाँतो को जानो।
68. गुब्बारे की चीखें
69. पार्श्व परावर्तन से अक्षर उल्टे क्यों?
70. विद्युत धारा का ऊष्मीय प्रभाव।
71. एकाग्रता मापी यंत्र
72. धातु, अधातु व मिश्र धातु को नमूनों से जानो।
73. पत्तियाँ कैसी कैसी?
74. प्रकाश सीधी रेखा में गमन करता है।
75. मेरा दोस्त प्रिज्म, जो देता मुझे इंद्रधनुष।
76. चम्मच सिखाये प्रकाश परावर्तन।
77. फेंटास्कोप- भागता घोड़ा।
78. चुम्बक - सिक्कों का डिजाइन।
79. पानी निचले छेद से तेज क्यों निकला?
80. सुरक्षित सौर अवलोकन।
81. परजीवी अमरबेल को जानो।
82. गेंदे आयें पास-पास।
83. रेशम के कीट का कोकून देखा।
84. आओ टिकटिकी बनायें।
85. दिशाओं का पता लगाना।
86. धूप व छाया में तापमान का अंतर ज्ञात करना।
87. मोमबत्ती क्यों बुझ गयी?
88. सुई को चुम्बक बनाना।
89. नन्हे लाल-लाल बीजों का कौतूहल।
90. नवाचारी परिपथ जो बताये लवणीय जल होता है विद्युत का सुचालक।
91. बुलबुले में बुलबुला।
92. बाल्टी में बड़े-बड़े बुलबुले।
93. सिक्का कैसे गायब हुआ?
94. मधुमक्खियाँ हमारी बेहतरीन मित्र।
95. मच्छरों की रोकथाम से सम्बंधित संदेश का प्रसारण।
96. सौर ऊष्मा द्वारा पत्तों से पानी प्राप्त करना।
97. खुद की ऊँचाई ज्ञात करना व ग्राफीय निरूपण करना।
98. मोमबत्ती की ज्वाला के भागों के पैटर्न बनाना।
99. गर्म हवा से घूमता (सर्पिल) स्पाइरल।
100. गिलास में फँसा गिलास बाहर निकालो।

कुत्ते करते हैं कोरोना का सटीक टैस्ट

कुत्ता इंसान का सबसे पुराना पालतू जानवर है। सबसे पहले इंसान ने कुत्ते को पालना शुरू किया। ये बात मैं तथ्यों के साथ कह रहा हूँ। सिंधु घाटी की सभ्यता से इसके साक्ष्य मिलते हैं। रोपड़ में खुदाई में इंसान की कब्र में इंसान के साथ कुत्ता भी पाया गया। सोचिये कि कुत्ता अपने मालिक के मरने के साथ उसकी कब्र में दफन किया गया। इससे ये अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि कुत्ता उनके जीवन में क्या अहमियत रखता होगा। कुछ लोग यह जानते होंगे कि लोथल में जो कब्रें मिलीं उनमें दो इंसानों की कब्र एक साथ मिली थी, जिसमें एक नर की होती थी और दूसरी मादा की होती थी। हमने ये कयास लगाया कि ये पति-पत्नी होंगे। पति की मृत्यु के बाद पत्नी को भी साथ में जिंदा ही दफना दिया गया होगा। पर कुत्ते का इंसान के साथ कब्र में मिलना एक पहेली था। पर जो भी हो इंसान के जीवन में कुत्ता प्राचीन काल से ही महत्त्व रखता आया है, इस सच से कोई इंकार नहीं कर सकता।

वैसे तो कुत्ते के गुणों से हम सब वाकिफ़ हैं, पर मैं यहाँ कुछ ऐसे गुणों की बात करूँगा जो कुत्ते को विशेष जानवर बनाती है, जिसके कारण कुत्ता इंसान का सबसे प्रिय पालतू जानवर बना।

कुत्ते की नाक हमेशा गीली रहती है। यही गीली नाक के कारण ही कुत्ते की सूँघने की क्षमता मनुष्य से ज्यादा होती है। एक कारण ये भी है कि उसका ओलफैक्ट्री बल्ब मनुष्य से बड़ा होता है। वास्तव में हमारी नासिकाओं में एक पीले रंग का भाग होता है जिसमें लाखों गंध कोशिकाएँ होती हैं जो कि म्यूकस द्वारा सदा गीली रहती हैं। ये कोशिकायें तंत्रिकाओं द्वारा मस्तिष्क के ओलफक्ट्री बल्ब से जुड़ती हैं, जिससे हमें गंध का एहसास होता है। आकार में बड़ा ओल्फैक्ट्री बल्ब के कारण कुत्ते के सूँघने की क्षमता इंसान से दस हज़ार गुना है। इसी शक्ति के कारण ही कुत्ते ने इंसान की मदद तब की जब वो एक वैश्विक महामारी से जूझ रहा है।

यह पहली बार नहीं कि कुत्तों का उपयोग बीमारी को डिटेक्ट करने के लिए किया जा रहा है। हम पहले भी कुत्तों का उपयोग मलेरिया, पार्किंसोनिम, कैंसर जैसी बीमारियों का पता करने के लिए करते आये हैं। इस बार कुत्ता कोविड के दौर में फिर एक सक्षम जाँच का टूल बन गया है। कोविड एक श्वसन रोग है जिस के कारण हमारा शरीर एक अलग सी गन्ध देता है जिसे कुत्ते आसानी से डिटेक्ट कर लेते हैं। यहाँ बात फिनलैंड की करें तो वहाँ की एक यूनिवर्सिटी ने प्रशिक्षित कुत्तों को एयरपोर्ट पर यात्रियों की कोविड की जाँच के लिए लगाया है। यहाँ जो यात्री स्वेच्छा से अपनी जाँच करवाना चाहते हैं वे अपनी स्किन को एक वाइप्स से रब करके दे देंगे। इस वाइप को एक कंटेनर में रख कर दूसरे कक्ष में ले जाते हैं। उस कक्ष में प्रशिक्षित कुत्ते होते हैं। उनमें से एक कुत्ता इस वाइप को सूँघता है और अपनी प्रतिक्रिया देता है। यह प्रतिक्रिया एक खास होती है जिससे ट्रेनर को पता चल जाता है ये कोविड पॉजिटिव है। उस यात्री की फिर पीसीआर जाँच की जाती है। आप को जानकर आश्चर्य होगा कि अब तक जितने भी कोविड के केस कुत्तों द्वारा बताए गए वे सब लैब टेस्ट में भी कोविड से संक्रमित मिले। मतलब शत-प्रतिशत एक्यूरेसी मिली। इस कोरोना काल में ये बात जानकर कि कुत्ता कोविड के लक्षण आने के पाँच दिन पहले ही कोविड की जाँच कर लेता है और बता देता है कि इस व्यक्ति को कोरोना है। आप कुत्ता पालने की ही सोचने लगेंगे।

जानवरों के एक डॉक्टर ने बताया कि कुत्तों के सूँघने की क्षमता इंसान से 1000 गुणा अधिक है। इसके पीछे के विज्ञान के बारे में उन्होंने बताया कि कुत्ते की नाक इंसान की नाक से आकार में बड़ी है। जिस कारण उनके म्यूकस का पृष्ठीय क्षेत्रफल अधिक होता है। इसलिए कुत्ता जब भी साँस लेता है तो वह सूँघने में इंसान से अधिक शक्ति रखता है। उनकी म्यूकस लाइनिंग में 300 मिलियन ओल्फेक्ट्री रिसेप्टर होते हैं, जबकि इंसान में सिर्फ 60 मिलियन। इतना ही नहीं इनके मस्तिष्क में ओल्फैक्ट्री लोब (मस्तिष्क में सूँघने का क्षेत्र) भी इंसान के ओल्फेक्ट्री लोब से 40 गुणा अधिक है। इन्हीं अद्भुत सरंचनाओं के कारण इनके सूँघने की क्षमता अद्वितीय है। परन्तु इनको इन सुगन्धों में अंतर करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। वैज्ञानिकों का विश्वास है कि कुत्ते उस रसायन की सुगंध को पहचानने में सक्षम हैं जो कोविड के कारण एक मरीज के पसीने से निकलता है। कुत्ते को इस काम के लिए कुछ ही सप्ताह में प्रशिक्षित किया जा सकता है इसलिए यह सबसे किफायती तरीका रहेगा कि प्रशिक्षित कुत्तों को एयरपोर्ट व रेलवे स्टेशन पर कोविड जाँच के लिए लगाया जा सकता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या सभी कुत्ते यह काम करने में सक्षम हैं। एक पशु वैज्ञानिक के अनुसार यह बात सही है कि कुत्तों की सूँघने की क्षमता इंसान से अधिक है, परंतु कुछ खास नस्ल के कुत्तों से ही यह काम लिया जा सकता है। हम सब जानते हैं कि नस्लों में अंग-संरचना का अंतर होता है। जिन कुत्तों की नाक लम्बी होती है वह इस काम के लिए ज्यादा योग्य हैं। पग नस्ल के कुत्तों की नाक छोटी होती है। वे सूँघने के काम में इतने सक्षम नहीं होते जितने कि अन्य। कुछ नस्लों को प्रशिक्षित करना भी आसान होता है। इसलिए जर्मन शेपर्ड, लेब्राडोर नस्ल के कुत्ते इस काम में अधिक सक्षम हैं।

फ़िनलैंड के बाद दूसरा देश जिसने कुत्तों को एयरपोर्ट पर लगाया है वह है दुबई। जी हाँ, दुबई ने भी अपने अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर कुत्तों को इस काम में लगा दिया है। आप हैरान मत होना यदि आप का दुबई एयरपोर्ट पर कुत्ते स्वागत करें तो।

सुनील अरोरा
पीजीटी रसायन विज्ञान
राउ विद्यालय समलेहरी
जिला- पंचकूला, हरियाणा

आकार लेता सपना

विद्यालय का वार्षिकोत्सव करीब था। नेहा डांस में सबसे अच्छी थी। हम सरस्वती वंदना की तैयारी में लगे थे। एक डांस टीचर भी उन्हें सिखाने के लिये लगा लिया था। बच्चे काफ़ी अच्छा कर रहे थे। नेहा में आत्म-विश्वास जाग रहा था। उसी बीच किसी ने उसके पिता जी से शिकायत कर दी, क्योंकि वह डांस के खिलाफ़ थे। नेहा पर उनकी सख़्ती शुरू हो गयी। उत्सव को कुछ ही दिन तो बचे थे और नेहा ने स्कूल आना बंद कर दिया। हमारा तो प्रोग्राम ही नेहा के इर्द-गिर्द था। अब क्या करूँ? कैसे उसे बुलाऊँ?

सना और नेहा जैसी काफी बेटियों के अभिभावकों ने उन्हें घरों में कैद कर रखा था। उन्हें समझाना काफी मुश्किल। अभिभावकों की सोच यही कि इन्हें डांस-वांस कुछ न सिखाओ। शादी के बाद पराये घर जाकर चूल्हा-चौका ही तो करना है।

नेहा को घर बुलाने भेजा तो पता चला उसकी माँ अस्पताल में हैं। नेहा का रोल अब ख़ुशबू को दिया जा चुका था, क्योंकि उसके आने की उम्मीद कम थी। तभी पता चला नेहा के पिताजी अब्दुल हफ़ीज़ नेहा की माँ के ऑपरेशन के लिये इस बात पर अड़ गये कि वह ऑपरेशन लेडी डॉक्टर से ही करवाना चाहते हैं। जो उस अस्पताल में नहीं थी और इतना पैसा भी नहीं था कि दूसरे अस्पताल में जा सकें। बस फिर क्या, मैं स्कूल से निकली। नेहा को उसके घर से बुला स्कूटी पर बैठा कर अस्पताल आ गई। नेहा के पिता जी परेशान इधर-उधर घूम रहे थे। नेहा माँ के पास जाकर लिपट गयी। मैं बाहर से कुछ फल लेकर उनके पास गई और बोली- भाई साहब! अगर आपकी ही तरह सब अपनी बेटियों को घर में बैठा लें तो किसी स्कूल में लेडी टीचर, किसी अस्पताल में लेडी डॉक्टर या नर्स मिल पायेगी क्या?

मेरी बात सुनकर उनकी गर्दन झुक गई। उनकी आँखों मे पछतावा था। नेहा का हाथ मेरे हाथ में पकड़ाते हुए बोले, आप सही हो मैडम जी। आपने मेरी आँखें खोल दीं। अब मेरी नेहा पढ़ेगी और डॉक्टर भी बनेगी। बस आप साथ देना। यह सुनकर नेहा मुझसे लिपट गई। उसकी मुट्ठी में एक सपना आकार लेने लगा। उसे स्कूल आता देखकर अन्य लड़कियाँ भी पढ़ने के लिए स्कूल आने लगीं।

आसिया फ़ारूक़ी
शिक्षिका
प्राथमिक विद्यालय अस्ती
नगर- फ़तेहपुर, उत्तर प्रदेश

2021

जनवरी माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

9 जनवरी- प्रवासी भारतीय दिवस
11 जनवरी- लाल बहादुर शास्त्री पुण्यतिथि
12 जनवरी- राष्ट्रीय युवा दिवस, स्वामी विवेकानंद जयंती
13 जनवरी- लोहड़ी
20 जनवरी- गुरु गोबिंद सिंह जयंती
23 जनवरी- नेता जी सुभाष चन्द्र बोस जयंती
24 जनवरी- राष्ट्रीय बालिका दिवस,
25 जनवरी- राष्ट्रीय पर्यटन दिवस
26 जनवरी- गणतंत्र दिवस
28 जनवरी- लाला लाजपतराय जयंती

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Green Hydrogen- Fuel of the future

Naveen Kumar Yadav

Hydrogen can be considered as a clean energy carrier like electricity. Hydrogen can be produced from various domestic resources such as renewable energy and nuclear energy. In the long term, Hydrogen will reduce the dependence on oil and reduce emission of greenhouse gases and other pollutants.

What is Hydrogen?

Hydrogen can be considered as the simplest element in existence. Hydrogen is also one of the most abundant

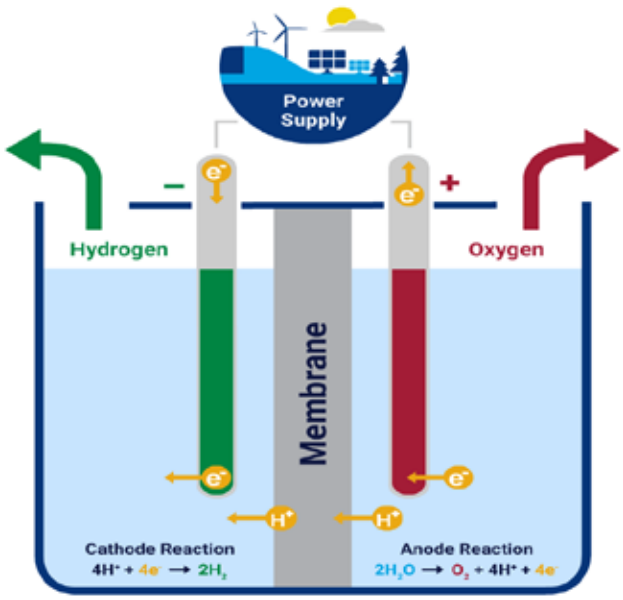

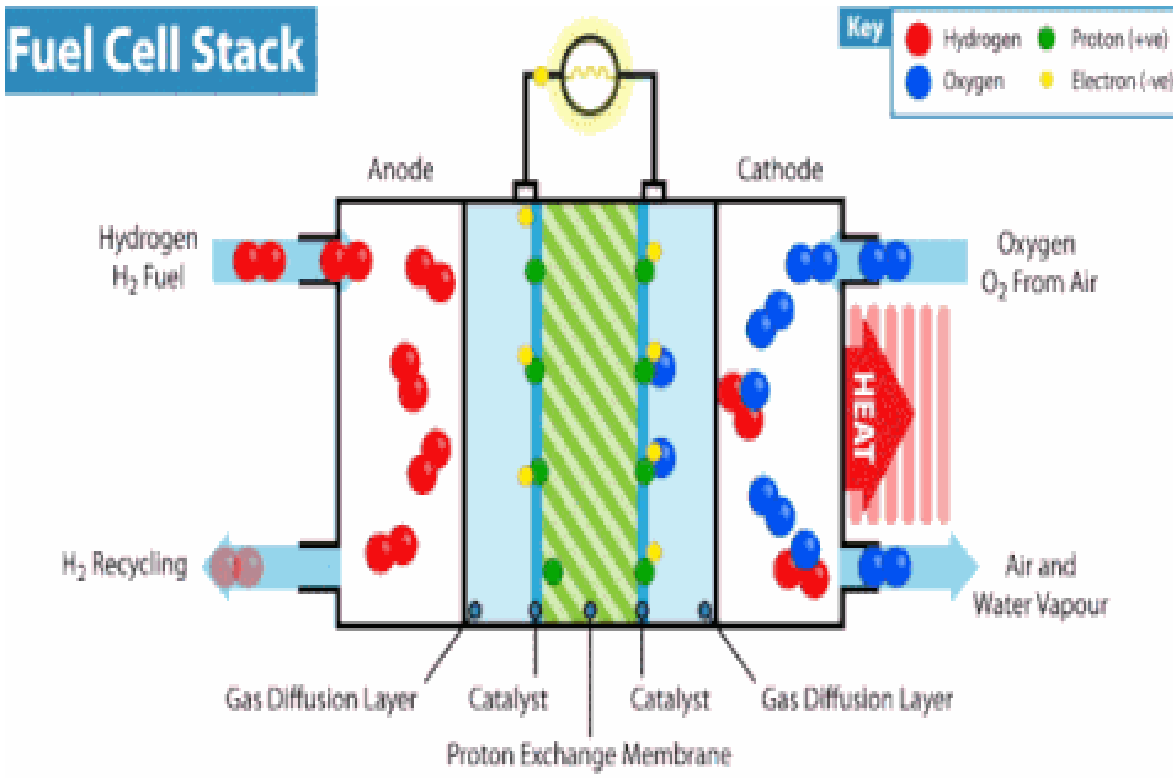

elements in the Earth's crust. Hydrogen as a gas is not found naturally on Earth and must be manufactured.

Hydrogen has the highest energy content of any common fuel by weight. It is the lightest element and it is a gas at normal temperature and pressure.

Hydrogen as an energy carrier –

Hydrogen is considered a secondary source of energy, commonly referred to as energy carrier. Energy carriers are used to move, store and deliver energy in a form which can be easily used. e.g. electricity.

Hydrogen as an important energy carrier in future has a number of advantages. For example, a large volume of hydrogen can be easily stored in a number of different ways, including underground hydrogen storage, compressed hydrogen in a tank.

Hydrogen is also considered as a high efficiency, low polluting fuel that can be used for transportation, heating and power generation in places where it is difficult to use electricity. Hydrogen is cheaper to ship by pipeline than sending electricity over long distances by wires.

How is Hydrogen produced?

Since Hydrogen does not exist on Earth as a gas, it must be separated from other compounds. Two of the most common methods for the production of Hydrogen are electrolysis or water splitting and steam reforming. Steam reforming is currently the least expensive method for production of Hydrogen.

Uses of Hydrogen –

Currently Hydrogen is mainly used as a fuel in the NASA space program. Liquid Hydrogen is used to propel space shuttle and other rockets while Hydrogen fuel cells power the electricity systems of the shuttle. Hydrogen is also used in agriculture to create fertilizers.

The future of Hydrogen –

In the future, Hydrogen will join electricity as an important energy carrier, since it can be made safely from renewable energy sources and is virtually non-polluting. It will also be used as a fuel for zero emission vehicles, to heat homes and offices, to produce electricity and to fuel air crafts.

In future Hydrogen will become a widely used alternative to gasoline.

Lecturer in Chemistry
G.S.S.S. Bocharia, Ateli,
Mahendergarh

Quality Teaching

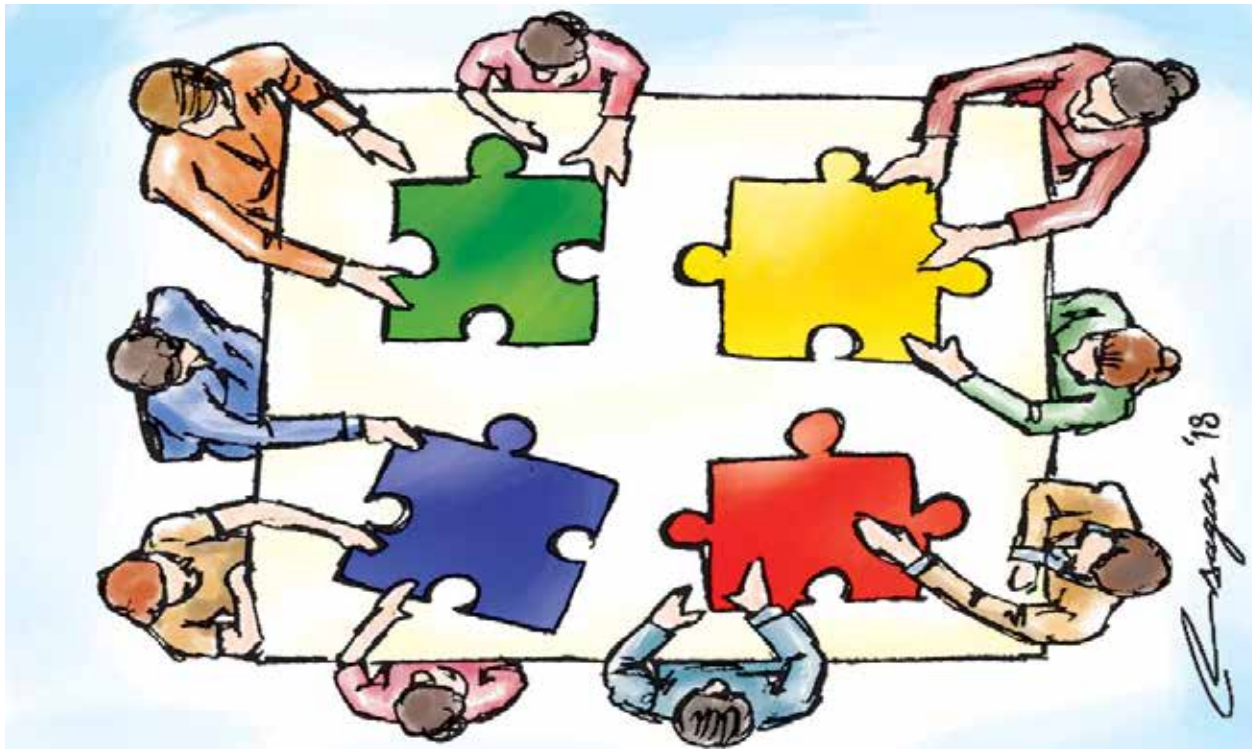

Teaching, so as to be called as 'Quality Teaching', needs all the 'E's that too in the same sequence.

Enter the class and greet the students – Do not wait for the students to greet or wish you. The greeting must be loud and cheerful. Wear a bright smile on your face no matter how unhappy you are, as your students are not responsible for your miseries.

Check, if some student is wearing a very nice dress. Go to that student and praise in a way you want to be noticed and praised when you are wearing your best dress.

Keep the list of students with name and dates of birth with you and remind yourself of the student who is having his/her birthday today or a day before (if the previous day has been a holiday). Give your wishes and ask all other student to congratulate him/her.

Excite:

Ask them "Are we ready to know something very new, important and exciting?" Surprise them with some stunning news, by throwing a big question or by telling them some unbelievable fact related to the topic of that day. Give them a little time to be thoughtful, curious, surprised or excited. Notice that all of your students have listened to what you told. If someone didn't listen; go to his/her seat or as near as possible, look into his/her eyes and tell him or her once more. Ask your students if they are curious to know more about what you just said. Take a yes; use tricks to make them curious if they are not. Reveal some more exciting prompts to make sure that most of them become eager to know more.

Engage:

Never keep telling, rather ask more. Make them:-

- guess,
- put their own views ahead,
- site examples from their own experience of life,
- think and share their ideas,
- visualize the scenes,
- draw something,
- portray the characters of the story,
- make a theatrical presentation,
- laugh about humourous content,

» to empathize or be sympathetic with the sufferers in the story.

Mark my words: "Your 80% content will be grabbed by them in the class itself; if you successfully engage them."

Entertain:

When I say 'Entertain'; I mean both "attend to the students" and "to amuse them"

Teacher must pay heed to their:-

Queries, ideas, guesses, explanations, objections, rejections etc.

Teacher must try to keep sessions light and happening by:-

By amusing them, by cracking jokes, giving interesting expressions (when content demands), using the difficult words as 'tongue twisters', relating the characters with someone the students have seen… etc.

Experiment:

Students are generally made to listen, read or memorize long texts only. There are almost no experiments or hands on work which the students direly need to make the understanding deeper and better.

Teacher must design some activity, project, experiment etc. which is helpful in enhancing the knowledge and understanding of the students about that particular topic.

Teachers generally refrain from designing something like that as they are afraid of doing so because of lack of innovative ideas and self-confidence. Therefore they just keep complaining for lack of time and restricted autonomy.

It must be kept in mind that the more the number of sensory organs of students are involved in learning the more they learn and faster too.

Exercise:

"Practice makes a man perfect".

This is a very old proverb. The more you practice the lesser you forget. Here it is important to know that it's not the mind only that is trained by practice rather the whole body, every organ, each muscle gets trained. Therefore, whatever content you teach, make elaborative, analytical & explorative practice exercises for your students.

The exercise may be oral (recitation), writing, observation, exploration, analysis of some process or practice of solving sufficient number of sums of the same type.

Evaluation:

Evaluation and assessment are the most important tools in the hands of teachers. They must learn the best evaluation techniques especially suiting the type of content and subject. The routine exercise questions do not serve the purpose. There are so many standard tools, rubrics, techniques ready to use questionnaires, available on internet that can help teachers assess and evaluate, not only the students but also their own progress and quality. This helps teacher to find learning gaps, the level of comprehension on the part of students and thus helping them to organize remedial teaching.

Dr. Ajay Balhra
Chief Coordinator (Trgs.)
Directorate of Secondary Education Haryana, Panchkula

Learning in the New Normal

Smt. Rupam Jha

"In times where small instructor led classrooms tend to be the exception, electronic learning solutions can offer more collaboration and interaction with experts and peers, as well as higher success rate than the alternate"
- Kieth Bachman

Every morning on the radio I hear the often repeated phrase - The Show Must Go On. So classroom teaching does continue but factoring in the pandemic and the precautions that go with it. The time has come for virtual classroom interaction. Learning continues but as per the new normal.

Online classes are the new norm as teaching learning methods acquire and adopt this method. The use of technology here is important as it is technology that has helped us reach out to our students in these times. Besides online teaching, students are able to do group activities using Zoom as a platform.

School buildings are shut but not schools as classroom instructions are on. Though the syllabus has been reduced upto 30%, teaching learning is time consuming, especially so as both the teacher and the taught are grappling with this new mode of classroom interaction.

In online classes, the laptop or the smart phone may be used. Oral instructions by the teacher may be imparted as well as textual matter in a typed version. PPT form of the lessons is recommended as these are easy to comprehend by the learner.

There are several learning apps as well and coding can be learnt through these. Certain apps are there in which the teacher clears the doubt of students.

Edusat, a flagship program of the Secondary Education Department of the Government of Haryana has a uniform set of classes for all students and it is online. Teachers of the regular cadre of the Secondary Education Department record classes, these classes are first approved and then beamed on air. The Edusat timetable is shared in advance so that the learner can benefit from it.

Swayam Prabha, a 24x 7 DTH channel under the aegis of NCERT too is an educational channel related to the school curriculum. Meri e-pustak has brought the textbooks to mobiles and made them handy and easily accessible. DIKSHA is a learning app with precise and concise 10 minute videos of the text.

Home Learning now has a prescribed format and

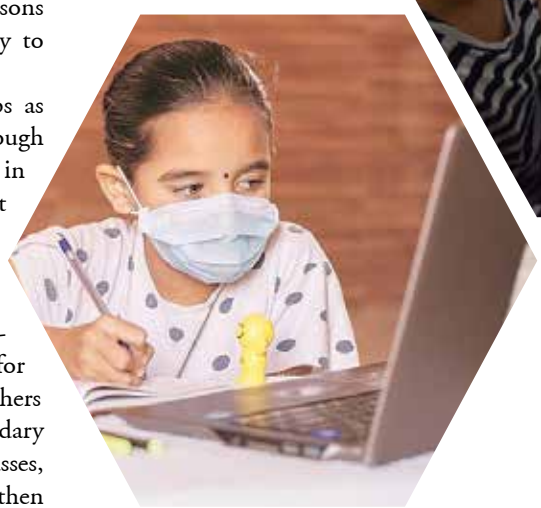

schedule. So the process of teaching and learning continues and students have no dearth of content.

The Board examination will now be held with a 30% reduction in syllabus so that there is no zero session.

Internal exams and tests too are being held online and at times may be assignment based. Assignments are scanned and uploaded for assessment, once they are complete.

As it is the new normal new peer groups may be formed online for group activity. Otherwise whatsapp is another medium to communicate with peers as well as with teachers. Teachers have made notes of the text and concise points as well to be shared on whatsapp.

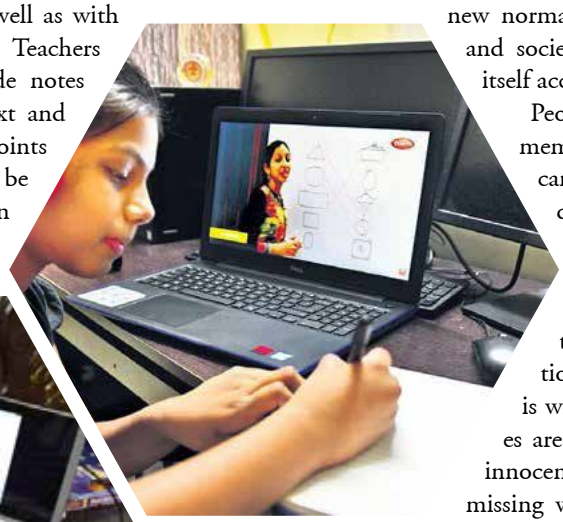

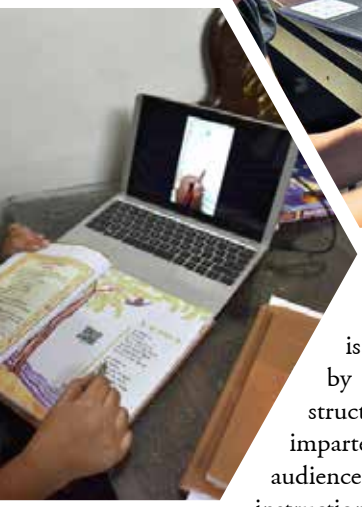

Webinar is a platform by which instructions can be imparted to a wider audience, so classroom instructions may be imparted this way. In Google meets, the interaction maybe two ways and queries of students can be attended to. Also, a question answer session may be conducted by the teacher by using this medium.

There is interaction but this interaction is now online. Admission for the new session has taken place, first year students have joined college but the classes are online. Infotainment and entertainment are both online now. For example, live singing competitions are recorded and shown via the internet. In marathon running too, this medium is being used. A participant is to run individually and share his/ her timing as recorded by a tracking device or app with the organisers and he/ she will be graded accordingly.

So, nothing stops but everything including learning has just adapted to the new normal. Society is dynamic and not static and change is constant. This new normal is the change and society has adjusted itself accordingly.

People often remember fondly the carefree school days. As the whatsapp message goes, school life was the longest vacation ever and this is what online classes are devoid of, that innocent camaraderie is missing when classes are virtual. The sharing and caring of tiffins, of friends and of play time is something that online classes are devoid of. No playing, no sunshine, no walking towards a means of transport to take you to school. There is definitely a vacuum. But it is the new normal now.

"Training developers need to integrate technology into the curriculum instead of viewing it as an add- on, an afterthought or an event"

- Heidi Hayes Jacob

Subject Expert

SCERT Haryana,
Gurugram

Zero sum game

We are all ciphers
The sooner we decipher
The truth of zero
The truth of nada
The truth of emptiness
We will realize the beauty
Of being trapeze artists
In the galaxies that swirl
That never collide
In the vastness
And abundance.

In this realization
You will have arrived.
A cipher.
A complete circle of life.

Ready to start the journey
Towards infinity.
Subtract ego. Add soul.
The sum of the zero sum game.

By Purobi Menon

Eco-Friendly Home

New Idea for sustainable living

Vijender Kumar

Climate change is real. It's happening. The world as we knew is changing. And changing rapidly. Potable water is becoming scarce. Seasonal changes in weather are no longer seasonal. Single-use plastic and CO2 emissions are the biggest sources of pollution. The environment we live in is influencing the quality of our lives in very real and tangible ways.

Climate change is not a problem of a community, country or continent, it's a global problem, it affects us all and we all have to gear up and play our part in saving our planet.

The idea of an eco-friendly home is not as difficult as some people assume. Nor did it turn out to be more expensive. Sure, it takes more effort and hard work. But we all have a responsibility to the environment. "I want my children to grow up knowing that Mother Nature has to be respected and that the Earth's resources are not infinite."

Some of us may have already bought their dream homes, and extensive reconstruction may not be financially feasible. Not everybody can afford green constructions, but we can all make smaller changes in our own homes. These changes are budget-friendly and they don't take a lot of time; they are however efficient and they can turn our home into an eco-friendly place.

Swap Regular Light Bulbs to LED Bulbs

Investing in the right energy-efficient light bulbs makes a huge difference. We will not only use less electricity but we will also make our home

more environment-friendly. No matter how tempting incandescent bulbs are, LED bulbs are the better alternative. They last longer, are eco-friendly, and they help us save money in the long run.

Wash Clothes In Cold Water

Up to 90% of the energy used by a washing machine goes toward heating water. So skip the heating and just use our washing machine on the cold water setting. This way, we reduce carbon dioxide emission but also keep our clothes in top condition for longer, as hot water can deteriorate the fabric and make our colorful clothes less vibrant.

Skip The Dryer When Possible

During sunny and hot months, it's almost a shame to not line-dry our clothes outside. There is something special about line-drying in the fresh air. Not to mention, our clothes and bedding will last longer if we hang them outside on a drying rack instead of drying them in the dryer. If we don't have a garden or a backyard where we can line-dry our clothes, we can install a drying rack on our balcony and keep the windows open to allow the sun to dry our clothes faster.

Have a Recycling Bin

If we have a recycle bin, we'll be more conscious about recycling glass bottles, jars, paper, and other items that should be recycled.

Decorate Home With Plants

Potted plants are effective for indoor air cleaning. Not only that, they are also nice and they make our home more welcoming. Sure, it takes a bit of responsibility to take care of plants but it's surely worth it.

We can plant our own herb garden. Herbs don't take a lot of space. We can plant them in small pots and keep them inside the home, close to a sunny window. We will always have fresh herbs for our favourite dishes.

Create compost for plants

Don't waste kitchen scraps and leftover food – turn them into compost. We would be surprised how much of the food that we currently throw away can be recycled and turned into compost. Simply place a compost bin in our garden and fill it with any food waste.

A compost bin will help us get rid of leftovers and will give us free fertilizer for our plants. These days, compost bins are designed to be neat, tidy, and odour-free. Plus, they make our life easier since they help us reduce household waste.

Install a smart meter

Our heating is one of the biggest ways that we use energy. And it can be very easy, especially during the winter months, to leave our heating on for longer than we strictly need it. This can lead to a lot of both wasted energy and wasted money. The best way to combat this is to have a smart meter installed. Smart meters can be programmed so that they only turn on at certain times of the day – for example, beginning to heat up just before we get home, and shutting off an hour or so before we leave the house. Smart meters can are a must for anyone looking to reduce their carbon footprint and decrease their energy bills.

Install solar panels

Solar panels are an essential feature for any eco home. Providing us with completely clean electricity they can sometimes even make enough energy to allow us to sell some back to the grid. Solar panels are certainly a long-term investment and it has been suggested that it will take around 20 years for us to break even depending on where we live. But remember this is not just a monetary investment – it's an opportunity to be eco-friendly.

Embrace natural cleaning products

Using harmful chemicals to clean is very bad for the environment. When we wash them away we are simply putting them into the water supply. That means water will take more purification before it is safe to use again. But

the good news is that in the majority of cases we really don't need to use them. For most day-to-day cleaning tasks, natural products like vinegar, citric acid from citrus fruits and bicarbonate of soda can be used in place of caustic chemicals to great effect.

Say no to Polythene bags

Always have a cotton or jute bag instead of polybag/ polythene when we going to the market for vegetables or any other items.

Drink only earthen pot water

In summers, always drink earthen pot water instead of refrigerator water,. It keeps our digestion system healthy, which is not possible in case of artificial cooling water.

Have a preference of cooler to AC

In summers, when it is extremely hot, use a cooler in place of Air Conditioner, which is not energy and money efficient as well as not good for our health.

Flushing toilet in a smart manner

In modern toilets a lot of water is wasted in flushing, we can save water by simply putting rocks or bricks in the cistern. By doing this we can save lot of water every year in an eco-friendly manners.

Wash vehicle in the garden

Always wash your motorcycle or car in the garden, if not possible then use that washed water by collecting it in a bucket in the garden. Never use open water instead use a bucket for washing vehicles.

Be Smarter In the Kitchen

Many people use the oven to make toast because they think it's not efficient to buy a toaster. However, the oven uses a significant amount of energy to heat up properly and, if we only plan to cook two slices of bread, it's not at all efficient to use the oven. The toaster uses less energy and gets the job done faster. Speaking of the oven, check the oven door every time we bake or cook something to be sure the oven door is properly closed. Keeping the oven door open leads to a huge amount of heat loss.

If you're a coffee lover, swap the pod coffee maker for a drip coffee maker. Pod coffee makers are not at all eco-friendly since you have to use pods. The plastic capsules end up piling up in landfills every year. With drip coffee makers, you just need ground coffee.

As in, the water we wash our vegetables is, used for our kitchen garden.

Lastly, make sure we minimize food waste by learning how to meal plan, meal prep, and store food properly.

It is encouraging to see that a number of governments, businesses and policymakers are working towards bringing down the carbon footprints. It's high time; each one of us must contribute and work towards effective, affordable and sustainable solutions to curb climate change.

We must act today to leave a greener and healthier environment for generations to come in an eco-friendly way of living standard.

Lecturer in Biology
GSSS Bocharia (3912)
Block-Ateli
Mahendergarh, Haryana

Compendium of Academic Courses After +2

ENVIRONMENTAL SCIENCES

Introduction

Environmental science is the area of study that deals with the interactions of the physical, chemical, and biological elements of the environment and impact of these upon the living beings and the environment.

Generally, environmental science is considered to be only natural science whereas it includes the study of social science and humanities also. Therefore, it is an interdisciplinary course.

Eligibility

10+2 examination or equivalent with Physics, Chemistry and Biology.

Courses

1. Bachelor's Degree
2. Master's Degree
3. Ph.D(Environmental Science) 10+2

Institutes/Universities

1. Allahabad University, Allahabad, Uttar Pradesh.
2. Delhi University, Delhi
3. School of Environmental Sciences, Jawaharlal Nehru University
4. Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, Lucknow, Uttar Pradesh.
5. Banaras Hindu University, Varanasi, Uttar Pradesh.
6. Bangalore University, Bengaluru.
7. Barkatullah University, Bhopal.

8. Central University of Haryana, Mahendragarh,
9. Central University of Jammu, Samba
10. Central University of Jharkhand, Ranchi
11. Dr. B. R. Ambedkar Open University , Telangana

FISHERY SCIENCES

Introduction

Fisheries is a multidisciplinary course that includes the biological study of life, habits and breeding of various species of fish, It involves catching, processing, marketing and conservation of fish.

Courses

1. Bachelor of Fishery Science
2. Bachelor of Science in Fisheries
3. Bachelor of Fisheries Science in Fi Biology
4. Bachelor of Fisheries Science in Aquaculture
5. Master of Fisheries Science

Apart from the B.F.Sc & M.F.Sc. various fisheries institutes offer vocational training

courses related to fisheries and allied disciplines.

Eligibility

10+2 with biological science as one of the subjects.

Institutes/Universities

1. Andhra University,
2. Barkatullah University, Bhopal, Madhya Pradesh.
3. G.B. Pant University of Agriculture, Pant Nagar, Uttaranchal.
4. Goa University,
5. Gujarat Agricultural University,
6. Imphal Fisheries Training College, Manipur.
7. Manipur University,
8. Marathwada University, Aurangabad, Maharashtra.
9. Osmania University, Hyderabad, Andhra Pradesh.

FLORICULTURE / HORTICULTURE

Introduction

Horticulture/Floriculture is one of the parts of agriculture that study the art, science,

technology, and process of growing plants. It involves fruits, vegetables, nuts, seeds, herbs, sprouts, mushrooms, algae, flowers, the cultivation of medicinal plants, seaweeds and non-food crops such as grass and ornamental trees and plants.

Courses

1. Diploma in Horticulture
2. B.Sc. in Horticulture
3. M. Sc. in Horticulture
4. Ph. D in Horticulture

Eligibility

10+2 with physics, chemistry and maths/biology/ agriculture.

Institutes/Universities

1. Indian Agricultural Research Institute (IARI), Delhi.
2. Kerala Agricultural University
3. University of Agricultural Sciences, Bengaluru.
4. Allahabad Agricultural Institute, Allahabad
5. Tamil Nadu Agricultural University, Coimbatore
6. Calcutta University, Kolkata
7. Acharya N.G. Ranga Agricultural University, Hyderabad.
8. Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (CCSHAU), Hisar, Haryana.
9. G B Pant University of Agriculture and Technology (GBPUA&T), Uttarakhand

FOOD TECHNOLOGY

Introduction

Food Technology is the study of food science in manufacturing safe, wholesome and

nutritious food products. Training in Food technology gives adequate knowledge regarding the quality analysis of raw materials, packaging standards and methodology.

Courses

1. Diploma Course
2. Bachelor in Science
3. Master in Science

Eligibility

10+2 education completed in the Science stream, from a recognized educational Board. Chemistry, Mathematics, Physics, Biology/ Home Science as

the main subjects at the 10+2 level.

Institutes/Universities

1. Central Food Research Technological Research Institute, Karnataka
2. University of Delhi
3. Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad, Maharashtra
4. University of Calcutta, West Bengal
5. University of Madras , Chennai, Tamil Nadu
6. Jadavpur University , Kolkata, West Bengal
7. Andhra University , Visakhapatnam, Andhra Pradesh
8. University of Bombay , Mumbai, Maharashtra
9. Mahatma Gandhi University , Kottayam, Kerala
10. Manipur University , Imphal, Manipur

FORESTRY

Introduction

Forestry is the study of sustainably managing and preserving forested resources for the benefit of humans. It studies ecology, environmental and resource protection, such as wood, water, wastelands, endangered species, clean air, biodiversity and ecosystems in forests.

Courses

1. B. Sc. Forestry / Wildlife
2. M. Sc. Forestry / Wildlife / Forest Economics
3. M. Sc. Wood Science and Technology.
4. Post Graduate Diploma in Forest Management (PGDFM)

Eligibility

10+2 with Physics, Chemistry, Maths/Biology.

Institutes/Universities

1. University of Agricultural Sciences, Bengaluru, Dharwad.
2. Agriculture College & Research Institute, Coimbatore.
3. College of Horticulture Forestry, Solan, Himachal Pradesh.
4. Bhim Rao Ambedkar University, Agra, Uttar Pradesh.
5. Gujarat Agricultural University, Sardar Krushinagar Gujarat.
6. Orissa University of Agriculture & Technology, Bhubaneshwar, Odisha
7. Punjab Agricultural University, Ludhiana, Punjab.
8. Jawharlal Nehru Krishi Vishwavidyalaya, Jabalpur, Maharashtra.

OCEANOGRAPHY

Introduction

The course in Oceanography deals with the physical and biological aspects of the ocean and covers the study of ecosystem, geological and geophysical aspects of oceans; ocean waves currents, plate tectonics etc.

Courses

1. M. Sc. Oceanography and Coastal Area Studies.
2. M. Sc. Oceanography
3. M. Phil. Chemical Oceanography
4. M. Tech Ocean Technology
5. M. Sc. Marine Biology

Eligibility

10+2 with Physics, Chemistry , Maths/Biology and followed by B. Tech. or B.Sc. in Zoology/ Botany/ Chemistry/ Fishery Science / Earth Science/ Physics/ Agriculture/ Microbiology/ Applied Sciences or equivalent or related subjects.

Institutes/Universities

1. Indian Institute of Information Technology Madras, Chennai, Tamil Nadu.
2. Indian Institute of Information Technology Kharagpur, West Bengal.
3. Alagappa University, Karaikudi, Tamil Nadu
4. University of Science and Technology, Cochin, Kerala.
5. Goa University,
6. Mangalore University, Karnataka.

An Eye for an Eye

Dr. Deviyani Singh

I was riding in the rear seat along with my parents on a beautiful hill road enroute to Mussoorie, India. I had stuck my head outside the window letting my hair fly in the breeze and was looking at exhilarating view and the clouds floating below us. That was the last thing I remember as we rounded a sharp bend and a truck crashed into us. It was a head on collision and my parents were killed on the spot, their bodies had to be extricated from the mass of tangled metal. I escaped unhurt with only minor bruises. Suddenly I was an orphan at the tender age of 16.

I was sent to live with my distant aunt who was unmarried and lived with her also unmarried brother. They ran a children's home and it was thought that they would be able to give me personal care there and I would be allowed to continue my studies. So I joined them there during my summer vacation. They lived in a small town near Dehradun.

My Aunt Greta is a very tall and thin lady; as she looks down at me her thinly plucked eyebrows shoot up and disappear under her fringe –

"Oh you poor dear, what a terrible loss it must be for you. I'm surprised to see you're quite short and plump, you don't look like your mother at all."

"I maybe vertically challenged but my intellect more than makes up for my height, Aunty." I manage recovering my wits.

"Acting cute with me already are you?" she places her forefinger under my chin and lifts up my face and I look directly into her cold grey eyes. Then she squeezes my cheeks running her long fingernails across leaving red marks and bruising me.

I wince and she lets out a shrill giggle.

"Come now, follow me to the dormitory."

"Dormitory?" now my eyebrows shoot into my worried forehead." But I thought I would be a special guest here, after all you were related to my Father weren't you?"

She ignores my queries and walks on, her high heels clacking on the cobbled stones of the corridor. It's a very old building made during the British rule in India. The walls are damp with green fungus clinging onto corners and

paint peels off. The flakes from the ceiling fall on my shoulders startling me.

She leads me into a noisy dormitory filled with children of all ages. As she enters they fall silent. She introduces me in her high pitched annoying nasal voice and leaves abruptly.

"Here's Anna, clear out a bed for her, the younger ones can double up."

I settle in as best I can till I hear a bell ring for supper. We are served in dented old tin plates, a pile of rice with a depression in the middle filled with watery lentil soup, and some pieces of undecipherable meat and vegetables splattered on the side. Even my pet dog I had as a child was served better food I think to myself. When supper is over Greta walks in surveying the kids with an eagle eye, if even one forgets to put their chairs back under the table they are punished by making them hold the chair above their heads till their arms ache and they collapse in an exhausted heap.

After an hour of study time we are sent to bed at 8pm sharp. At night a solitary fan creaks away in the big dormitory. I'm very tired and fall into a restless slumber. I feel something on my cheek and believe I'm having a nightmare of Greta squeezing my cheeks again but I wake up with a sharp pain. I touch my cheek and feel warm blood. I run to the streaked mirror and see I've been bitten. I hear a squeak and a rat bigger than a cat stares at me with his beady eyes. Our gaze locks for a while as I freeze in horror and then he jumps off my bunk and waddles across the room with no fear at all.

The place is depressing and dirty as hell. I want to leave immediately and so the next morning I walk up to Greta and tell her I would like to be put in a boarding school in Mussoorie. She tells me she will discuss it with her brother and I believe her. It's only later that I find out she never had any intention of sending me anywhere. She keeps delaying so that she can get her hands on any custody money or whatever my parents have willed to me. I being the only child and a minor she is the next of kin and my legal guardian till I turn 18. I recall my parents had told me stories of how my Aunt had never lasted too long in any school and her parents had to keep changing schools. Her father was an alcoholic and used to beat the kids and their Mother. Once the two kids had even tried unsuccessfully to run away.

As time goes by I chance upon some strange facts about the orphanage. It had the highest record of children running away or that is was what the papers reported but I'm not surprised at all looking at the living conditions. I ask the other children about it they say that no child had ever shared with them any plan of running away. They just woke in the morning to find a bed empty and no one knew why. I grow more and more worried everyday about these strange happenings and ask Greta about it but I get no answers. I also keep asking her about my hostel admission but she always says she's busy and will get down to it later.

One day I'm not feeling too well. The other children are playing in the garden; I go looking for my Aunt to ask her for some medicines. She's not in her usual place, her wood panelled sleek office. The only place in the orphanage which doesn't reek of the musty smell that pervades the rest of the building. I call out to her but there is still no sign of her then I see a small door that leads to an ante room near her office. I open the door hoping to find some medicines but as my hand parts the curtain I stop dead in my tracks. I see my Aunt embracing a man, a big built fellow who has his back to me but I notice the bald patch on his head and scorpion tattoo on his neck. I drop the curtain back and retrace my steps making no sound. My heart is beating so fast and loud I feel they would hear it.

I run back all the way to the garden and am startled by the bell for supper. I can hardly eat wondering who the man with Greta was and if they saw

me. Just then she walks into the dining hall followed by a man. She introduces him to the new kids including me as her brother - Hans who is just back from a short trip. As he walks up to look at me and he takes off his cap, I'm petrified. I notice the bald spot and when he turns around I see the scorpion tattoo. My mind boggles with this new information, in addition to being a cruel woman Greta is also in relation with her own brother. I know there is something very disturbing about Greta and this is the last straw. I just want to be away from this place as soon as possible. So the next day I go to the office and try talking to them both about it. But Hans too is non-committal and grunts "Greta is in charge of all decisions in the orphanage go ask her."

The next morning we wake to find another bed empty. It's a young boy this time hardly 7 years old. Again I discuss the matter with the rest of the children and no one has any idea of where or how he's disappeared.

The Police are called, they gather all his stuff in the hope of finding some evidence and file a missing person's report.

As unbearable days and nights pass I began wondering as to how I can use the information I have gathered to my advantage. I'm feeling very frustrated by Greta's delaying tactics so in the morning I boldly march into her office and give her an ultimatum.

She gapes at me in shock as I blurt out.

"Look here I know you are having an affair with your brother in addition to running a very shoddy orphanage. If you don't arrange to have me sent away from here I shall report you to the authorities and tell everyone in town about your relations as well."

She listens to my tale and then takes off her steel rimmed reading glasses slowly and clicks her tongue twice. Hans appears suddenly out of the anteroom and holds me in a vice like grip. I struggle and kick him hard on the shins. He holds my mouth tightly so I can't scream. Greta then pours some acidic smelling liquid on a cloth and holds it against my nostrils and I pass out.

I wake up on the damp cold floor my head throbbing. I can only hear the loud whirring of machinery. I guess I'm in the shed where the generator is kept. I keep hearing for any sound of life in vain as the afternoon sun fades, evening comes and night falls. The constant buzz of mosquitoes keeps me awake. I sit on the floor hugging my knees and survey the small room. It has only a small ventilator in the top corner and is devoid of any windows. The room is bare except for a few patches of grease on the floor where machinery must have been kept. Adjacent to it is a tiny room with an old abandoned toilet. I fall into a half sleep and am woken by a loud clap of thunder followed by a downpour and the roof begins to leak.

When dawn breaks, 2 slices of bread and a small water bottle is thrust under the door. This is my only meal in 24 hours which is a routine for days to come. I lose all count of days or time. There is just the incessant droning of the generator which threatens to make me go insane. The heat is unbearable.

Then early one morning I hear a sniffing noise under the door and a soft growling. I peek out through a small hole in the wooden door and see Hans with a beautiful German shepherd calling him Simba and teaching him to shake his hand. He is commanding him to sit and guard. The dog makes rounds of the shed and then comes and sits near my door trying to sniff what's inside.

I always had a way with animals and I try calling out to the dog but he doesn't respond. Hans slips the daily dose of bread and water bottle to me and everyday I shout my lungs out at him, cursing him and begging him to open the door. But the cold hearted couple are just feeding me enough to keep me alive and day by day I can feel my strength waning. I have to do something fast or i might die. I call out to Simba who seems to be as lonely as me as after his night rounds he comes and settles himself before the wooden

door to sleep every night. One day I slip a piece of bread to him from where Hans used to slip food in and Simba eats it up. I slip my hand under the door fearful it may get bitten off and shout above the sound of the generator, "Simba Paw".

The dog with his acute sense of hearing responds and to my delight he places his paw on my palm. My head reels to feel anything warm or alive after weeks of only the cold gravel floor.

I come up with an idea, I place my hands near where the bolt would be and say "Simba paw" the dog raises itself up on his hind legs and began scratching the door furiously. I nudge the bolt and feel it move a bit. The gap below the door is wider now; the incessant rains and leaking roof have loosened the mud making a furrow. I begin digging furiously with my overgrown fingernails at the floor under the door at the gap used for slipping in food and Simba follows suit. With both of us digging away the gap becomes wider. Then I get a brainwave. I have lost so much of weight in the past 4 weeks. I strip down to my inners and slather grease all over my body and began to squeeze myself under the gap in the door. With great effort that leaves my skin bleeding I finally manage to free myself. Simba immediately jumps up on me and begins licking me.

I think I have escaped from the shed which held me captive but to my surprise I'm in another larger shed. Simba leads me on into a narrow tunnel and it's dark. I hear wailing noises and I'm shocked to see two cells facing each other. The missing boy and a girl are locked up inside. They are like living skeletons and their rooms reek of with the unbearable stench of human faces and stale food. Their cells have huge locks on them. Simba whines and leads me further to a larger wooden door, it's locked from outside but has a small flap door from which Simba can let himself out. I crawl through it and realise I'm in the backyard of the orphanage.

I look around and find a tree near the 8 feet stone wall. I use my clothes to haul myself up the branches, put them on and then climb over the wall. I run all the way to the Police station and collapse in the Constables arms.

The Police raid the orphanage and release the two captive children. They arrest Greta and Hans and take them for questioning. Unfortunately only two kids could be rescued. The Police discover traces where the rest of the kids had been tortured and murdered. Some of them had their organs ripped out and sold. Greta and Hans took pleasure in torturing and finally killing the poor souls. Hans used to dispose of the corpses by trekking far away to isolated places in the woods and dropping off the bodies where wolves and wild animals would feed on the remains. That was why the Police could never find any trace of the bodies even after an extensive search.

I was lucky to have escaped such a fate. I was adopted by the Police personnel and they kept Simba for me too. I was allowed to continue my education and when I turned 18, I returned to the Orphanage and took charge of it. I treat the children with a lot of love and care unlike Greta and Hans. Fate that was so cruel to have snatched away both my parents. It's bad enough these poor kids are orphans it's not nice to have them suffer more. But then accidents can always happen…

Disclaimer : This story is a work of fiction and a product of the author's imagination. Any resemblance to actual persons or events is purely coincidental.

Editor, Shiksha Saarthi
deviyanisingh@gmail.com

Amazing Facts

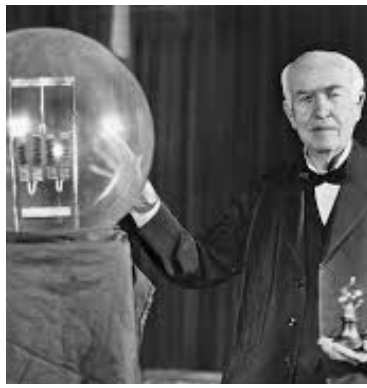

1. **There are approximately 100,000 miles of blood vessels in the human body.**
2. Great White sharks have about 3,000 teeth.
3. The giant squid is the largest animal without a backbone.
4. 215 jeans can be made with one bale of cotton.
5. Hawaiian alphabet has 12 letters.
6. Pineapples were first introduced into Europe by Christopher Columbus.
7. When a women is pregnant, her senses are all heightened.
8. It has been medically been proven that laughter is an effective pain killer.
9. Cataloupes are named after the gardens of Cantaloupe, Italy where some belive this melon was first grown.
10. In the 13th century, quality standards for paste were assigned by the Pope.
11. In a year, the average person walks four miles to make his or her bed.
12. The first television broadcast of the Oscars took place in 1953, hosted by Bob Hope on NBC.
13. Most snakes have six rows of teeth.
14. NASDAQ stand for, "National Association of Securities Dealers Automated Quotations."
15. An average women has 17 square feet of skin. When a women is in her ninth month of pregnancy she has 18.5 square feet of skin.
16. French astronomer Adrien Auzout had once considered building a telescope that was 1,000 feet long in the 1600s. He thought the magnification would be so great, he would see animals on the moon.
17. The first email was sent out by Ray Tomlinson in 1971.
18. The city of Chicago has the only post office in the world where you can drive your car through.
19. The most overdue book in the world was borrowed from Sidney Sussex College in Cambridge, England and was returned 288 years later.
20. The average person can live about a month without eating any food, but can only live about a week without water.
21. There are about 34,000 species of spiders.
22. The first owner of the Marlboro Company, Wayne McLaren, died of lung cancer.
23. In 1657, the first chocolate house was opened in London, England.
24. The Xerox company was initially called the Haloid Company.
25. In 1980, a Las Vegas hospital suspended workers for betting on when patients would die.
26. Studies indicate that surgeons who listen to music while they operate improve in their performance.
27. Thomas Edison was afraid of the dark.
28. Thailand used to be called Siam.
29. A sneeze can travel as fast as one hundred miles per hour.
30. The Pentagon cost $49,600,000 to build in 1941.

http://www.greatfacts.com/

General Knowledge

1. The centenary 2013 Chelsea Flower Show temporarily lifted a ban on what in its gardens? **Gnomes**
2. Cape, Katanga, Masai, Barbary and Asiatic are generally considered sub-species of what 'apex' predator? **Lion**
3. Milankovitch Cycles theory analyses changes in what, according to long-term movements of planet Earth: Climate; Population; Gravity; or Personality/mood? **Climate**
4. A metal ring or grommet in a sail or other nautical attachment, through which a rope passes, is a: Tingle; Mingle; Cringle; or Pringle? **Cringle**
5. A stilb is a measure of: Sound; Luminance; Velocity; or Equilibrium? **Luminance**
6. What famous maker of organs used in pop/rock music since the 1960s is an acronymic abbreviation of the Italian for "United Factory of Accordions'? **Farfisa**
7. Charles Stent practised what surgery, for which he invented his eponymous technique: Dental; Heart; Orthopedic (bone/skeletal); or Tree? **Dental**
8. From Greek words meaning 'flesh preserver' what coal-tar oil was widely used in wood treatment and medicine? **Creosote**
9. London's Wembley Arena (next to Wembley Stadium) was built in 1934 as what sort of sporting facility, reflected in what original name (two answers required)? **Swimming Pool/Empire Pool**
10. The US company Shubb is famous for making small metal engineered gadgets for: Stringed instruments; Fishing; Cooking; or Cycling? **Stringed instruments**
11. The nickname of 9th century Islamic mathematician Abu Ja'far Muhammad ibn Musa ('al-Kwarizmi' - the man of Kwarizm) is the etymological source of what computing term? **Algorithm**
12. Bakalva and börek (Turkey/central Asia), birnbrot (Switzerland), bear claw (USA), and briouat (Morocco) are types of what? **Pastry**
13. What was the name given in Ancient Greek mythology to the time/situation before the creation of the universe: Chaos; Void; Neutron; or Galaxy? **Chaos**
14. Name the fictional suburb in Ira Levin's 1972 novel which became an expression for a wife who submissively obeys her husband? **Stepford**
15. What logical common name is given to the cells which initiate cardiac contraction and so control heart rate? **Pacemaker**
16. What cereal breakfast is a humorous metaphor for prison? Porridge
17. What informal rule, named after Intel Corp's co-founder, predicts the doubling of transistors on microchips every two years? **Moore's Law**
18. What Italian word for 'it follows' refers to a smooth transition between two items, especially musical pieces? **Segue**
19. What is the formal (systematic) chemical name for the alcohol in intoxicating drink: Methanol; Ethanol; Propan; or Methylbutan? **Ethanol**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-142-general-knowledge/

आदरणीय संपादक जी,
नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का गत मास का अंक मन को बहुत भाया। कोरोना काल में जिस प्रकार प्रतिकूल धाराओं में शिक्षकों ने कार्य किया, उनकी उसी जीवटता को पत्रिका के मुखपृष्ठ पर अंकित किया गया। चित्र तथा उस पर लिखी पंक्तियाँ मन को छू गईं। प्रमोद दीक्षित जी ने अपनी कविता के माध्यम से अन्तर्मन में जिस दीप को जलाने की बात कही थी, वह दीप तो हर जन को अपने मन में जलाना चाहिए। पत्रिका के इस अंक की सामग्री ने बखूबी इस बात को दिखाया कि कोरोनाकाल में विद्यालय शिक्षा विभाग ने सचमुच आपदा को 'अवसर' में बदलने का कार्य किया है। इसी विषय पर डॉ.योगेश वाशिष्ठ द्वारा रचित लेख बिल्कुल प्रासंगिक था। 'कोरोना काल में शिक्षा' पर केंद्रित इस अंक में प्रकाशित सारी सामग्री बेहद सूझबूझ से संकलित की गई थी। अरुण कुमार कैहरबा का लेख 'स्कूल खोलने के मार्ग में आएँगी अनेक चुनौतियाँ' भी दूरदर्शिता से भरा दिखाई दिया।

राममेहर नैन
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय करणपुर
जिला पंचकूला

आदरणीय संपादक जी,
सप्रेम नमस्कार।

पत्रिका का गतांक विद्यालय शिक्षा विभाग की वेबसाइट से डाउनलोड करके पढ़ा। विश्वव्यापी महामारी कोरोना के समय प्रदेश में किस प्रकार से शिक्षण कार्य को निर्बाध चलाने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं, इन सबकी विशदता से जानकारी प्राप्त हुई। इसके अलावा इस संकटकाल में 'योद्धा' की भाँति श्रेष्ठ कार्य करने वाले शिक्षा अधिकारियों, मुखियाओं व शिक्षकों से परिचय भी हुआ। धन्य हैं वे अधिकारी जिन्होंने अपने वेतन से 20 मोबाइल फोन खरीदकर जरूरतमंद बच्चों को निःशुल्क प्रदान किए। सभी स्थायी स्तंभ पूर्व की भाँति रोचक जानकारियों से भरे हुए थे। बाल-सारथी में संकलित सामग्री बेहद पसंद आई। एक अच्छे अंक के लिए विद्यालय शिक्षा विभाग को बधाई।

अनिल कुमार
कार्यक्रम अधिकारी
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

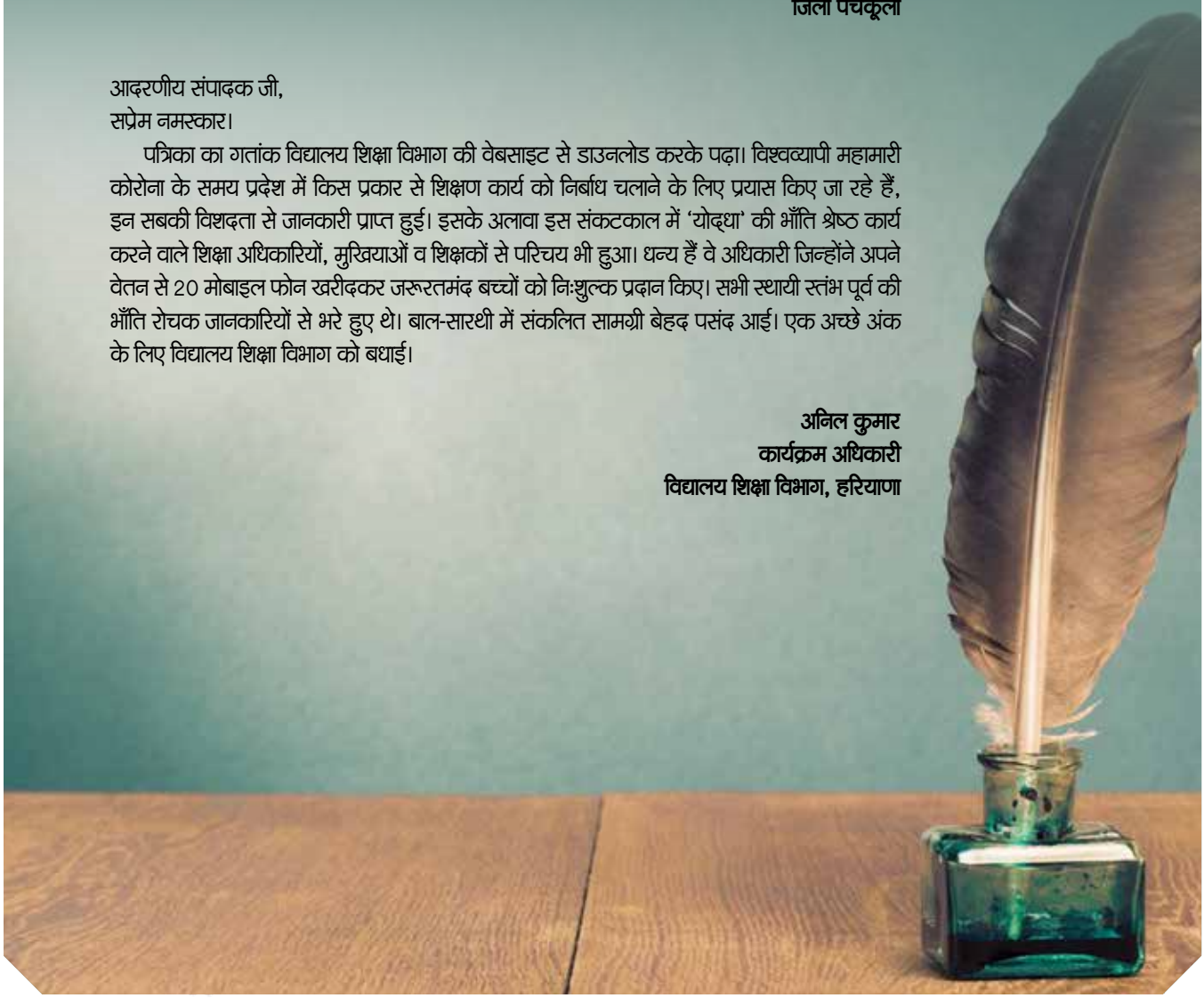

हाथों में तिरंगा है

होंठों पर जन-गण-मन, हाथों में तिरंगा है।
इस प्यार भरे दिल में, सद्भाव की गंगा है।
यह देश जवानों की,
आँखों का तारा है।
मजदूर किसानों को,
यह जान से प्यारा है।
बातों में किस्सों में, मस्त मलंगा है।
होंठों पर जन-गण-मन, हाथों में तिरंगा है।
सूरज की किरणों का,
उपहार मिला हमको।
निर्झर नदिया पोखर का,
आधार मिला हमको।
साँसों में बसी सरगम, मन एक परिंदा है।
होंठों पर जन-गण-मन, हाथों में तिरंगा है।
भारत की माटी को,
हम चन्दन कर देंगे।
फूलों की खुशबू से,
रंगों से भर देंगे।
इस प्यार भरे दिल में, सद्भाव की गंगा है।
होंठों पर जन-गण-मन, हाथों में तिरंगा है।।

नरेन्द्र सिंह नीहार
ए-67/बी, दुर्गा विहार (देवली) नियर खानपुर
नई दिल्ली -110 080

RNI NO: HARBIL/2012/52385

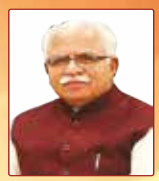

POSTAL REGD NO: HR/AB-102/20-22

हरियाणा सरकार

2021

विक्रमी संवत् - 2077-78

जनवरी — पौष–माघ

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

फरवरी — माघ–फाल्गुन

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28						

मार्च — फाल्गुन–चैत्र

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

अप्रैल — चैत्र–वैशाख

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

मई — वैशाख–ज्येष्ठ

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

जून — ज्येष्ठ–आषाढ़

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

जुलाई — आषाढ़–श्रावण

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

अगस्त — श्रावण–भाद्रपद

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

सितम्बर — भाद्रपद–आश्विन

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

अवकाश सूची

जनवरी
- बुधवार, 20 — गुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती
- मंगलवार, 26 — गणतंत्र दिवस

फरवरी
- मंगलवार, 16 — बसंत पंचमी/सर छोटू राम जयन्ती
- शनिवार, 27 — गुरु रविदास जयन्ती

मार्च
- सोमवार, 8 — महर्षि दयानंद सरस्वती जयन्ती
- वीरवार, 11 — महा शिवरात्री
- मंगलवार, 23 — शहीदी दिवस (भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव)
- सोमवार, 29 — होली

अप्रैल
- शुक्रवार, 2 — गुड फ्राइडे
- बुधवार, 14 — डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयन्ती
- बुधवार, 21 — राम नवमी
- रविवार, 25 — महावीर जयन्ती

मई
- शुक्रवार, 14 — ईद-उल-फितर/परशुराम जयन्ती
- बुधवार, 26 — बुद्ध पूर्णिमा

जून
- रविवार, 13 — महाराणा प्रताप जयन्ती
- सोमवार, 14 — गुरु अर्जन देव शहीदी दिवस
- वीरवार, 24 — संत कबीर जयन्ती

जुलाई
- बुधवार, 21 — ईद-उल-जुहा/बकरीद
- शनिवार, 31 — शहीद उधम सिंह शहीदी दिवस

अगस्त
- बुधवार, 11 — हरियाली तीज
- रविवार, 15 — स्वतंत्रता दिवस
- शुक्रवार, 20 — मुहर्रम
- रविवार, 22 — रक्षा बंधन
- सोमवार, 30 — जन्माष्टमी

सितम्बर
- वीरवार, 23 — हरियाणा वीर एवं शहीदी दिवस

अक्तूबर
- शनिवार, 2 — महात्मा गांधी जयन्ती
- वीरवार, 7 — महाराजा अग्रसेन जयन्ती
- शुक्रवार, 15 — दशहरा
- मंगलवार, 19 — मिलाद-उन-नबी/ईद-ए-मिलाद
- बुधवार, 20 — महर्षि वाल्मीकि जयन्ती
- रविवार, 24 — करवाचौथ

नवम्बर
- सोमवार, 1 — हरियाणा दिवस
- वीरवार, 4 — दिवाली
- शुक्रवार, 5 — विश्वकर्मा दिवस/गोवर्धन पूजा
- बुधवार, 10 — छठ पूजा
- शुक्रवार, 19 — गुरु नानक देव जयन्ती
- बुधवार, 24 — गुरु तेग बहादुर शहीदी दिवस

दिसम्बर
- शनिवार, 25 — क्रिसमस
- रविवार, 26 — शहीद उधम सिंह जयन्ती

■ राजपत्रित अवकाश ■ वैकल्पिक अवकाश

सभी शनिवार एवं रविवार का सार्वजनिक अवकाश रहेगा। कर्मचारी तीन वैकल्पिक अवकाश ले सकते हैं।

अक्तूबर — आश्विन–कार्तिक

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

नवम्बर — कार्तिक–अग्रहायण

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

दिसम्बर — अग्रहायण–पौष

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

संकलन एवं सज्जा - महानिदेशक, सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा

मुद्रण - नियन्त्रक, मुद्रण एवं लेखन सामग्री विभाग, हरियाणा